1st Edition 1929. 2nd Edition 1939 and 3 r
Edition 1947 1 M. 32.

सूची

—: ० :—

वक्तव्य

गोकुलनाथ जी ने 'अष्टछाप' नाम से कोई पुस्तक नहीं लिखी है। प्रस्तुत पुस्तक गोकुलनाथ जी के नाम से प्रचलित "८४ वैष्णवन की वार्ता" तथा "२५२ वैष्णवन की वार्ता" शीर्षक ग्रंथों से अष्टछाप कवियों की जीवनियों का संग्रहमात्र है। ८४ वार्ता में महाप्रभु वल्लभाचार्य के सेवकों का वर्णन है। सूरदास, कृष्ण-दास, परमानन्ददास, तथा कुंभनदास महाप्रभु वल्लभाचार्य के सेवकों में प्रमुख थे। इनकी जीवनियाँ ८४ वार्ता के अन्त में एक स्थान पर मिलती हैं और यह वहाँ से ही ली गई हैं। महाप्रभु वल्लभाचार्य के पुत्र तथा उत्तराधिकारी गुसाईं विट्ठलनाथ के सेवकों का वर्णन २५२ वार्ता में मिलता है। गुसाईं जी के सेवकों में नंददास, चतुर्भुजदास, छीत स्वामी तथा गोविंद स्वामी ने विशेष प्रसिद्धि प्राप्त की थी और इनकी जीवनियाँ २५२ वार्ता में सबसे प्रथम दी गई हैं। कहा जाता है कि गुसाईं विट्ठलनाथ ने ही अपने तथा अपने पिता के इन चार चार प्रमुख सेवकों को लेकर "अष्टछाप" नाम दिया था। अतः प्रस्तुत संग्रह के इस नाम के पीछे कुछ ऐतिहासिक तथा सांप्रदायिक परम्परा है।

इस संग्रह को हिन्दी जनता के सन्मुख रखने में मेरे दो मुख्य उद्देश हैं। भाषा संबंधी उद्देश तो है सत्रहवीं सदी के व्रजभाषा गद्य को सर्व साधारण के लिये सुलभ करना तथा साहित्यिक

" शुद्ध करने " अथवा " संपादन करने " में मुझे विश्वास नहीं है, अतः इस ओर प्रयास ही नहीं किया गया है।

इस बड़ी त्रुटि के रहते हुये भी प्रस्तुत संग्रह के प्रकाशन से उपर्युक्त उद्देशों की पूर्त्ति में बहुत कुछ सहायता मिल सकेगी इसी धारणा से हिन्दी जनता के सामने यह अपूर्ण पुस्तक रक्खी जा रही है। मुझे पूर्ण आशा है कि विद्यार्थी वर्ग तथा हिन्दी जनता दोनों ही इस संग्रह को रुचिकर तथा हितकर पावेंगे।

१—१—१६२६

धीरेन्द्र वर्म्मा

अष्टछाप

—:०:—

अथ[1] सूरदास जी गऊघाट ऊपर रहते तिनकी वार्ता

—:०:—

प्रसंग १

सो एक समय[2] श्रीआचार्य जी महाप्रभू अडेलते[3] व्रज को[4] पावधारे[5]। सो कितनेक दिन में गऊघाट आयै[6]। सो गऊघाट आगरे और मथुरा के बीचोंबीच[7] है तहाँ श्रीआचार्य जी महाप्रभू पावधारे। सो गऊघाट ऊपर श्रीआचार्य जी महाप्रभू उतरे। तहाँ श्रीआचार्य जी महाप्रभू आप स्नान करिके संध्यावंदन करिके पाक करन को वैठे[8] और श्रीआचार्य जी महाप्रभून के सेवकन को समाज बहुत[9] हुतौ और सेवकहू अपने अपने श्रीठाकुर जी को[10] रसोई करन लागे।

सो गऊघाट ऊपर सूरदास जी कौ स्थल हुतौ[11]। सो सूरदास

---

१ अब श्री आचार्य जी महाप्रभू के सेवक। २ समें। ३ अंडेलते। ४ व्रज कों। ५ पाउं पधारे। ६ आये। ७ बीचा बीच। ८ बैठे। ९ बहुत १० श्रीठाकुर जी कों। ११ हुतो।

महाप्रभून ने कही जो सूर कछू भगवद् जस वर्णन करौ। तब सूरदास जी ने कही जो आग्या[1]। सो सूरदास जी ने श्री आचार्य जी महाप्रभून के आगे एक पद गायौ॥ सो पद॥

राग धनाश्री

हों हरि सब पतितन को नायक।
को करि सकै बराबर मेरी इतने मान कों लायक॥ १॥
जो तुम अजामेलि सों कीनी जो पाती लिख पाऊँ।
होय विश्वास[2] भलौ जिय अपने और[3] पतित बुलाऊँ॥ २॥
सिमिटे[4] जहाँ तहाँते सब कोऊ आयजुरे इक ठौर।
अब के इतने आन मिलाऊँ बेर दूसरी और॥ ३॥
होडाहोडी मन हुलास करि करे पाप भरि पेट।
सबहिन ले पायन तरिपरि हों यही हमारी भेट॥ ४॥
ऐसी कितनी कब नाऊँ[5] प्रानपति सुमरन है भयौ आडौ।
अबकी बेर निवार लेउ प्रभु सूर पतित कों ठाडौ॥ ५॥

और पद गायौ।

राग धनाश्री

प्रभु मैं सब पतितन को टीकौ।
और पतित सब द्यौस चारिके मैं तौ जन्मत ही कौ॥ १॥
बधिक अजामिलि गनिका त्यारी और पूतना ही कौ।
मोहि छांडि तुम और उधारै मिटै शूल केसें जीकौ॥ २॥

---

१ आज्ञा। २ विस्वास। ३ औरहु। ४ सिमिट। ५ कितनीक बनाऊँ।

कोउ न समरथ सेवकरनकौ खेंचि कहत हौं लीकौ।
मरियत लाज सूरपतितन में कहत सबन में नीकौ ॥ ३ ॥

ऐसौ पद श्रीआचार्य जी महाप्रभून के आगे सूरदास जी ने गायौ सो सुनि के श्रीआचार्य जी महाप्रभून ने कह्यौ जो सूर हैं कैं ऐसो घिघियात काहे को है कछु भगवल्लीला वर्णन करि। तब सूरदास नें कह्यौ जो महाराज हौं तो समझत नाहीं। तब श्रीआचार्य जी महाप्रभून नें कह्यौ जो जा स्नान करि आउ हम तोकों समझावेगे[1]। तव सूरदास जी स्नान करि आये तब श्री-महाप्रभू जी नें प्रथम सूरदास जी कें नाम सुनायौ पाछें समर्पण करवायौ और फिर दशम स्कंध की अनुक्रमणिका कही सो तातें सब दोष दूर भयै। तातें सूरदास जी कौ नवधा भक्ति सिद्ध भयी। तव सूरदास जी ने भगवल्लीला वर्णन करी। अनु-क्रमणिका ते संपूर्ण लीला फुरी सो क्यों जानियै सो दसमस्कंध की सुबोधिनी में मंगलाचरण कौ प्रथम कारिका कीये हैं सो यह श्लोक सूरदास जी नें कह्यौ। सो श्लोक।

नमामि हृदये शेषे लीलाक्षराब्धि सायनम्[2]।
लक्ष्मी सहस्र लीलाभिः सेव्यमानं कलानिधिम् ॥ १ ॥

और ताही समय श्रीमहाप्रभून के सन्निधान पद कीयै। सो पद। रागबिलावल "चकई री चलि चरण सरोवर जहाँ न प्रेम वियोग।" यह पद संपूर्ण करिकें सूरदास जी ने गायौ। सो यह

---

१ समझायेंगे। २ लीलाक्षराब्धि शायिनं।

पद दशमस्कंध के मंगलाचरण की कारिका के अनुसार कीयौ। सो यामें कह्यौ है जो तहाँ श्रीसहस्र सहित नित क्रीडत शोभित। सूरदास या भाँति पद कीये ताते जानी जो सूरदास को सम्पूर्ण सुबोधिनी स्फुरी। सो श्रीआचार्य जी महाप्रभून ने जान्यो जो लीला को अभ्यास भयौ। पाछें सूरदास जी ने नंदमहोत्सव कीयौ। सो श्रीआचार्य महाप्रभून के आगे गायौ। राग देवगन्धार। "ब्रज भयौ महर के पूत। जब यह बात सुनी।" सो यह श्रीआचार्य जी महाप्रभून के आगे गायै। सो सुन के श्रीआचार्य जी महाप्रभू बहुत प्रसन्न भये और अपने श्रीमुख ते कहैं जो सूरदास मानों निकट ही हुते।

पाछें सूरदास जी ने अपने सेवक कीये हुते तिन सबन को नाम दिवायै। पाछे सूरदास जी ने बहुत पद कीये। पाछे श्रीआचार्य जी महाप्रभून ने सूरदास जी को पुरुषोत्तम सहस्रनाम सुनायै तब सूरदास जी को सम्पूरण भागवत स्फुर्तना भई। पाछें जो पद कीये सो श्रीभागवत प्रथम स्कंधते द्वादश स्कंधताई कीये। ताते वे सूरदास जी श्रीआचार्य जी महाप्रभून के ऐसे परम कृपापात्र भगवदीय हैं। पाछें श्रीआचार्य जी महाप्रभू गऊघाट ऊपर दिन दोय तीन विराजे। पाछें फेरि ब्रज को पाव धारे तब सूरदास जी हू श्रीआचार्य जी महाप्रभून के साथ ब्रज को आये।

प्रसंग २

अब जो श्रीआचार्य जी महाप्रभू ब्रजकों पधारे सो प्रथम

श्रीगोकुल पधारे। तब श्रीआचार्य जी महाप्रभून के साथ सूरदास जी हू आये। तब श्रीआचार्य जी महाप्रभून ने अपने श्रीमुखसों कह्यौ जो सूरदास श्रीगोकुल कों दर्शन करौ। सो सूरदास जी ने श्रीगोकुल कों दंडवत करी। सो दंडवतमात्र श्रीगोकुल की बाल-लीला सूरदास जी के हृदय में फुरी और सूरदास जी के हृदय में प्रथम श्रीमहाप्रभून ने सकल लीला श्रीभागवत की स्थापी हैं, ताते दर्शन करत मात्र सूरदास जी कों श्रीगोकुल की बाललीला स्फुर्दना भई। तब सूरदास जी ने विचार्यौ मन में जो श्रीगोकुल की बाललीला को वर्णन करिकैं श्रीआचार्य जी महाप्रभून के आगें सुनाइयै। जन्म लीला को पद तौ प्रथम सुनायौ है अब श्रीगोकुल की बाललीला को पद गायौ। सो पद।

रागबिलावल

सो नित करन पुनीत लियै।[1]
घुटुरुवन चलत, रेणुतन मेड़त,[2] सुरत वेष कियै[3] ॥ १ ॥
चारु कपोल लोल लोचन छबि गोरोचन कौ तिलक दियै।
लार लटकन मानो मत[4] मधुपगन माधुरी मधुर पियै ॥ २ ॥
कठुला कंठ वजत, केहरि नख राजत है सखी रुचिर हियै।
धन्य सूर एकौ पल यह सुख कहा भयौ जीये ॥ ३ ॥

यह पद सूरदास जी ने गायौ। सो सुनि के आप बहुत प्रसन्न भये। पाछें औरहू पद गायौ।

---

१ शोभित कर नवनीत लिये। २ मंडित। ३ मुख लेप किये। ४ मत्त।

तब श्रीमहाप्रभू जी आपने मन में विचारे जो श्रीनाथ जी के यहाँ और तो सब सेवा कौ मंडान भयौ और कीर्तन को मंडान नाही कियौ है ताते अब सूरदास जी को दीजियै। तब आप श्री जी द्वार पधारे। सो सूरदास जी कौ साथ लीये ही सो श्रीनाथ जी द्वार जाय पहुँचे। तब आप स्नान करिकें मंदिर में पधारे। तब सूरदास जी सों कह्यौ जो सूरदास ऊपर आउ स्नान करिकें श्रीनाथ जी कौ दर्शन करि। तब सूरदास जी पर्वत ऊपर जायकै श्रीनाथ जी कौ दर्शन कीयौ। तब आपने कह्यौ जो सूरदास कछु श्रीनाथ जी को सुनावौ। तब सूरदास जी ने प्रथम विग्यप्ति[1] को पद गायौ। सो पद। राग धनाश्री। "अब हों नाच्यौ बहुत गोपाल।" यह पद सम्पूर्ण करिकें श्रीनाथ जी के आगें गायौ। तब श्रीमहाप्रभून जी ने कह्यौ जो अब तौ सूरदास तुममें कछू अविद्या रही नाहीं तुम्हारी अविद्या तो प्रभून ने दूर कीनी ताते कछु भगवद्यश वर्णन करौ। तब सूरदास जी ने महात्म्य और लीला ऐसो जस करिकें गाय सुनायौ। सो पद। राग गौरी। "कोन सुकृत इन ब्रजवासिन कों।" यह पद सम्पूर्ण करिके गायौ। सो सुनिकें श्रीमहाप्रभू जी बहुत प्रसन्न भये।

सो जैसो श्रीआचार्य जी महाप्रभून नें मार्ग प्रकाश कियौ है। ताके अनुसार सूरदास जी ने पद कीये। श्रीआचार्य जी महाप्रभून के मार्ग को कहा स्वरूप है महात्म्य ग्यान पूर्वक सुदृढ़ स्नेह की यौ[2] परमकाष्टा हैं और स्नेह आगे भगवान को महात्म्य रहत नाहीं

१ विज्ञप्ति। २ तो।

ताते भगवान वेर वेर महात्म्य जनावत हैं। नाम प्रकरन में पूतना करि, सकट तृनावर्तकरि, गर्गाचार्य करि, यमलार्जुन करि, वैकुण्ठ दर्शन करी[1], ऐसें करिकें भगवान ने बहुत महात्म्य जनायौ। परि नइ ब्रजभक्तिन को स्नेह परमकाष्टापन्न है ताते ताही समय तौ महात्म्य रहै पाछें विस्मृत हो जाय।

प्रसंग २

और सूरदास जी ने सहस्रावधि[2] पद कीये हैं ताको सागर कहियै सो सब जगत में प्रसिद्ध भये। सो सूरदास जी के पद देशाधिपति ने सुने सो सुनिकें यह बिचारी जो सूरदास जी काहू विधि सों मिले तो भलौ। सो भगवदिच्छा ते सूरदास जी मिले। सो सूरदास जी सों कह्यौ देशाधिपति ने जो सूरदास जी में सुन्यो है जो तुमने विसनपद वहु[3] कीयै हैं जो मोकों परमेश्वर[4] नें राज्य दीयैं है सो सब गुनीजन मेरौ जस गावत हैं ताते तुमहूँ कछू गावौ। तब सूरदास जी ने देशाधिपति के आगे कीर्तन गायौ। सो पद। रागविलावल। "मना रे तू करि माधौ सों प्रीति।" यह पद देशाधिपति के आगे संपूर्ण करिके सूरदास जी नें गायौ। सो यह पद कैसो है जो यह पद को अहर्निश ध्यान रहे तौ भगवदनुग्रह को सदा सार्ति रहै; और संसार ते सदा वैराग्य रहै, और कुसंग को सदा भय रहैं, और भगवदीय के संग को सदा चाह रहैं और श्रीठाकुर जी के चरणार्विंद ऊपर सदा स्नेह रहैं, देशादि के ऊपर आसक्ति न होय, ऐसो पद देशाधिपति कों सुनायौ।

---

१ करि। २ सहस्र विधि। ३ बहुत। ४ पनमेश्वर।

सो सुनि के देशाधिपति बहुत प्रसन्न भयो और कह्यौ जो सूरदास जी मोकों परमेश्वर[१] ने राज दीनों है सो सब गुनीजन मेरो जस गावत हैं ताते मेरो जस कछू गावौ। तब सूरदास जी ने यह पद गायौ। सो पद। राग केदारौ। "नाहिन रह्यौ मनमें ठौर।" यह पद संपूर्ण करि कें सूरदास जी ने गायौ। सो सुनि कें देशाधिपति अकबर बादशाह[२] अपने मन में विचारयौ जो ये मेरो जस काहे के गावेंगे जो इनको कछू मेरी बात कौ लालच होय तौ गावै ये तो परमेश्वर के जन हैं। और सूरदास जी ते (ने) या पद के समाप्त में गायौ। "हो जो सूर ऐसें दर्श को इमरत[३] लोचन प्यास।" यह गायौ है। देशाधिपति ने पूछ्यो जो सूरदास जी तुम्हारे लोचन तो देखियत नाहीं सो प्यासे कैसें मरत हैं और बिन देखें तुम उपमा को देत हो सो तुम कैसें देत हो। तब सूरदास जी कछू बोले नाहीं। तब फेरि देशाधिपति बोलो जो इनके लोचन हैं सो तो परमेश्वर के पास हैं सो उहाँ देखत हैं सो वर्णन करत हैं। तब देशाधिपति नें सूरदास जी के समाधान की मन में विचारी जो इनको कछु दीयौ चाहिये परि यह तौ भगवदीय है इनकों कछू काहू बात की इच्छा नाहीं। पाछें सूरदास जी देशाधिपति सों विदा होयकें श्रीनाथ जी द्वार आये।

प्रसंग ४

एक समय[४] सूरदास जी मार्ग में चले जाते हैं[५] सो कोई[६]

---

१ पनमेश्वर। २ पातसाह। ३ ए मरत। ४ समें। ५ जात है। ६ कोऊ।

चौपड़ खेलत हुते। सो वा चौपड़ खेल में ऐसे लीन है[1] जो कोऊ आवते जाते की सुधि नाहीं। ऐसे खेल में मग्न हैं। सो देख सूर-दास जी के संग के भगवदीय है तिनसों सूरदास जी ने कह्यौ जो देखौ वह प्राणी कैसौ अपनौ जनमारो[2] खोवत हैं। भगवान ने तौ मनुष्य देह दीनी है सो तौ अपनी सेवा भजन के लियै दीनी है सो ये तौ या देह सों हाड कूटत हैं। या में यह लौकिक सिद्ध नाहीं सो काहे ते जो या लोक में तो अपजस और पर-लोक में भगवान ते वहिर्मुख। तातें श्रीठाकुर जी ने इनकौ मनुष्य देह दीनी है तिनकों चौपड़ ऐसी खेलनी चाहिये। सो ता समय एक पद सूरदास जी ने अपने संगकेन सों कह्यौ। सो पद।

राग केदारौ

मन तू समझि सोच विचार।
भक्ति बिन भगवान दुर्लभ कहत निगम पुकार ॥ १ ॥
साध संगति डारि फासा फेरि रसना सारि।
दाव अबकैं पर्यौ पूरौ उतरि पहिली पार ॥ २ ॥
वाकसत्रै सुनि अठारे पच[3]ही कों मारि।
दूर ते तजि तीन कौन[4] चमकि चौक विचार ॥ ३ ॥
काम क्रोध जंजाल भूल्यो ठग्यो ठगनी नारि।
सूर हरि कैं पद भजन बिन चल्यौ दोउ कर झार ॥ ४ ॥

यह पद सूरदास जी नें अपने संग के भगवदीयन सों

... । २ जमारो। ३ पंच। ४ काने।

सो या पद सूरदास जो नें कहा कह्यौ 'मन तू समझि सोच विचार।' ये तीन्यौ वस्तु चौपड़ में चाहियै सोई तीनों वस्तु भगवान के भजन में चाहियै। काहे जो समझि न होय तौ श्रवण कहा करेगो तातें पहिले तौ समझ चहियै। और सोच कहियै चिंता, सों भगवान के प्रास[1] की चिंता न होय तौ संसार ऊपर वैराग्य कैसें आवै तातें सोच कहियै। और विचार, जो या जीव कों विचार हीं नाहीं तौ संग कुसंग में कहा करेगो तातें विचार चाहियै। सो ये तीनों वस्तु होंय तौ भगवदीय होय तातें ये तीनों वस्तु भगवदीय कों अवश्य चाहियै। और चौपड़ में हूँ ये तीनों वस्तु चाहियै। समझ कहे गिनवो न आवतो गोट कैसें चले, और सोच अगम जो मेरे यह दाव पड़े तो यह गोट चलूँ, विचार जो वाही में तन मन। जो यह वस्तु होय तो चौपड़ खेली जाय। सो वे सूरदास जी श्रीआचार्य महाप्रभून के ऐसे परम कृपापात्र भगवदीय हैं[2]।

प्रसंग ५

बहुर सूरदास जी श्रीनाथ जी द्वार आयकें बहुत दिन ताईं श्रीनाथ जी की सेवा कीनी। बीच बीच में श्रीगोकुल श्रीनवनीत प्रिया जी के दर्शन कों आवते। सो एक समय श्रीसूरदास जी श्रीगोकुल आये श्रीनवनीतप्रिया जी के दर्शन कीये और बाललीला के पद बहुत सुनाये। सो श्रीगुसाईं जी सुनिकें बहुत प्रसन्न भये।

---

१ प्राप्ति। २ है।

पाछें श्रीगुसांई जी ने एक पालना संस्कृत में कीयौ सो पालना सूरदास जी कों सिखायौ। सो पालना सूरदास जी ने श्रीनवनीत प्रिया जी झूलत हुते ता समय गायौ। सो पद। राग रामकली। 'प्रेम[1] पर्यंक शयनं" यह पद सूरदास जी ने सम्पूर्ण करिकें गाय सुनायौ श्रीनवनीतप्रिया जी कों। पाछें या पद के भाव के अनुसार बहुत पद किये सो सुनि कें श्रीगुसाईं जी बहुत प्रसन्न भये। पालना के भाव अनुसार पद गायो। सो पद।

राग बिलावल

बाल विनोद आँगन में की डोलनि।
मणिमय भूमि सुभग नंदालय बलिबलि गई तोतरी बोलनि ॥ १ ॥
कठुलाकंठ रुचिर केहरि नख ब्रजमाल बहुतई अमोलनि।
वदन सरोज तिलक गोरोचन लरलटिकन मधुगनि लोलनि ॥ २ ॥
लीन्यौ कर परसत आनन पर कछू खाय-कछू लग्यौ कपोलनि।
कहैं जन सूर कहाँ लौं वरनों धन्य नंद जीवन जग तोलनि ॥ ३ ॥
गोपाल दुरे हैं माखन खात।
देखि सखी सोभा जो बढ़ी अति स्याम मनोहरि गात ॥ १ ॥
उठि अवलोकि ओट ठाढ़ी ह्वै जिह विधि नहीं लखि लेत।
चकृत नेन चहूँ दिस चितवत और सबन कों देत ॥ २ ॥
सुन्दर कर आनन समीप हरि राजत यह आकार।
जनु जलरुह तजि वेर विधि सों लाये मिलत उपहार ॥ ३ ॥

---

१. प्रेय।

गिरि गिरि परत वदनते ऊपर है दधिसुत के बिंदु।
मानहू सुधाकन खोरवत पिय जिय दुंद[1] ॥ ४ ॥
बालबिनोद बिलोक सूर प्रभु नित भई व्रज की नारि।
फुरत न वचन बरजिवे कों मनराही[2] विचार विचार ॥ ५ ॥

राग जैतश्री

कहाँ लग बरनो सुन्दरताई।
खेलत कुमर कतिक आँगन में नेन निरखि सुखभाई ॥ १ ॥
कुलहै[3] लसत श्याम सुंदर के वहु विधि रंग विवनाई।
मानउ नवघन ऊपर राजत मघुवा मनुष्य[4] चढ़ाई ॥ २ ॥
सेतपीत अरु असितलाल सणि[5] लटकनि भाल सराई।
मानहूँ असुर देव गुरु सों मिलि भूमि जसो[6] समुदाई ॥ ३ ॥
अति सुदेश मृदु चिहर[7] हरत मन मौहन सुख वगराई।
मानहुँ मंजुल कज[8] ऊपर वरअलि अवलि फिर आई ॥ ४ ॥
दूधदंत छवि कही न जात कछू अलि पल लय झलकाई।
किलकत हंसन दुरति प्रगटत मानो विंधु[9] में निपुलताई ॥ ५ ॥
खंडत वचन देत पूरन सुख अद्भुत यह उपमाई।
घुटुरुन चलत उठत प्रमुदित मन सूरदास बलि जाई ॥ ६ ॥

राग रामकली

देखौ सखी एक अद्भुत रूप।
एक अम्बुजमध्य देखियत वीस दधिसुत जूप ॥ १ ॥

---

१ जनदिंदु। २ रहि। ३ कुलहे। ४ धनुष। ५ मणि। ६ भूमिज सो। ७ चिहुर। ८ कंजन। ९ विंदु।

एक अवली दोय जलचर उभै अर्क अनूप ।
पंचवार चढ़ि गहि देखियत कहौ कहा स्वरूप ॥ २ ॥
सिसुगन में भई सोभा कोउ करौ विचार ।
सूर श्रीगोपाल की छवि राखो यह निरधार ॥ ३ ॥

ऐसे पद सूरदास जी ने गाये पाछें फेरि श्रीनाथ जी द्वार आये ॥

प्रसंग ६

अब सूरदास जी ने श्रीनाथ जी की सेवा बहुत कीनी बहुत दिन ताईं। ता उपरांत भगवद इच्छा जानी जो अब प्रभून की इच्छा बुलायवे की है। यह विचारिकें जो नित्य लीला फलात्मक रासलीला जो जहाँ करे हैं ऐसी परासोली तहाँ सूरदास जी आये। श्रीनाथ जी की ध्वजा कौ दंडौत करिकें ध्वजा के साम्हे सन्मुख करिकें सूरदास जी सोये परि अंतःकरन यह जो श्रीआचार्य जी महाप्रभू दर्शन देयंगे। अब यह देह तौ थकी ताते अब या देह सों श्रीनाथ जी को दर्शन होय तौ जानियै परम भाग्य हैं। श्रीगुसाईं जी को नाम कृपासिंधु है भक्तन के मनोरथ पूरन कर्त्ता हैं। ऐसे विचार के सूरदास जी श्रीगुसाईं जी कौं चितवन करत हैं। और श्रीगुसाईं जी कैसे कृपासिंधु हैं जैसें सूरदास जी उहाँ स्मरण करते हैं तैसे ही श्रीगुसाईं जी इनको छिनहूँ नहिं भूलत हैं।

श्रीनाथ जी को सिंगार होतौ ता समय सूरदास जी मणि कोठा में ठाड़े ठाड़े कीर्तन करते। सो तादिन श्रीगुसाईं जी श्री-

नाथ जी कौं सिंगार करत हुते और सूरदास जी कौ कीर्तन करत न देखौ तब श्रीगुसाईं जी ने पूछौ सूरदास जी नाहीं देखियत सो काहे ते। तब काहू वैष्णवन ने[1] कह्यौ जो महाराज सूरदास जी तो आज परासोली की ओडी[2] जात देखे हैं। तब श्रीगुसाईं जी जान्यो जो भगवदि इच्छाते अवसान समें हैं ताते सूरदास जी परासोली गये हैं। तब श्रीगुसाईं जी ने अपने सेवकन सों कह्यौ जो पुष्टमार्ग कों जिहाज[3] जात हैं जाकों कछू लेनों होय तो लेउ और जो भगवद् इच्छा ते राजभोग आरती पाछें रहत हैं तो में हू आवत हों। पाछें श्रीगुसाईं जी बेर बेर सूरदास जी की खबरि मँगायो करें जो आवै सोई कहै जो महाराज सूरदास तो अचेत हैं कछू बोलत नाहीं। ऐसे करत श्रीनाथ जी के राजभोग को समय भयो।

सो राजभोग आरती करिकें श्रीगुसाईं जी श्रीगिरिराजते नीचे उतरे सो आप परासोली पधारं। भीतरिया सेवक रामदास जी प्रभृत और कुंभनदास जी और श्रीगुसाईं जी के सेवक गोविंदस्वामी चत्रभुजदास प्रभृत और सब श्रीगुसाईं जी के साथ आये। सो आवत ही सूरदास जी सों श्रीगुसाईं जी ने पूछो जो सूरदास जी कैसे हो। तब सूरदास जी ने श्रीगुसाईं जीको दंडोत करिकें कह्यौ जो महाराज आये हो महाराज की बाट देखत हुतो। यह कहिकें सूरदास जी ने एक पद गायो। सो पद।

---

१ वैष्णव ने। २ ओरी। ३ जहाज।

राग सारंग

देखो देखैा हरि जू को एक सुभाव ।
अति गंभीर उदार उदधि प्रभु जान सिरोमनराय ॥१॥
राई जितनी सेवा को फल मानत मेरु समान ।
समझि दास अपराध सिंधु सम बूंद न एकौ जानि ॥२॥
वदन प्रसन्न कमलपद सन्मुख दीखत हौ हैं ऐसें ।
ऐसें विमुखहू भये कृपा या मुख की[1] तब देखैा तब तैसे ॥३॥
भक्त विरह करत करुणामय डोलत पाछें लागे ।
सूरदास ऐसे प्रभु कें कत दीजै पीठ अभागे ॥४॥

यह पद सूरदास जी ने कह्यौ। सो सुनिकें श्रीगुसाईं जी बहुत प्रसन्न भये श्रौर कह्यौ जो ऐसे दैन्य प्रभु अपने सेवकन को देहि या दैन्य के पात्र एही है। तब वा बेर श्रीगुसाईं जी पास ठाडे हुते श्रौर चत्रभुजदास हूँ ठाडे हुते। तब चत्रभुजदास ने कह्यौ जो सूरदास जी ने भगवद जस वर्णन कीयैा परि श्रीआचार्य जी महाप्रभून को जस वर्णन ना कीयो। तब यह वचन सुनिकें सूरदास जी बोले जो मैं तो सब श्रीआचार्य जी महाप्रभून को ही जस वर्णन कीयो है कछु न्यारो देखूँ तौ न्यारो करूँ परि तेरे माथ कहत हौं या भांति कहिकें सूरदास जी ने एक पद कह्यौ। सो पद।

---

1 कृपाया मुख की।

राग विहागरौ

भरौसौ दृढ़ इन चरनन केरौ ।
श्रीवल्लभ नखचंद्र छटा बिनु सब जगमांझि अंधेरौ ॥१॥
साधन और नहीं या कलिमें जासों होत निवेरौ ।
सूर कहाकहि दुबिधि आंधिरौ[1] विना मोल कौ चेरो ॥२॥

यह पद कह्यौ। पाछैं सूरदास जी कों मूर्छा आई। तब श्री-गुसांई जी कहैं जो सूरदास जी चित्त की वृत्ति कहां है। तब सूर-दास जी ने एक पद और कह्यौ। सो पद।

राग बिहागरौ

बलि बलि बलि हैा कुमर राधिका नंदसुवन जासों रति मानी।
वे अति चतुर तुम चतुर सिरोमन प्रीति करी केसें होत है छानी॥१॥
वे जु धरत तन कनक पीत पट सो तो सब तेरी गति ठानी।
ते पुनि श्याम सहेज वे शोभा अंबर मिस अपने उर आनी॥२॥
पुलकित अंत अब ही ह्वै आयौ निरखि देखि निज देह सयानी।
सूर सुजान सखी के बूझे प्रेम प्रकाश भयौ विहसानी॥३॥

यह पद कह्यौ इतनों कहिकें सूरदास जी को चित श्रीठाकुर जी को श्रीमुख तामें करुणारस कें भरे नेत्र देखे। तब श्रीगुसाइँ जी ने पूछौ जो सूरदास जी नेत्र की वृत्ति कहाँ है। तब सूरदास जी ने एक पद और कह्यौ। सो पद।

---

१ आंधरो।

राग विहागरो

खंजन नैन रूपरस माते ।
अतिसे चारु चपल अनियारे पल पिंजरा न समाते ।
चलि चलि जात निकट श्रीवन[1] के उलटि पुलटि ताठंक[2] फँदाते ।
सूरदास अंजल[3] गुण अटके नातर अव उडि जाते ॥१॥

इतनों कहत ही सूरदास जी ने या शरीर को त्याग कीयो। सो भगवल्लीला में प्राप्त भये। पाछें श्रीगुसाईं जी सब सेवकन सहित श्रीगोवर्द्धन आये। ताते सूरदास जी श्रीआचार्य जी महाप्रभून के ऐसे परम कृपापात्र भगवदीय हैं सो इनकी वार्ता कहाँ ताईं लिखियै। प्रसंग ॥ ६ ॥ वैष्णव ॥ ८८ ॥

---

१ श्रवन । २ ताटंक । ३ अंजन ।

अथ कृष्णदास अधिकारी तिनकी वार्ता

—:o:—

प्रसंग १

सो वे कृष्णदास शूद्र एक वेर द्वारिका गये हुते । सो श्रीरण-छोर जी के दर्शन करिकें तहाँ ते चले । सो आपन[1] मीराबाई के गाँव आयौ । सो वे कृष्णदास मीराबाई के घर गयै । तहाँ हरिवंश व्यास आदि दे विशेष सह वैष्णव हुते । सो काहू कों आयै आठ दिन, काहू को आये दश दिन, काहू को आये पन्द्रह दिन भये हुते । तिनकी बिदा न भई हुती । और कृष्णदास नें तो आवत ही कही जो हूँ तो चलूंगौ । तब मीराबाई ने कही जो वैठौ । तब कितनेक महोर श्रीनाथ जी को देन लागी । सो कृष्णदास नें न लीनी और कह्यौ जो तू श्रीआचार्य जी महाप्रभून की सेवक नाहीं होत ताते तेरी भेट हम हाथ ते छूवेंगे नाहीं । सो ऐसे कहि कें कृष्णदास उहाँ ते उठि चले । सो जब आगे आयै तब एक वैष्णवन[2] नें कह्यौ जो तुमने श्रीनाथ की भेट नाहीं लीनी । तब कृष्णदास ने कह्यौ जो भेट की कहाँ[3] है परि मीराबाई के यहाँ जितने सेवक बैठे हुते तिन सबन की नांक नीचे करिकें भेट फेरी है इतने इकठौर कहाँ मिलते । यह हू जानेंगे जो एक वेर शूद्र श्री-

---

१ आपन । २ वैष्णव । ३ कहा ।



राग विहागरो

खंजन नैन रूपरस माते।
अतिसे चारु चपल अनियारे पल पिंजरा न समाते।
चलि चलि जात निकट श्रीवन[1] के उलटि पुलटि ताठंक[2] फँदाते।
सूरदास अंजन[3] गुण अटके नातर अब उडि जाते ॥१॥

इतनों कहत ही सूरदास जी ने या शरीर को त्याग कीयो। सो भगवल्लीला में प्राप्त भये। पाछें श्रीगुसाईं जी सब सेवकन सहित श्रीगोवर्द्धन आये। ताते सूरदास जी श्रीआचार्य जी महाप्रभून के ऐसे परम कृपापात्र भगवदीय हैं सो इनकी वार्ता कहाँ ताईं लिखियै। प्रसंग ॥ ६ ॥ वैष्णव ॥ ८८ ॥

---

१ श्रवन। २ ताटंक। ३ अंजन।

अथ कृष्णदास अधिकारी तिनकी वार्ता

—:o:—

प्रसंग १

सो वे कृष्णदास शूद्र एक वेर द्वारिका गये हुते। सो श्रीरण-छोर जी के दर्शन करिकें तहाँ ते चले। सो आपन[1] मीराबाई के गांव आयौ। सो वे कृष्णदास मीराबाई के घर गये। तहाँ हरिवंश व्यास आदि दे विशेष सह वैष्णव[2] हुते। सो काहू कों आये आठ दिन, काहू को आये दश दिन, काहू को आये पन्द्रह दिन भये हुते। तिनकी विदा न भई हुती। और कृष्णदास नें तो आवत ही कही जो हूँ तो चलूंगो। तब मीराबाई ने कही जो बैठो। तब कितनेक महोर श्रीनाथ जी को देन लागी। सो कृष्णदास नें न लीनी और कह्यौ जो तू श्रीआचार्य जी महाप्रभून की सेवक नाहीं होत ताते तेरी भेट हम हाथ ते छूवेंगे नाहीं। सो ऐसे कहि कें कृष्णदास उहाँ ते उठि चले। सो जब आगे आये तब एक वैष्णवन नें कह्यौ जो तुमने श्रीनाथ की भेट नाहीं लीनी। तब कृष्णदास ने कह्यौ जो भेट की कहाँ[3] है परि मीराबाई के यहाँ जितने सेवक बैठे हुते तिन सबन की नांक नीचे करिकें भेट फेरी है इतने इकठौर कहाँ मिलते। यह हू जानेंगे जो एक वेर शूद्र श्री-

---

१ आपन। २ वैष्णव। ३ कहा।

आचार्य जी महाप्रभून कौ सेवक आयौ हुतो ताने भेट न लीनी तो तिनके गुरु की कहा बात होयगी ॥

प्रसंग २

और प्रथम सेवा श्रीनाथ जी की बंगाली करते। सो श्री-आचार्य जी महाप्रभून नें मकुट[1] काछनी हीरा के आभरन भराय दीने हैं[2] सो नित्य करते[3]। सो भेट आवती सो खरच होती, कछु संग्रह न राखते, सब खरच होय जातौ, और बंगाली सेवा करते। पाछें श्रीआचार्य जी महाप्रभून ने कृष्णदास कौ आज्ञा दीनी जो तुम श्रीगोवर्द्धन रहो सेवा टहल करौ तब कृष्णदास अधिकारी भये, अधिकार करन लागे।

पाछे एक दिन मथुरा कौ चलन लागे सो अडींगलों पहुँचे तब पेंडे में अवधूतदास मिले। महापुरुष हुते ब्रज में फिर्यौ करते सो कृष्णदास कौं मिले। तब अवधूतदास ने कह्यौ जो कृष्णदास तुम कहाँ चले। तब कृष्णदास ने कही जो मथुरा जात हौं कछू काम है। तब अवधूतदास ने पूछो जो श्रीनाथ जी की सेवा कोन करत है। तब कृष्ण दास ने कही जो बंगाली करत हैं तब अवधूतदास ने कही जो श्रीनाथ जी कौ अपनो वैभव बढ़ावनो है ताते तुम बंगालीन को दूर क्यों नाहीं करत। सो अवधूतदास सों श्रीनाथ जी ने कही जो मोकों बंगाली बहुत दुःख देत हैं। सो तब बंगाली श्रीनाथ जी भोग धरने सो उनकी चुटि[4] में छोटो सो स्वरूप हुतो

१ [illegible] । २ है । ३ [illegible] । ४ [illegible] ।

देवी को सो सामने बैठावतै जब भोग सरावते। वा देवी कौ अपनी चुटिया में धर लेते ऐसे सदा करते। सो वात अवधूतदास कौ श्रीनाथ जी ने जनाई ताते अवधूतदास ने कृष्णदास सों कह्यौ जो तुम बंगालीन के दूर करौ। तब कृष्णदास ने कही जो श्रीगुसाईं जी की आज्ञा बिना कैसे काढ़ें। तब अवधूतदास ने कह्यौ जो तुम अडेल में जायके श्रीगुसाईं जी की आज्ञा ले आवो। जैसे बने तैसे इन बंगालीन को काढो।

तब कृष्णदास अडींगते फिरे। सो श्रीगोवर्द्धन आये। तब बंगालीन सों कह्यौ जो हुँ तो श्रीगुसाईं जी के पास अडेल जात हों तुम श्रीनाथ जी की सेवा सावधानी सों करियो[1]। और सब सेवक हुते तिनसों कृष्णदास ने कह्यौ जो हूँ तो श्रीगुसाईं जी के पास कछु काम है सो अडेल कें जात हों तुम सावधान रहियो। ता पाछें श्रीनाथ जी सों बिदा होय के अडेल कों चले। सो दिन १५ में श्रीगुसाईं जी के पास आप पहुँचे सो आयके श्रीगुसाईजी को दंडौत कीये। तब श्रीगुसाईं जी ने पूछौ जो कृष्णदास तुम क्यों आयो। तब कृष्णदास ने कह्यौ जो श्रीनाथ जी कों अपनों वैभव बढ़ावनों है और बंगालीन ने बहुत माथो उठायो है जो भेट आवत है सो ले जात हैं सो सब अपने गुरुन के देत हैं।

तब श्रीगुसाईं जी कहैं जो श्रीआचार्य जी महाप्रभू असुर व्यामोह लीला दिखाई। ता पाछें श्रीगोपीनाथ जी पूरब को परदेश कीयो सो एक लक्ष की भेट भई। पाछें अडेल आये। तब श्रीगोपी-

---

१ करियो।

नाथ जी ने कही जो यह पहलो परदेश है ताते यामें आयौ सो सब श्रीनाथ जी को है श्रीनाथ जी कों विनियोग कियौ चाहियै। ता पाछें श्रीगोपीनाथ जी दिन दश बारह रहके पाछें श्रीनाथ जी द्वार पधारे। सो जाय पहुँचे। तब श्री गोपीनाथ जी ने दर्शन कीयें। पाछें जो लाये हुते सो सब भेट कियौ। आभूखन सब जड़ाव के समराये। थार कटोर डबरा चमचा तष्टी प्रभृत सब सोना रूप के किये। सब करिके श्रीनाथ जी सो विदा होयके श्रीगोपीनाथ जी अडेल आये। ता पाछें बंगाली बरस एक कें भीतर सब ले गये। अपने गुरु के यहाँ जाय के दीयौ। यह बात श्रीगुसाईं जी ने कृष्णदास सों कही और कह्यौ जो बंगालीन ने माथौ उठायौ परि वे श्रीआचार्य जी महाप्रभून के राखे हैं सो कैसें निकलेंगे।

तब कृष्णदास ने श्रीगुसाईं जी सों कह्यौ जो महाराज श्रीनाथ जी की आज्ञा है जो बंगालीन कों निकासौ ताते आप या बात में कछु मति बोलौ। मोकों आप आज्ञा करौ तौ अपनो आप कर लेउँगो। जैसे बंगाली निकसेंगे तैसे काढूँगो। तब श्रीगुसाईं जी ने कह्यौ जो अवश्य। तब कृष्णदास ने कह्यौ जो महाराज दोय पत्र लिखें, एक राजा टोडरमल्ल के नाम कौ एक बीरबल के नाम कौ। तब श्रीगुसाईं जी ने दोय पत्र लिख दीने राजा टोडरमल्ल कौ और बीरबल कों। लिखे जो कृष्णदास कों श्रीनाथ जी द्वार भेजे हैं सो तुमसों कृष्णदास कहै सो करि देउगे[1]। सो पत्र लेकें श्रीनाथ

1. देउगे।

द्वारिका[1] कों चले। सो आगरे आये। तहाँ टोडरमल्ल राजा बीर-बल सों मिले। पत्र श्रीगुसाईं जी के हुते सो दीये। सो उन पत्र बाँचि कें कृष्णदास सों कह्यौ जो तुम कहो तेसें करें। तब कृष्ण-दास ने कह्यौ जो अब तो में मथुरा जात हों बंगालीन कों काढ़िवे कों।

ता पाछें कृष्णदास राजा टोडरमल्ल सों विदा होय कें श्रीनाथ जी द्वार को चलें। सो मथुरा आये। तब मार्ग में अवधूतदास मिले। तब कृष्णदास सों अवधूतदास ने कही जो कृष्णदास जी ढील कहा करि राखी है बंगालीन कों काढौ, श्रीनाथ जी को ऐसी इच्छा है, श्रीनाथ जी कों अपनों वैभव फैलावनों है। तब कृष्ण-दास ने कह्यौ जो श्रीगुसाईं जी की आज्ञा लेके आयो हौं अब जाय के बंगालीन कौ काढत हों। इतनों कहिकें कृष्णदास चले। सो श्रीनाथ जी द्वार आये। सो वे बंगाली सब रुद्रकुंड ऊपर रहते सो वहाँ उनकी झोंपरी हुती। सो कृष्णदास ने जराय दीनी। तब सोर भयो। तब बंगाली सेवा छोड़ कै पर्वत के नीचे आये। तब कृष्णदास ने पर्वत ऊपर अपने मनुष्य पठाय दिये। तब बंगाली देखें तो कृष्णदास नें झोंपरी में आग लगाय दीनी है। तब सब बंगाली कृष्णदास सों लरन लागे। तब कृष्णदास ने द्वै द्वै चार चार लाठी सबन में दीनी।

तब वे बंगाली तहाँ ते भाजे सों मथुरा आये। तब रूपसना-तन के पास आयकै सब बात कही। तब इतने में कृष्णदास

[1] श्रीनाथ जी द्वार।

हू आय ठाडे भये। तब रूपसनातन ने कृष्णदास के ऊपर खीज कें कह्यौ जो क्यों रे शूद्र तू कोंन जो इन ब्राह्मणन कों मारे। तब कृष्णदास ने कही जो हूँ शूद्र हों परि तुम हू तौ अग्निहोत्री नहीं, तुमहू तो कायस्थ हो। तब सनातन ने कह्यौ जो यह बात पातसाह सुनैगो तौ तू कहा जवाब देयगो। तब कृष्णदास ने कह्यौ जो हों तो नीके जवाब देउंगो परि तुमको जुवाब देत में दुःख होयगो, और तुमकों जुवाब आवेगो[१] जो तुम कायस्थ होयकै इन ब्राह्मणन सों दंडौत करावत हो। तब रूप सनातन तौ चुप ह्वै रहे और बंगालीन सों कह्यौ जो तुम जानौ ये जानों।

तब बंगाली मथुरा के हाकिम पास गये। तब कृष्णदास आय ठाढे भये। तब हाकिम ने कह्यौ जो भयौ सो तौ भयौ परि अब इनकों राखौ। तब कृष्णदास ने कह्यौ जो अब तौ इनका[२] न राखेंगे। ये तौ हमारे चाकर हुते सो हमने इनकों सेवा सोंपी हुती सो सेवा छोड़ कें क्यों आये। जो इनकी झोंपरी जर गई हुती तौ हम नई छवाय देते ताते अब हम तौ न राखेंगे। सो ऊपर तुम कहत हो जो हम श्रीगुसाईं जी कों लिखेंगे। वे कहेंगे तैसे करेंगे। तुम श्रीगुसाईं जी कों लिखौ।

पाछें कृष्णदास श्रीनाथ जी द्वार आये और बंगाली सब अपने ठौर आये। तब कृष्णदास ने श्रीगुसाईं जी कों पत्र लिख्यो तामें बंगाली काढे सो सब समाचार विस्तार करिकै लिखे और लिख्यो

१ न आवैगो। २ इनकों।

जो अब पधारियै तौ भलौ है। सो पत्र श्रीगुसांईं जी के पास अडेल आयौ। ता पाछे श्रीगुसांईं जी अडेल ते चले सो श्रीनाथ जी द्वार आये। तब वे बंगाली सब आये। तब श्रीगुसांईं जी सों कह्यौ जो हमकों श्रीआचार्य जी महाप्रभून ने सेवा में राखे हुते सों कृष्णदास ने हमकों काढे। तब श्रीगुसांईं जी ने कह्यौ जो तुम सेवा छोड़ के क्यों गयै दोष तुम्हारो है ताते अब तो सेवा में न राखेंगे।

तब वा[1] बंगाली बहुत बीनती करन लागे जो महाराज अब हम खाँयगे कहा। तब श्रीगुसांईंजी ने इनकों श्री नाथ जी के बदले श्री मदन मोहन जी की सेवा दीनी और कह्यो जो इनकी सेवा तुम करियों जो आवै सो खाइयो। तब वे बंगाली श्री मदन मोहन जी की सेवा करन लागे ताते उन बंगालीन ने श्री गोवर्द्धन रहिवौ छोड़ दीयै। ता पाछें श्रीनाथ जी की सेवा में गुजराती ब्राह्मण भीतरिया राखे। श्रीनाथ जी को अपनों वैभव बढ़ावनों हो सो सव भीतरियान कौ नेग और सब सेवकन कों नेग जो जा भाँति श्रीनाथ जी ने कह्यौ ता भाँति श्रीगुसांईं जी ने बाँधे। तब तो श्रीनाथ जी की सेवा प्रनालिका ते होन लागी और कृष्णदास अधिकार करन लागै।

प्रसंग ३

बहिर[2] श्रीनाथ जी ने कृष्णदास कों आज्ञा दीनि[3] जो श्याम मति[4] को लेकें ताल पखावज ले कें तू परासोली में आईयो।

---

१ वे। २ बहुरि। ३ दीनी। ४ कुमरि।

सो श्यामकुमर आछौ मृदंग बजावते। सो श्रीनाथ जी की सैन आरती उपरांत अनोसरभयो तब कृष्णदास श्यामकुमर के घर गये। तब कृष्णदास ने श्यामकुमर सों कही जो श्री नाथ जी ने आज्ञा करी है सो मृदंग ले के परासोली चलौ। तब श्यामकुमर ने कह्यो जो मोहू कों श्रीनाथ जी ने आज्ञा करी है नाते चलिये। तब श्यामकुमर मृदंग ले कें आयौ।

तब कृष्णदास और श्यामकुमर ये दोऊ जने परासोली सों देखे तौ श्रीनाथ जी स्वामिनी जी सहित विराजे हैं। तब श्री नाथ जी ने श्यामकुमर सों कह्यो जो तू तो मृदंग बजाय, और कृष्णदास सों कह्यो जो तू कीर्तन करि और श्रीनाथ जी और श्रीस्वामिनी जी नृत्य कीयो। तहां कृष्णदास ने पद गायो। सो पद।

राग केदार।

श्री वृषभानुनन्दनी नाचत गिरधर संग
लाग डाट उरपतिरपरास संग रास्यौ।
कानरान मिल्यौ राग केदारौ
गतनृत्त अष्ट घर नान रंग रान्यौ॥
पाई सुर सिद्धि भवन काम विविध रिद्धि
अभिनय दृग लमन सुहाग हुलास रंग रान्यौ।
वनिता मन रूप संग लिये निरखत क्यों सघस[1]
नंद बलिहारी कृष्णदास सुघर[2] रंग रान्यौ॥

[illegible]

यह पद कृष्णदास ने गायौ। श्यामकुमर ने मृदंग बजायौ। श्रीनाथ जी और स्वामिनी जी नृत्य कीयौ। तातें श्रीमहाप्रभू जी की कानि ते श्रीनाथजी कृष्णदास के ऊपर ऐसी कृपा करत हुते।

प्रसंग ४

और कृष्णदास ने बहुत पद कीयै। तब एक समय सूरदास जी नें कृष्णदास सों पूछौ जो तुम पद करत हौ ता में मेरी छाया है। तब कृष्णदास ने सूरदास जी सों कह्यौ जो अब के ऐसौ पद करूँ जो जामें तुम्हारी छाया न आवे। तब कृष्णदास एकांत में बेठिकें एकाग्रचित्त करिकें नयौ पद करन लागे जो जामें तीन तुक कों[1] कीयौ और चौथी तुक बने नाहीं। तब घड़ी दोयलों बिचारे जो आगें तुक चलत नाहीं तो भलौ फेरि प्रसाद लेकें विचारेंगे। सो जा पत्र में लिखत हुते सो पत्र तथा द्वाति लेखनी उहांई धरि कै प्रसाद लेवे को उठे।

जब कृष्णदास प्रसाद लेवे को बैठे तब श्रीनाथ जी ने आप तीन तुक वा पत्र में अपने श्रीहस्त सों लिख दीयै। कृष्णदास ने आधौ पद कियौ हुतौ ताकों आप श्रीनाथ जी पूरो करिकै आप तौ पधारे। ता पाछें कृष्णदास प्रसाद लेकें आये तब देखौ तौ श्रीनाथ जी पूरो पद करिकै श्रीहस्त सों लिखि गये हैं। सो देख के कृष्णदास बहुत प्रसन्न भयौ और कहैं जो सूरदास जी आवें तौ पद सुनावे तब उत्थापन के समय सूरदास जी दर्शन को

---

[1] तो।

आवै तब कृष्णदास ने कह्यौ जो सूरदास जी नयौ पद एक मैंने कीयो है तामें तुम्हारी छाया नाहीं धरी। तब सूरदास जी ने कह्यौ जो कहौ सुनों तो जानों। तब पद कह्यौ। सो पद।

राग गौरी

आवत बने कान्ह गोपबालक संग
नेंचुकी खुर रेणु छुरत[1] अलकावली ॥
भौंहैं मनमथ चाप वक्र लोचन बान
सीस सोभित मत्त मयूर चंद्रावली ॥
उदित उडुराज सुन्दर सिरोमणि बदन
निरखि फूली नवल जुवती कुमुदावली ॥
अरुण सकुच अधर बिंबफल हसात
कहत कछुक प्रकटित होत कुंद दसनावली ।
श्रवण कुंडल भाल तिलक बेसरि नाक
कंठ कौस्तुभ मणि सुभग त्रिवलावली ॥
रत्न हाटक रचित पुरसि पदिक निपाति
बीच राजत सुभ पुलक मुक्तावली ॥

अब श्रीनाथ जी कृत।

बलय कंकण बाजूबंद आजानुभुज
मुद्रिका कर तल विराजत नखावली ॥
[illegible] नव कुनित [illegible] अगिन प्रिय
[illegible] [illegible] प्रदक्षिन प्रेमावली ॥

१ [illegible]। २ [illegible]।

कटि छुद्र घंटिका जटित हीरामयी
नाभि अम्बुज बलित भृंगरोमावली ॥
धायक वहुक चलत भक्त हित जानि पिय
गंड मण्डल रुचिर श्रमजल कणावली ॥
पीत कोसय परिधानें सुन्दर अंग चरण
नुपुरवाद्य गीत सबदावली ॥
हृदय कृष्णदास गिरवर धरण लाल की
चरण नख चन्द्रिका हरति तिमिरावली ॥

यह पद कृष्णदास ने सूरदास जी के आगें कह्यौ। सो सूरदास जी तीन तुक ताँहि तो बोले नाहीं। और तीन तुक के आगे कहन लागे तब सूरदास जी ने कृष्णदास सों कह्यौ जो कृष्णदास मेरे तुमसों वाद है और प्रभून सों वाद नाहीं में प्रभून की वानी पहिचानत हों। तब कृष्णदास चुप कर रहे। ताते कृष्णदास ऐसे भगवदीय हैं।

प्रसंग ५

और एक समय श्रीनाथ जी के भंडार में कछु सामग्री चाहियत हुती। सो कृष्णदास गाडा लेकें आगरे कौ आये। सो आगरे के बाजार में एक वेश्या नृत्य करत हुती। ख्याल टप्पा गावत हुती और भीर हुती। सब लोग तमासो देखत हुते। सो कृष्णदास बाजार में तमासे में जाय ठाडे भये। तब भीर सरक गई तब वह वेश्या कृष्णदास के आगें नृत्य करन लागी। सो वह वेश्या

बहुत सुन्दर, और गावै बहुत आछौ, नृत्य तेसौई करे। सो कृष्णदास या वेश्या के ऊपर रीझे और मन में कहें जो यह तौ श्रीनाथ जी के लायक है। ता पाछें वा वेश्या कों दशमुद्रा तौ वहाँ ही दियै और कही जो रात्रि कों समाज सहित आइयौ। ता पाछें कृष्णदास वहाँ हवेली में उतरे। सो सामग्री चाहियत हुती सो सब लेकै गाडा लदाय सिद्धि करवायौ।

ता पाछें रात्रि पहर गई। तब वेश्या समाजसहित आई। ता पाछें नृत्य भयै गान भायौ। वापै कृष्णदास बहुत रीझें सो रुपैया सत एक दिये। तब वा वेश्या सों कह्यौ जो तेरौ गान हू आछौ और नृत्य हू आछौ परि हमारो सेठ है सो तेरे ख्याल टप्पा ऊपर रीझेगो नाहीं ताते हों कहों सो गाइयौ। ता पाछें कृष्णदास नें एक पूरबी राग में पद करि कें सिखायौ। ता पाछें दूसरे दिन वा वेश्या कों साथ ले के चले सो आगरे ते आयै। पाछे तीसरे दिन श्रीनाथ जी द्वार आयै। सामग्री सब भंडार में धराई। ता पाछे जब उत्थापन को समय भयौ तब कीर्तनियाँ काहू कों बागे[1] न दीये। तब वा वेश्या कों समाज सहित ले गयै। श्रीगुसांई जी मंदिर में ठाड़े श्रीनाथ जी कों मूंढा[2] करत है और मणि कोठा वेश्या नृत्य करन लागी और यह पद गायौ॥ सो पद॥

राग पूरवी॥

मोमन गिरधर छवि पर अटक्यौ।
ललित त्रभंगी अंगन पर चलि गयौ तहांई ठटक्यौ॥ १॥

---

१ बागै लैजान। २ मूंछा।

सजल श्यामघन चरम नीलह्वै फिर चित अनित न आनि तन भटक्यौ।
कृष्णदास कियौ प्राण न्यौछावरि यह तन जग सिर पटक्यौ ॥ २ ॥

यह पद वा वेश्या ने गायौ। सो जब गावत गावत पिछली तुक आई जो "कृष्णदास कियौ प्राण न्यौछावर यह तन जगसिर पटक्यौ" इतनों कहत मात्र वा वेश्या के प्रान ततकाल निकसि गये और दिव्य स्वरूप धरि के श्रीनाथ जी की लीला में प्राप्त भई। और वा वेश्या के समाजी हुते सो मरन लागे जो हमारी तो या तें जीविका हुती अब हम कहा खायंगे। तब कृष्णदास नें कह्यौ जो तुम क्यों रोवत हो चलो नीचे खायवे को देऊँ। तब उन समाजिन कों नीचे लायकें कृष्णदास नें सहस्र रुपया दे विदा किये।

कृष्णदास ने अपने मनते समर्पी ताते श्रीनाथ जी नें वा वेश्या को अंगीकार करी। ताते श्रीआचार्य जी महाप्रभून की कानि तें सेवक की समर्पी वस्तु या भाँति सों अंगीकार करत हैं।

प्रसंग ६

और कृष्णदास को गंगाबाई सों बहुत स्नेह हुतो सो श्रीगुसांईं जी को न सुहावतो। सो एक दिन श्रीगुसांईं जी श्रीनाथ जी कों भोग समर्पित हुते सो सामग्री ऊपर गंगाबाई की दृष्टि परी ताते श्रीनाथ जी आरोगे नाहीं। परि भोग तो समर्प्यौ। ता पाछें समय भयौ तब भोग सरायौ। तब आरती करि अनोसरि करि कें श्रीगुसांईं जी आप नीचे पधारे। तब सेवक आदि

भीतरिया सब ने प्रसाद लीयौ तब श्रीगुसाईं जी आप तौ भोजन करिकें पोढ़े। तब श्रीनाथ जी नें भीतरिया कों लात मारि कें जगायौ और वासूं कहें जो हूँ तौ भूखो हूँ। तब वा[1] भीतरिया ने कह्यौ जो महाराज श्रीगुसांईं जी नें भोग समर्प्यौ है और तुम भूखे क्यों रहे। तब श्रीनाथ जी ने कही जो राजभोग में तो गंगाबाई की दृष्टि परी हुती ताते राजभोग आरोग्यौ नाहीं।

तब वा भीतरिया उठि श्रीगुसाईं जी के पास आयौ। सो श्री गुसांईं जी भोजन करिकें पोढ़े हुते। तब भीतरिया ने आयकें श्रीगुसांईं जी के चरण दाबे। तब श्रीगुसांईं जी चौंकि उठे तब देखें तौ श्रीनाथ जी को भीतरिया है। तब वा भीतरिया सों पूछौ जो यहाँ इतनी वेर कहां आयौ है। तब वा भीतरिया ने कह्यौ जो महाराज आज श्रीनाथ जी भूखे हैं मोकों लात मारिके जगायौ और कह्यौ जो आज तौ मैं भूखोहौं। तब मेने श्रीनाथ जी सों कह्यौ जो महाराज भोग तौ श्रीगुसांईं जी ने समर्प्यौ है तुम भूखे क्यों रहे। तब श्रीनाथ जी ने कही जो सामग्री पर तो गंगाबाई की दृष्टि परी ताते में नाहीं आरोग्यौ।

तब श्रीगुसांईं जी सुनते ही ततकाल स्नान करिकें श्रीगुसांईं जी के साथ ही आयौ। तब श्रीगुसांईं जी नें वा भीतरिया सों कही जो भात और बड़ी करौ जो तत्काल सिद्ध होय आवे। तब भात और बड़ी करी सो तत्काल सिद्ध भयौ। तब श्रीनाथ जी कौ भोग समर्प्यौ। पाछें भीतरिया रसोई करिकें स्नान करिकें पर्वत

---

१ वह।

ऊपर आयै। तब श्रीगुसांई जी आज्ञा भई जो राज भोग की सामग्री तौ भई सिद्धि ता पाछें राज भोग सेन भोग इकठौरो समर्प्यौ। ता पाछें समय भयौ। तब भोग सराय सेन आरती करी। तब श्रीनाथ जी कों पोढाये भोग सर्यौ हो सो प्रसाद एक डवरा में उहाई रह गयौ। तब रामदास भीतरिया ने कही जे पहले भोग समर्प्यौ हुतौ सो उहां ही रह गयौ। तब श्रीगुसांई जी डवरा में ते ठलाय के लेत उतारे। पाछें सब सेवकन कौं वह बडी भात को महाप्रसाद रंचक रंचक बाँटि दीनों ता पाछें श्री गुसांई जी आप हू आरोगे। सो वह बडी भात को प्रसाद अति अद्भुति भयौ। अति अलौकिक स्वाद भयौ। सो श्रीगुसांई जी आप सरायो। तब कृष्णदास ठाडे हुते। तब कृष्णदास ने कही जो महाराज आप ही करन हारे आप ही आरोगन हारे तो क्यों न उत्तम होय। तब श्रीगुसांई जी ने हँस के कहो जो यह तुम्हारे ही कीये भोगत हैं।

प्रसंग ७

अब जो यह बात श्रीगुसांई जी ने कही जो यह तुम्हारे ही कीये फल भोगत हैं सो यह बात सुनिकें कृष्णदास ने श्रीगुसांई जी सों विगाडी। तब श्रीगुसांई जी सों श्रीकृष्णदास ने कही जो तुम पर्वत ऊपर मति चढ़ो। तब श्रीगुसांई जी आप तो तहाँ ते फिरे सो परासोली में आय रहे। तब मन में विचारो जो कृष्णदास कहा मने करेगो परि श्रीनाथ जी की इच्छा ऐसो है

सो श्रीनाथ जी की इच्छा जानि कैं कछू बोले नाहीं। सो आप परासोली में रहे। सो परासोली में ध्वजा के साम्हे वेठि कै विज्ञप्ति कियैा। और श्रीगुसांई जी तीन दिन तैा श्रीगोवर्द्धन रहते और तीन दिन श्रीगोकुल रहते। तब ते परासोली आय रहै। तब श्री गोसांई जी के मंदिर की खिरकी परासोली की ओर पडती ताके साह्मै वेठिते। तब श्रीनाथ जी आप खिरकी में आय दर्शन देते। तब यह जानि कै कृष्णदास नें परासोली की ओर की खिरकी बनवाय दीनी तब ते श्रीगुसांई जी गोकुल ते जब परासोली आवते तब रामदास जी सब सेवक आदि दे श्रीनाथ जी के राजभोग आरती करिकै अनोसरि करिकै श्री-गुसांई जी के दर्शन को परासोली आवते। सो आय के चरणोदक लेय पाछें प्रसाद लेते। सो कृष्णदास कें सुहावतैा नाहीं। और सब सेवक श्रीगुसांई जी के दर्शन विना महाप्रसाद केसे लेंय। परि सेवकन सों कृष्णदास की चले नाहीं।

और श्रीगुसांई जी एक पत्र लिखिकें रामदास भीतरिया को देते और कहते जो श्रीनाथ को दे दीजे। सो पत्र श्रीनाथ जी को देते। श्रीनाथ जी विज्ञप्ति उत्तर लिखिकें रामदास को देते। सो रामदास श्रीगुसांई जी को देते। तव श्रीगुसांई जी वा पत्र को बाँचि कै पानी में पी जाते। या भाँति सों छै महीना बीते परि श्रीगुसांई जी नें श्रीनाथ जी कें अधिकारी वैष्णव जाति कै और श्रीआचार्य जी महाप्रभून कें सेवक जानि कछु न कह्यौ। परि श्री-नाथ जी के विरह को स्नेह वहुत करते। या भाँति छै महीना भये।

तब एक दिन राजा बीरबल आय निकसे। तब ता दिन तौ श्रीगुसांई जी परासोली हुते। श्रीगिरधर जी घर हुते। तब राजा बीरबल ने श्रीगुसांई जी कैा खबर कराई। तब पोरियान ने कही जो श्रीगुसांई जी तौ परासोली है श्रीगिरधर जी घर है। तब राजा श्रीगिरधर जी के दर्शन कों आये। तब बीरबल सों श्रीगिरधर जी ने कही जो कृष्णदास अधिकारी काका जी कौ श्रीनाथ जी के दर्शन नाहीं करन देत, सो काका जी कों खेद बहुत होत है, काका जी परासोली में जाय दर्शन करत है। तब बीरबल ने श्रीगिरधर जी सों कह्यौ जो अब हूँ जाय के कृष्णदास कों कहूँगौ। यों कहि के राजा बीरबल श्रीगिधर जी सों विदा होय के मथुरा आये और श्रीगुसांई जी परासोली ते श्रीगोकुल आये। और बीरबल ने पाँच सौ मनुष्य भेजे और कह्यौ जो कृष्णदास को पकरि लावैा। सो वे मनुष्य श्रीगोवर्द्धन आय कें कृष्णदास कें पकरि लाये। सो वे बीरबल ने कृष्णदास को बंदीखाने में दीनों। तब श्रीगिरधर जी सों कहवाय पठाई जो कृष्णदास को बंदीखाने में दीनों।

तब श्रीगिरधर जी ने श्रीगुसांई जी सों कही जो कृष्णदास को बंदीखाने में दीने हैं। तब श्रीगुसांई जी ने कह्यौ जो हाय हाय श्रीआचार्य महाप्रभून के सेवकन को ऐसो कष्ट। तब श्रीगुसांई जी सों कह्यौ जो तुमनें कह्यौ होयगैा। तब श्रीगिरधर जी ने कह्यौ जो हमने तो बीरबल सों सहज ही कह्यौ हुतैा जो काका जी कों दर्शन नाहीं करन देते सो काका जी कों बहुत खेद होत है। तब

सो श्रीनाथ जी की इच्छा जानि कैं कछू बोले नाहीं। सो आप परासोली में रहे। सो परासोली में ध्वजा के साम्हे बेठि कै विज्ञप्ति कियो। और श्रीगुसांईं जी तीन दिन तो श्रीगोवर्द्धन रहते और तीन दिन श्रीगोकुल रहते। तब ते परासोली आय रहे। तब श्री गोसांईं जी के मंदिर की खिरकी परासोली की ओर पडती ताके साह्मै बेठिते। तब श्रीनाथ जी आप खिरकी में आय दर्शन देते। तब यह जानि कै कृष्णदास नें परासोली की ओर की खिरकी बनवाय दीनी तब ते श्रीगुसांईं जी गोकुल ते जब परासोली आवते तब रामदास जी सब सेवक आदि दे श्रीनाथ जी के राजभोग आरती करिकै अनोसरि करिकै श्रीगुसांईं जी के दर्शन को परासोली आवते। सो आय के चरणोदक लेय पाछें प्रसाद लेते। सो कृष्णदास कों सुहावतो नाहीं। और सब सेवक श्रीगुसांईं जी के दर्शन बिना महाप्रसाद कैसे लेंय। परि सेवकन सों कृष्णदास की चले नाहीं।

और श्रीगुसांईं जी एक पत्र लिखिकैं रामदास भीतरिया को देते और कहते जो श्रीनाथ को दे दीजै। सो पत्र श्रीनाथ जी को देते। श्रीनाथ जी विज्ञप्ति उत्तर लिखिकैं रामदास को देते। सो रामदास श्रीगुसांईं जी को देते। तब श्रीगुसांईं जी वा पत्र को बाँचि कै पानी में पी जाते। या भाँति सों छै महीना बीते परि श्रीगुसांईं जी नें श्रीनाथ जी कों अधिकारी वैष्णव जाति कै और श्रीआचार्य जी महाप्रभून कों सेवक जानि कछु न कह्यौ। परि श्रीनाथ जी के विरह को स्नेह बहुत करते। या भाँति छै महीना भये।

तव एक दिन राजा बीरबल आय निकसे। तब ता दिन तौ श्रीगुसांई जी परासोली हुते। श्रीगिरधर जी घर हुते। तब राजा बीरबल नें श्रीगुसांई जी कौ खबर कराई। तव पोरियान नें कही जो श्रीगुसांई जी तौ परासोली है श्रीगिरधर जी घर है। तव राजा श्रीगिरधर जी के दर्शन कों आयै। तब बीरबल सों श्रीगिरधर जी ने कही जो कृष्णदास अधिकारी काका जी कौ श्रीनाथ जी के दर्शन नाहीं करन देत, सो काका जी कों खेद बहुत होत है, काका जी परासोली में जाय दर्शन करत है। तब बीरबल ने श्रीगिरधर जी सों कह्यौ जो अब हूँ जाय के कृष्णदास कों कहूँगो। यों कहि कें राजा बीरबल श्रीगिधर जी सों बिदा होय कें मथुरा आयै और श्रीगुसांई जी परासोली ते श्रीगोकुल आये। और बीरबल ने पाँच सौ मनुष्य भेजे और कह्यौ जो कृष्णदास को पकरि लावौ। सो वे मनुष्य श्रीगोवर्द्धन आय कें कृष्णदास कें पकरि लायै। सो वे बीरबल ने कृष्णदास को बंदीखाने में दीनों। तब श्रीगिरधर जी सों कहवाय पठाई जो कृष्णदास को बंदीखाने में दीनों।

तब श्रीगिरधर जी ने श्रीगुसांई जी सों कही जो कृष्णदास को बंदीखाने में दीने हैं। तब श्रीगुसांई जी ने कह्यौ जो हाय हाय श्रीआचार्य महाप्रभून के सेवकन को ऐसो कष्ट। तव श्रीगुसांई जी सों कह्यौ जो तुमने कह्यौ होयगो। तब श्रीगिरधर जी ने कह्यौ जो हमने तो बीरबल सों सहज ही कह्यौ हुतो जो काका जी कों दर्शन नाहीं करन देते सो काका जी कों वहुत खेद होत है। तब

श्रीगुसांईं जी ने कह्यौ जो भोजन जब करूँगो तब कृष्णदास आवेगो। तब श्रीगिरधर जी ततकाल घोड़ा मँगाय असवार होय के मथुरा कों आये। तब बीरबल सों कह्यौ जो काका जी भोजन नाहीं करत ताते कृष्णदास कों छोड़ देउ। तब राजा बीरबल नें कृष्णदास श्रीगिरधर जी के हवाले कर दियौ। तब श्रीगिरधर जी ततकाल संग ले श्रीगोकुल आये। तब श्रीगुसांईं जी ने सुनी जो गिरधर जी कृष्णदास को साथ लेके आवत है सो श्रीगुसांईं जी ठकुरानी घाट ऊपर पहुँचे। और वा ओर कृष्णदास आये सो श्रीगुसांईं जी कों दर्शन कियै, और दंडौत करी, और एक नयो पद करिकें गायौ। सो पद॥

राग केदारौ

श्री बिट्ठल जू के चरण की बलि॥
हमसे पतित उधारन कारन परम कृपाल आयौ आपन चलि॥
उज्जल अरुण दया रंग रंजित दश नख चंद्र विहरत मन निरदलि॥
सुभगकर सुखकर शोभन पावन भक्ति मुदित ललित कर अंजलि॥
अति सेमरदुलि सुगंध सुशीतल परत त्रिबिधि ताप डारत मल॥
भजि कृष्णदास वार एक सुधि करि तेरौ कहा करेगो रिपुकल॥

यह पद श्रीगुसांईं जी के आगे गायै। पाछें श्रीगुसांईं जी कृष्णदास कों अपने घर ले आयै। पाछें कृष्णदास सों श्रीगुसांईं जी ने कह्यो जो उठौ भोजन करौ। तब कृष्णदास ने कह्यो जो

महाराज आप भोजन करियै पाछें में भूठन लेउगो। तव श्री-गुसांई जी भोजन को बेठे। तव कृष्णदास नें एक पद और गायौ ॥ सो पद ॥

राग कान्हरौ

ताही कौं सिर नाईयै जौ श्रीवल्लभसुत पदरज रति होय ॥
कीजै कहा आन ऊचे पद तिनसों कहा सगाई मोय ॥
सार सार विचार मतौ करि श्रुत वचन[1] गोधन लियो निचोय ॥
तहाँ नवनीत प्रगट पुरुषोतम सहजई गोरस लियो बिलोय ॥
जाके मन में उभ्र भरम है श्रीविट्ठल श्रीगिरधर दोय ॥
ताकौ संग विषम विष हू ते भूलिहू चातुर कर है जिन कोय ॥
जिन प्रताप देखि अपने चख असन सार जोमिदेन तोहि ॥
कृष्णदास ते सुरते असुर भये असुरते सुर भये चरणन छोह[2] ॥ ४ ॥

यह पद सुनिकै श्रीगुसांई जी बहुत प्रसन्न भयै। पाछें श्री-गुसांई जी भोजन करिकै पधारे तब कृष्णदास सों कह्यौ जो अब जाउ भोजन करो। तब कृष्णदास भीतर गयै। तब श्रीगिर-धर जी नें श्रीगुसांई जी की भूठन की पातर कृष्णदास के आगे धरी। तब कृष्णदास नें महाप्रसाद लीनों। पाछें बीड़ा दोय दियै। रात्रि कों कृष्णदास वहाँई सोय रहै।

ता पाछें पिछली रात्रि घड़ी दोय रही तब श्रीगुसांई जी उठे। देहकृत करि कें स्नान कियौ। श्रीनवनीत प्रिया जी मंगला के

---

१ वच। २ छोहि।

दर्शन करि के बाहिर पधारे। तब श्रीनाथ जी द्वार पधारवे की तैयार किये। तब घोड़ा दोय मंगाये एक घोड़ा ऊपर श्रीगुसांईं असवार भये एक घोड़ा ऊपर कृष्णदास असवारी कीये और श्रीगोकुल ते चले। सों श्रीनाथ जी द्वार दिन पहर सवा एक चढ़े जाय पहुँचे। सो वहाँ श्रीनाथ जी को राजभोग आयौ हुतौ सो श्रीगुसांईं जी ततकाल स्नान करिकै ऊपर पधारे और श्रीगुसांईं जी विज्ञप्ति पत्र परासोली ते लिखते सो रामदास भीतरिया के हाथ पठावते। ताकों प्रति उत्तर श्रीनाथ जी पत्र में लिखि के श्रीगुसांईं जी को पठावते। सो श्रीगुसांईं जी जल में घोर पिजाते। सो पिछले दिन को पत्र श्रीनाथ जी के हस्ताक्षर को सो श्रीगुसांईं जी राखे हुते। सो पत्र साथ ही ले आये हुते।

पाछें श्रीनाथ जी कों राजभोग आयौ हुतौ। सो समय भयौ। तब श्रीगुसांईं जी भोग सरायवे को पधारे। तब श्रीगुसांईं जी को देख के श्रीनाथ जी बहुत प्रसन्न भये और पूछौ जो नीके हो। तब श्रीगुसांईं जी कहें जो तुमको देखे सोई दिन नीके हैं। पाछें परस्पर दोऊ जने मुसिक्याये। पाछें श्रीगुसाईं जी राजभोग सरायौ पाछें वह पत्र हुतो सो झारी में धर्यो। पाछें राजभोग के दर्शन खुले। तब कृष्णदास ने कीये। पाछे श्रीगुसांईं जी राज-भोग आरती करि अनोसरि करि नीचे पधारे। पाछे रसोई करि भोग समर्पित भोजन करि श्रीगुसांईं जी पोढ़े। सो उत्थापन ते घड़ी दोय पहले उठे। पाछें उत्थापन को समय भयौ तब स्नान करि ऊपर पधारे। सो संखनाद करवायौ। श्रीनाथ जी के उत्थापन

भयै पाछें सेन आरती उपरांत दर्शन करि कें कृष्णदास कों श्रीनाथ जी के सनिधान बुलायौ और कही जो कृष्णदास तुम अधिकार करौ और श्रीनाथ जी की सेवा नीकी भाँति सों करियौ। तब कृष्णदास ने श्रीनाथ जी के सन्निधान एक पद गायौ। सो पद ॥

राग कान्हरौ

परम कृपाल श्रीवल्लभनंदन, करत कृपा निज हाथ दे माथै ॥
जे जन शरण आये अनुसरही गहि सों पति श्रीगोवर्द्धन नाथै ॥
परम उदार चतुर चिंतामणि राखत भव धरा[1] ते साथै ॥
भजि कृष्णदास काज सब सरहीं जो जानें श्रीविट्ठल नाथैं ॥ २ ॥

यह पद गायौ और बीनती कीनी जो महाराज मेरौ अपराध क्षमा करौ। तब श्रीगुसाईं जी ने कह्यौ तुमरौ अपराध श्रीनाथ जी क्षमा करेंगे। पाछें कृष्णदास को विदा कीयौ। पाछें श्रीनाथ जी कों पोढाय कें श्रीगुसांई जी नीचे उतरे। श्रीगुसांई जी परम दयाल कृष्णदास को कृत कछू मन में न आनो। श्रीआचार्य जी के सेवक जानि अनुग्रह कीयौ। पाछें श्रीगुसांई जी दिन दोय रहे पाछं श्रीगोकुल पधारे। फिर कृष्णदास श्रीगुसांई जी की आज्ञा ते अधिकार करन लागे॥

प्रसंग ८

सों बहुत वरस लों भली भाँति सों अधिकार कीयौ। पाछें

---

१ धारा।

दर्शन करि कें बाहिर पधारे। तब श्रीनाथ जी द्वार पधारवे की तैयार किये। तब घोड़ा दोय मंगायै एक घोड़ा ऊपर श्रीगुसांईं असवार भयै एक घोड़ा ऊपर कृष्णदास असवारी कीयै और श्रीगोकुल ते चले। सों श्रीनाथ जी द्वार दिन पहर सवा एक चढ़े जाय पहुँचे। सो वहाँ श्रीनाथ जी को राजभोग आयो हुतौ सो श्रीगुसांईं जी ततकाल स्नान करिकै ऊपर पधारे और श्रीगुसांईं जी विज्ञप्ति पत्र परासोली ते लिखते सो रामदास भीतरिया के हाथ पठावते। ताकों प्रति उत्तर श्रीनाथ जी पत्र में लिखि के श्रीगुसांईं जी को पठावते। सो श्रीगुसांईं जी जल में घोर पिजाते। सो पिछले दिन को पत्र श्रीनाथ जी के हस्ताक्षर को सो श्रीगुसांईं जी राखे हुते। सो पत्र साथ ही ले आये हुते।

पाछें श्रीनाथ जी कों राजभोग आयौ हुतौ। सो समय भयौ। तब श्रीगुसांईं जी भोग सरायवे को पधारे। तब श्रीगुसांईं जी को देख के श्रीनाथ जी वहुत प्रसन्न भये और पूछौ जो नीके हो। तब श्रीगुसांईं जी कहें जो तुमको देखे सोई दिन नीकें हैं। पाछें परस्पर दोऊ जने मुसिक्याये। पाछें श्रीगुसाईं जी राजभोग सरायो पाछें वह पत्र हुतो सो झारी में धर्यो। पाछें राजभोग के दर्शन खुले। तब कृष्णदास ने कीये। पाछें श्रीगुसांईं जी राज-भोग आरती करि अनोसरि करि नीचे पधारे। पाछे रसोई करि भोग समर्पित भोजन करि श्रीगुसांईं जी पोढ़े। सो उत्थापन ते घड़ी दोय पहले उठे। पाछें उत्थापन को समय भयौ तब स्नान करि ऊपर पधारे। सो संखनाद करवायौ। श्रीनाथ जी के उत्थापन

भयै पाछें सेन आरती उपरांत दर्शन करि कें कृष्णदास कों श्रीनाथ जी के सनिधान बुलायौ और कहौ जो कृष्णदास तुम अधिकार करौ और श्रीनाथ जी की सेवा नीकी भाँति सों करियौ। तब कृष्णदास ने श्रीनाथ जी के सन्निधान एक पद गायौ। सो पद ॥

राग कान्हरौ

परम कृपाल श्रीवल्लभनंदन, करत कृपा निज हाथ दे माथै ॥
जे जन शरण आये अनुसरही गहि सों पति श्रीगोवर्द्धन नाथै ॥
परम उदार चतुर चिंतामणि राखत भव धरा[1] ते साथै ॥
भजि कृष्णदास काज सब सरहीं जो जानें श्रीविट्ठल नाथैं ॥ २ ॥

यह पद गायौ और बीनती कीनी जो महाराज मेरौ अपराध क्षमा करौ। तब श्रीगुसाइँ जी ने कह्यौ तुमरौ अपराध श्रीनाथ जी क्षमा करेंगे। पाछें कृष्णदास को बिदा कीयौ। पाछें श्रीनाथ जी कों पोढाय कें श्रीगुसांई जी नीचे उत्तरे। श्रीगुसांईं जी परम दयाल कृष्णदास को कृत कछू मन में न आनो। श्रीआचार्य जी के सेवक जानि अनुग्रह कीयौ। पाछें श्रीगुसांईं जी दिन दोय रहै पाछं श्रीगोकुल पधारे। फिर कृष्णदास श्रीगुसांईं जी की आज्ञा ते अधिकार करन लागे॥

प्रसंग ८

सों बहुत वरस लों भली भाँति सों अधिकार कीयौ। पाछें

---

१ धारा।

एक वैष्णव ने कृष्णदास सों कही जो मोकों एक कूआ बनवावनों है, और मोकों अपने देश कों जानों है। ताते द्रव्य तुमकों दे जात हों सो तुम बनवाय दीजों। तब कृष्णदास ने कही जो आछौ। तब वह वैष्णव तीन सौ रुपैया देकें अपने देश को गयौ। तब कृष्णदास ने उन रुपैयान में ते एक सौ रुपैया एक कुल्हरा में धरि कें आम के वृक्ष के नीचे गाड़ दिये। कह्यौ जो दो दोय से रुपैया लाग चुकेंगे तब इनको काढ़ेंगे! सो आछै मुहूर्त देखिकें रुद्रकुंडउपर कूआ खुदायौ। तब कितनेक दिन में वह कूआ मोहताई वन के तयार भयौ और दोय से रुपैया लगे। मठोठा वाकी रह्यौ।

तब उत्थापन के दर्शन करिकें कृष्णदास कूआ देखन को गये। सो हाथ में आसा हुतौ। सो आसा टेक के कूआ के ऊपर ठाडे भये। सो वह आसा सरक्यौ। तब कृष्णदास कूआ में जाय परे। तब तो मनुष्य दोय कूआ में उतरे। सो बहुतेरो ढूढ़े परि कृष्णदास कौ शरीर हू न पायौ। तब सब मनुष्य उहाँ ते फेरि आये। सो ता समय श्रीगुसांई जी श्रीनाथ जी को सेन भोग धरि कें मंजूप विराजे हुते। और रामदास श्रीगुसांई जी के पास वेठे हुते। ता समय काहू ने आय कें कही जो महाराज कृष्णदास ने कूआ वनवायौ हो। सो कृष्णदास देखन गये हुते, सो आसा टेकि कें कूआ के मौहडे ऊपर ठाडे हुते, सो आसा सरक्यौ सो कूआ में गिरि परे। और मनुष्य दोय कृष्णदास को ढूँढवे को उतरे, सौ वहुतेरौ ढूँढे परि शरीरहू न पायौ, कहा जानियै कहा भयौ। तब

रामदास जी कहैं जो "अधोगच्छंतितामसाः" तब श्रीगुसाईं जी कहै जो रामदास ऐसें न कहि।

अब जो कृष्णदास कूआ में गिरे सो शरीर न मिल्यौ ताको कारन कह्यो। सो ताको कारन यह जो कृष्णदास में कोई अलौकिक जीव हुतौ सोतो श्रीनाथ जी की सेवा में प्राप्त भयौ। और कृष्णदास ने या शरीर सों श्रीगुसाईं जी की अवीज्ञा करी है। जो यह शरीर अलौकिक जीव भुगतनों है। कूआ में गिरत मात्र कृष्णदास को शरीर लोकिक सद्य होय कें पूछरी की और एक रूख[1] है पीपर कौ तहाँ प्रेत होय कें रह्यौ भोग भुगतन कों। ताते कृष्णदास का शरीर कूआ में न मिल्यौ। श्रीगुसांई जी की अवीज्ञा ते कृष्णदास की यह गति भई जो प्रेत होय कें पूछरी की और पीपर के वृक्ष ऊपर वैठे रहत हैं।

प्रसंग ९

और एक समय श्रीनाथ जी की भैंस खोय गई हुती। सो गोपीनाथ ग्वाल और पाँच ग्वाल पूछरी की ओर ढूंढ़वे कों गये हुते। सो गोपीनाथ देखें तो पूछरी की ओर श्रीनाथ जी खेलत हैं और एक पीपर ऊपर कृष्णदास प्रेत ह्वै के बैठे हैं। तब कृष्णदास ने गोपीनाथ ग्वाल सों कही जो अरे भैया मेरी बिनती श्रीगुसाईं जी सों करियो और कहियौ जो कृष्णदास ने कह्यो है जो हों तुम्हारो अपराधी हो ताते मेरी यह अवस्था है। हूँ श्रीनाथ जी के

---

१ वृक्ष।

पास हूँ तौ मेरी गति होत नाहीं ताते मेरौ अपराध क्षमा करौ तो मेरी गति होय। और बाग में एक आम के वृक्ष के नीचे कूलहरा में एक सौ रुपैया गड़े हैं सो काढ़िकें वा कुआ को मठोठा बाकी रह्यौ है सो बनवाओ तो मेरी गति होय। सो गोपीनाथ ग्वाल नें यह बात श्रीगुसाईं जी के आगे कही जो महाराज कृष्णदास अधिकारी ने यह वीनती करी है। तब गुसाईं जी ने आम के नीचे ते रुपैया लाय कें मठोठा कूआ कौ बनवायौ। तव कृष्णदास की गति भई।

कृष्णदास कों प्रेत जोन में श्रीनाथ जी दर्शन देते ताकौ कारन यह जो श्रीनाथ जी के सन्निधान श्रीगुसाईं जी ने कृष्ण-दास सों कह्यौ जो कृष्णदास तुम अधिकार करौ और श्रीनाथ जी की सेवा नीकी भाँति सों करियों। तब कृष्णदास ने कह्यौ जो महाराज मेरौ अपराध क्षमा करौ। तब श्रीगुसाईं जी ने कह्यौ जो तुम्हारौ अपराध श्रीनाथ जी क्षमा करेंगे। श्रीनाथ जी की कृपा ते श्रीनाथ जी ने अपराध क्षमा कर्यौ। सो प्रेत जोन में दर्शन देते। परि स्पश न कीयो। जो स्पर्श होय तो उद्धार होय। सो उद्धार तो श्रीगुसाईं जी के हाथ है। कृष्णदास श्रीनाथ जी सों कहते जो महाराज तुम मोकों दर्शन देत हौं, मो सों बोलत हो, और में प्रेत हौं ताते मेरो उद्धार क्यों नाहीं करत। तब श्रीनाथ जी ने कह्यौ जो हूँ तोकों दर्शन देत हौं बोलत हौं सो तो श्रीगुसाईं जी के बचन के लिये। नाहीं तो प्रेत जोन में दर्शन नाहीं देतो और बोलतोहू नाहीं और उद्धार तो श्रीगुसाईं जी के हाथ है।

तेने श्रीगुसाईं जी को अपराध कीयौ है ताते श्रीगुसाईं जी उद्धार करेंगे तब होयगो।

ता पाछें श्रीगुसाईं जी आप परम कृपाल कृष्णदास के ऊपर दया आई जो अब तौ बहुत दिन भये हैं ताते अब उद्धार होय तौ भलौ। तब श्रीगुसाईं जी ध्रुवघाट ऊपर आय कें कृष्णदास को करम करवाय उद्धार कीयौ। तब कृष्णदास को उद्धार भयौ और लीला में प्राप्ति भयौ। और श्रीगुसाईं जी कहैं जो कृष्णदास ने तीन बात आछी करी। एक तौ अधिकार कीयौ सो ऐसो कियौ जो फेरि ऐसौ न करौ, दूसरे कीर्तन कियै सो अद्भुत कीयै, और तीसरे श्रीआचार्य जी महाप्रभून के सेवक होयकें सेवाहू ऐसी करी जो कोऊ न करेगौ। ताते वे कृष्णदास श्रीआचार्य जी महाप्रभून के ऐसे परम कृपापात्र भगवदीय हैं ताते इनकी वार्ता को पार नाहीं। ताते इनकी वार्ता कहाँ ताईं लिखियै॥ वैष्णव॥ ८१॥

इति श्रीआचार्य जी महाप्रभून के सेवक परम कृपापात्र चौरासी मुख्य वैष्णवन की वार्ता स०॥

अथ परमानंददास कनोजिया ब्राह्मण तिनकी वार्ता

—:०:—

प्रसंग १

सो परमानंददास जी परम भगवल्लीला मयन्याती[1] श्रीठाकुर जी के परम सखा है। सो जब श्रीआचार्य जी महाप्रभू आप भूतल पर प्रगट भये तब श्रीगोवर्द्धन नाथ जी की आज्ञा ते दैवी जीवन के उद्धारार्थ और तैसेंई श्रीआचार्य महाप्रभून कों श्रीठाकुर जी कों परकार सब प्रगट भयो और आप श्रीगोवर्द्धन पर्वत में प्रगट भये। सो गोपालदास जो वल्लभाख्यान में गाये हैं जो अनेक जीव कृपा करें "वादेशांतर परवेस"। ताते परमानंददास जी को जन्म कन्नोज में है कनोजिया ब्राह्मण के घर भयो। सो वे परमानंददास जी बहुत योग्य भये और कवि भये, भगवदकृपा के पात्र भये। कीर्तन बहुत आछो गावते ताते परमानंददास जी के संग समाज बहुत रहतो। आप स्वामी कहावते आप सेवक करते।

सो भगवद इच्छा ते एक समय परमानंददास जी कन्नौज ते आप प्रयाग[2] कों आये सो प्रयाग में उतरे। सो वहाँ कीर्तन बहुत आछें

१मध्य याती। २ प्राग ।

गावते ताते बहुत लोग कीर्तन सुनिवे कों आवते। और अडेलते कार्यार्थ लोग बहुत आवते सो इनके कीर्तन सुनिकें पार अडेल में जाय कहते जो परमानंददास जी इहाँ प्रयाग में आये हैं सो कीर्तन बहुत आछें गावत हैं। सो श्रीआचार्य जी महाप्रभून के सेवक जलघरिया कपूर छत्री, सो उनकें राग ऊपर बहुत आसक्ति, परि वे अवकाश नाहीं पावें जो परमानंददास जी के कीर्तन सुनिवे कूँ आवे। सेवा में अवकाश नाहीं जो प्राग जाय सकें।

सो एक दिन एक वैष्णव प्राग ते अडेल में आयो। सो वाने कह्यौ जो आज एकादशी है सो परमानंददास जी आज जागरन करेंगे। सो यह सुनि कें वा जलघरिया नें अपने मन में बिचारयो जो आज परमानंद जी के कीर्तन सुनिवे कें। चलनें। सो वे क्षत्री कपूर जलघरिया अपनी सेवा सों पहुँच कें रात्रि कें। अपने घर आये। सो घर आय कें अपने मन में विचार कीयो जो या वेर नाव तो मिलेगी नाहीं ताते कहा कर्तव्य। परि वे पेरवे में भले निपुन हुते सो मन में विचारी जो पैर कें पार जैयै। पाछें अपने घर ते चले सो श्रीयमुना जी के तीर उपर आय ठाडे भये। तब पर्दनी पहर कें वस्त्र सब आंथे सो बाँधि कें श्रीयमुना जी में पैर कें प्रयाग आये। पाछें वस्त्र पहर कें जा ठौर परमानंद स्वामी उतरे हुते तहाँ आयें, सो इनको कछु मिलाप तो परमानंद स्वामी सों हुतो नाहीं जहाँ और सब जने वैठे हुते तहाँ एऊ जाय वैठे। परि एउ श्रीआचार्य महाप्रभून के सेवक हे सो सब कोऊ जानत हुते। ताते सबन नें इनकें आदर कर कें वैठायो सो ये वैठे।

ता पाछें परमानंद स्वामी नें कीर्तन को प्रारम्भ कीयो। सो परमानंद स्वामी ने विरह के पद गाये। सो विरह के पद काहे को गायै सो प्रथम इनको स्वरूप कहि आये है। कही जो यह लीला मध्यायाती श्रीठाकुर जी के परमानंद स्वामी परम सखा हैं। सो उहाँ सो विछुरे और इहाँ तो अब हा श्रीठाकुर जी को दर्शन नाहीं भयौ और श्रीआचार्य जी महाप्रभून को दर्शन अब होयगो। श्रीआचार्य जी महाप्रभून के मार्ग को यह सिद्धान्त है जो भगवदीन[1] को संग होय तौ श्रीठाकुर जी कृपा करें। ताही के लियै श्रीआचार्य जी महाप्रभून ने परमानद स्वामी के ऊपर अनुग्रह करिकें अपने कृपापात्र भगवदीय के अन्तःकरणन में प्रेरना करिकें परमानंद स्वामी ये इहाँ पठाये। सो ये श्रीआचार्य जी महाप्रभून के सेवक कैसे हैं जो जिनको श्रीठाकुर जी एक क्षन हूँ नाहीं छोडत इनको संग ही रहत हैं। काहे तें सूरदास जी गाए है "भक्ति विरह करत करुणामय डोलत पाछें पाछें।" और जगन्नाथ जोसी की हु वार्ता में लिख्यौ है जो जब राजपूत नें तलवार चलाई तब श्रीठाकुर जी नें हाथ पकर्‍यो ताते श्रीआचार्य जी महाप्रभून के सेवकन के सदा श्रीठाकुर जी निकट ही रहत है। ताते परमानंद स्वामी ने विरह के पद गायै। सो पद।

राग बिहागरो

व्रज के विरही लोग विचारे।
बिन गोपाल ठगे से ठाड़े अति दुर्बल तन हारे ॥ १ ॥

---

[1] भगवदीयन।

मात जसोदा पंथ निहारत निरखत साँझ सकारे।

जो कोई कान्ह कान्ह कहि बोलत अंखियन बहुत[1] पनारे ॥२॥

यह मथुरा काजर की रेखा जे निकसे ते कारे।

परमानंद स्वामी विनु ऐसे जैसे चंदा बिनु तारे ॥ ३ ॥

और पद गायो सो पद ॥

राग विहागरो

सब गोकुल गोपाल उपासी।[2]

जो गाहक साधन के ऊधो सो सब बचन ईस पुर कासी ॥ १ ॥

जद्यपि हरि हम तजी अनाथ करि अब छाँड़त क्यों रति जासी।

अपनी सीतलता तहा छोड़त यद्यपि विधु राहु है ग्रासी ॥ २ ॥

किंह अपराध जोग लिखि पठयो प्रेम भजन ते करत उदासी।

परमानंद असी को विरहन मागैं मुक्ति गुनरासी ॥ ३ ॥

राग कान्हरो

कौन रसिक है इन बातन की।

नंद नंदन विन कासों कहिये सुनिरी सखी मेरे दुखिया मनको ॥ १ ॥

कहा वे यमुना पुलिन मनोहर कहा वह चंद सरद राति कौ।

कहा वे मंद सुगंध अमल[3] रस कहा वे पट् पद जलजातन कौ ॥ २ ॥

कहा वे सेज पौढ़िवो वन कौ फूल बिछौना मृदु पातन कौ।

कहा वे दरस परस परमानंद कोमल तन कोमल गात[4] कौ ॥ ३ ॥

---

१ बहत। २ नोट :—यह पद सूरसागर में सूरदास के नाम से आया है। ३ अमग्र। ४ गातन।

अथ परमानंददास कनोजिया ब्राह्मण तिनकी वार्ता

राग कान्

माई को मिलिवै नंद किसोरे।
एक वार को नैन दिखावें मेरे मन को
जागत जाम गनत नहीं खूटत क्यों पाऊँगी भोरे।
सुनरी सखी अब केसें जी जै सुन तमचर खग रोरे ॥ २ ॥
जो यह प्रीति सत्य अंतर गति जिन काहू बन हेरे।
परमानंद प्रभू आन मिलेंगे सखी सीस जिन ढोरे ॥ ३ ॥

इत्यादिक पद विरह के ऐसे परमानंद स्वामी ने सगरी राति गाये। पाछिली घड़ी चारि रात्र रही तब जो जो जागरन में आये हुते सो सब अपने घर कों गये। तैसेंई श्रीआचार्य जी महाप्रभून के सेवक एक जलघरिया कपूर हूँ परमानंद स्वामी सों 'जैसी कृष्ण स्मरण' कहि कें चले। और परमानंद स्वामी के कीर्तन सुनि कें बहुत प्रसन्न भये। और परमानंद स्वामी सों कह्यौ जो जैसे हमने सुने हुते ताते अधिक देखे। तुम परम भगवद अनुग्रह पूरण हो। ये जलघरिया क्षत्री कपूर महाप्रभून के परम भगवदीय है। ए जो चलि आये सो परमानंद स्वामी के ऊपर अनुग्रह करिवे कें आये है नातर भगवदीय काहे कें काहू के घर जाय।

और यह ऊपर कहि आये हैं जो श्रीआचार्य जी महाप्रभु के निकट ही रहत है। सो याको हेत यह जो निकट रहत हैं तो इन जलघरिया छत्री कपूर की गोद में बैठिकें श्रीनवनीत प्रिया जी नें

परमानंद स्वामी के पद सुने। जो श्रीआचार्य जी महाप्रभून के मार्ग की मर्यादा है जो श्रीआचार्य जी महाप्रभून के अनुग्रह बिना श्रीठाकुर जी कृपा न करे। सो उन जलघरिया क्षत्री कपूर ऊपर श्रीआचार्य जी महाप्रभून कौं परम अनुग्रह है। ताते श्री नवनीत प्रिया जी इनकी गोद में बेठि के परमानंद स्वामी के पद काहे कों सुनने पड़े। सो ताको हेत यह जो भगवदीय परमानंद स्वामी के ऊपर श्री नवनीत प्रिया जी अनुग्रह करिवे कों आप पधारे हैं तातें सुने। सो श्रीआचार्य जी महाप्रभून के सेवक जलघरिया क्षत्री परमानंद स्वामी सों जे[1]सी कृष्ण करि के चले। सो श्री-यमुना जी के तीर ऊपर आये। सो वहाँ आय के विचार कीयौ जो नाव की वाट देखै तो अवार होयगी और सेवा छूटेगी और श्रीआचार्य जी महाप्रभू भी खीजेंगे ताते जैसे पैर के आयै हुते तैसे ही चले। सो पैर के पार गये। सो पार आवत ही स्नान करिकें अपनी सेवा में तत्पर भये।

पाछें वहाँ प्राग में परमानंद स्वामी की रात्रि कें जागरन के श्रमित सों आंखि लगी, निद्रा आई। सो इतने में स्वप्न आयौ। सो स्वप्न में देखे जो जेसे रात्रि के जागरन में श्रीआचार्य जी महाप्रभून के सेवक जलघरिया क्षत्री बेठे हैं और उनकी गोद में श्रीनवनीत प्रिया जी के दर्शन भये। और स्वप्न में श्रीनवनीत प्रिया जी परमा-नंदस्वामी सों कहैं और परमानंद स्वामी की निद्रा खुली सो वा

१ जै (जय श्री कृष्ण) !

श्रीमुख को कोऊ सोंदर्य कोटि कंदर्पलावण्य परमानंद स्वामी ने देख्यौ। सो स्वप्न में तो हृदय में धरि लीयौ और मन में चटपटी लगी सो यह दर्शन फेरि कब होयगो। तब यह मन में बिचारयौ जो यह दर्शन उन श्रीआचार्य जी महाप्रभून के सेवक क्षत्री जलघरिया विना न होयगो, ताते होय तो उनके पास जैयै। जो उनसों मिले तब कार्य सिद्ध होय।

ऐसो परमानंद स्वामी ने अपने मन में विचार कीयो। सो ततकाल प्राग ते अडेल कुं चले। सो श्रीयमुना जी के तीर ऊपर आय ठाडे भये। सो प्रातःकाल को समय भयौ। सो प्रथम नाव चली तापर बैठि कें पार उतरे। तब आगें जाय कें देखें तो श्रीआचार्य जी महाप्रभू जी स्नान संध्या बंदन करत हैं। सो परमानंद स्वामी कों श्रीमहाप्रभू जी को कैसो दर्शन भयो साक्षात् पूरन पुरुपोत्तम श्रीकृष्णचन्द्र सो। श्रीगुसाईं जी वल्लभाष्टक में लिख्यो है "सोवस्तुतःकृष्ण एवच" ऐसों दर्शन भयो। श्रीआचार्य जी महाप्रभून के सेवक जलघरिया क्षत्री कपूर की गोद में श्रीठाकुर जी काहे कों वेठे यह कारण जिनके माथे ऐसे प्रभू विराजत है। पर परमानंद स्वामी के मन में यह जो क्षत्री कपूर मिले तो आछो। सो काहे ते जो जिनके माथे ऐसे प्रभू और जिनके दर्शन ते श्रीआचार्य जी महाप्रभून कों दर्शन भयौ। ता पाछें श्रीआचार्य जो महाप्रभून ने अपने श्रीमुख सों कह्यो जो परमानंद कछू भगवदीय जस वर्णन करि। तब परमानंद स्वामी नें विरह के पद गाये॥ सो पद॥

राग सारंग

कोन वेर भई चलेरी गोपाले।
हों ननसार गई हों[1] न्योते वार वार वोलत व्रज वोले[2] ॥१॥
तेरौ तन को रूप कहाँ गयौ भामिन अरु मुख कमल सुखाय रह्यौ।
सब सौभाग्य गयौ हरि के संग हृदय सों कमल विरह दह्यौ ॥२॥
को वोले को नेन उघारे को प्रति उत्तर देहि विकल मन।
जो सर्वस्व अक्रूर चुरायौ परमानंद स्वामी जीवन धन ॥३॥

राग सारंग

जिय की साधन जिय ही रही री।
वहुरि गोपाल देखि नहीं पाए विलपत कुञ्ज अहीरी ॥१॥
एक दिन सॉझ समीप यह मारग वेचन जात दहीरी।
प्रीत के लिये दान मिस मोहन मेरी वाँह गहीरी ॥२॥
विन देखें घड़ी जात कलप सम विरहा अनल दहीरी।
परमानंद स्वामी विन दर्शन नेन न नींद वहीरी ।३॥

राग संगम

वह वात कमल दल नैनन की।
वार वार सुधि आवत रजनी वहु दुरि देनी सेनी सेन की ॥१॥
वह लीला वह रास सरद को गोरज रजनी आवनि।
अरु वह ऊचो टेर मनोहर मिस करि मोह सुनावनि ॥२॥
वसन कुञ्ज में रास खिलायो विथा गमाई मन की।
परमानंद प्रभु सों क्यों जीवे जो पोन्यी मृदु वेन की ॥३॥

---

१ हौं। २ वाले।

या भाँति परमानंद स्वामी नें विरह के पद गाये। सो सुनिके परमानंद स्वामी सों कह्यौ जो कछु बाललीला वर्णन करि। तब परमानंद स्वामी नें कह्यौ जो महाराज में कछु समझत नाहीं। तब श्रीमहाप्रभून नें कह्यौ जो स्नान करि आउ हम तोकों समझावेंगे। तब परमानंद स्वामी नें श्रीमहाप्रभून सों पूछो जो महाराज आपको सेवक विरक्त कहा हैं। तब श्रीआचार्य जी महाप्रभून ने कह्यौ जो कछु टहल करत होयगो।

तब परमानंद स्वामी स्नान कों गये। सो तब परमानंद स्वामी आगे जायकें देखें तो यमुना जी की गागर लैकें वह कपूर क्षत्री आवत हैं। तब निकट आये सो साम्हैं मिले। सो उनको देखकें परमानंद स्वामी बहुत प्रसन्न भये और परमानंद नें उनको नमस्कार करी और कह्यौ, जो रात्रि को जागरन में आप पधारे हुते, सो 'श्रीठाकुर जी नें आपकी गोद में बैठि के मेरे कीर्तन सुने, सो आपकी कृपा ते श्रीठाकुर जी ने मोंसों कह्यौ, जो में श्रीआचार्य जी महाप्रभून के सेवक जलघरिया क्षत्री गोद में बेठि कें तेरे कीर्तन सुने हे। और आपकी कृपा ते मेरो भाग्य सिद्ध भयो है सो आवत ही तुम्हारी कृपा ते मोकों दर्शन भयो। इतनी बात सुनि के उन जलघरिया ने कह्यौ जो ऐसे मति कहो। जो श्रीआचार्य जी महाप्रभू सुनेंगे तो खीजेंगे सो सेवा छोड़ के क्यों गये ताते यह बात मति कहो। तब इतनी सुनिके परमानंद स्वामी कों आश्चर्य भयो और कह्यौ जो ए धन्य हैं जिन ऊपर श्रीठाकुर जी कों ऐसो अनुग्रह है और ये अपनों स्वरूप छिपावत हैं। पाछें परमानंद स्वामी तो

स्नान को गये और जलघरिया जल की गागर लेके मंदिर में गयौ।

पाछें परमानंद स्वामी श्रीयमुना जी में स्नान करिकें तत्काल आप श्रीआचार्य जी महाप्रभून के आगे आय ठाड़े भये। तब श्री-आचार्य जी महाप्रभून ने कह्यौ जो परमानंद स्वामी आगे आउ बेठौ[१]। तब परमानंद स्वामी आप आगे आय बेठे। तब श्रीआचार्य जी महाप्रभून ने परमानंद स्वामी को नाम सुनायौ। पाछें मंदिर में पधार कें श्रीनवनीत प्रिया जी के सन्निधान परमानंद स्वामी कों अनुक्रमणिका सुनाई। काहे ते जो प्रथम परमानंद स्वामी सों श्री-आचार्य महाप्रभून तें अपने श्रीमुख सों कह्यौ जो भगवद्यश वर्णन करि सो परमानंद स्वामी ने विरह को पद गायो। तब श्रीआचार्य महाप्रभून ने कह्यौ जो परमानंद स्वामी बाल लीला गाउ तब परमानंद स्वामी ने कह्यौ जो राज में कछु समझत नाहीं। सं परमानंद स्वामी ने काहेते कह्यौ जो ऊपर कहि आये हैं। जो श्रीठाकुर जी सो बिछुरे हो बिछुरे के दुख की तो स्फुर्ति र और संयोग जो सुख भयो ताको विसमरन भयो। जो काहे जो सब सब लीला विशिष्ट पूरण पुरुषोत्तम तो श्रीआचार्य महाप्रभून के घर पधारे हैं।

सो परमानंददास को श्रीआचार्य जी महाप्रभून नें अनु मणिका सुनाई तब सब लीला की स्फुर्ति भई। और अनुक्रमणि सुनाई ताको कारण कह्यो। जो श्रीआचार्य जी महाप्रभू को

१ बैठ।

है "श्रीभागवत पीयूष समुद्र मथन क्षमः"। सो श्रीभगवत कौ श्रीगुसाईं जी अमृत को समुद्र करिकें वर्णन किये हैं। सो अनुक्रमणिका द्वारा श्रीभागवत रूपा समुद्र श्रीआचार्य जी महाप्रभून नें परमानंद स्वामी के हृदय में धर्यौ। ताते वाणी तो सब अष्टकाव्य की समान है और ये दोऊ परमानंद स्वामी और सूरदास जी सागर भये। सो याते जो श्रीभागवत रूपी अमृत सागर को स्वरूप इनके हृदय में श्रीआचार्य जी महाप्रभून ने धर्यौ। सो काहे ते जो सब कोऊ सूरसागर और परमनंदसागर कहते। अब परमानंददास सों श्रीआचार्य जी महाप्रभू श्रीमुख सों कहें जो बाललीला वर्णन करि। सो परमानंद जी ने तत्काल बाललीला के पद करि कें श्रीनवनीत प्रिया जी के सन्निधान गाये॥ सो पद॥

राग सांभरी

माई री कमलनैन श्याम सुन्दर झूलत हैं पालना।
बाललीला गावत सब गोकुल की ललना॥ १॥
अरुण तरुण कमल नख मनि जस जोती।
कुंचित कच मकराकृत[1] लटकत गजमोती॥ २॥
अँगूठा गहि कमलपान मेलत मुख माही।
अपनों प्रतिबिम्ब देखि पुनि पुनि मुसिकाही॥ ३॥
जसुमति के पुन्य पुञ्ज वारं वार लाले।
परमानंद स्वामी गोपाल सुत सनेह पाले॥ ४॥

---

१ भवराकत।

यह पद सुनि कैं श्रीआचार्य जी महाप्रभू बहुत प्रसन्न भये। फेरि और पद गायौ ॥ सो पद ॥

राग बिलावल

जसौधा तेरे भाग्य की कही न जाय।
जो मूरति ब्रह्मादिक दुर्ल्लभ सो प्रघटे[1] हैं आय ॥ १ ॥
शिव नारद सनकादिक महामुनि मिलि वे करत उपाय।
ते नंदलाल धूर धूसर वपु रहत गोद लिपटाय ॥ २ ॥
रतन जडित पोढाय पालने वदन देखि मुसिकाई[2]।
झूलौ मेरे लाल वलिहारी परमानंद जस गाई[3] ॥ ३ ॥

राग बिलावल

"मणिमय आंगन नन्द के खेलत दोऊ भैया" सो ऐसें वाल लीला के पद परमानंददास ने गाये। सो सुनिकें श्रीआचार्य जी बहुत प्रसन्न भये।

सो परमानंददास जी श्रीआचार्य जी महाप्रभून के पास हैं[4]। सो परमानंददास कों अपने कीर्तन की सेवा दीनी। सो परमानंददास जी श्रीनवनीत प्रिया जी को नित्य नये पद करिकें भांति भांति के सुनावते। तब अनोसर होतो तब परमानंददास जी श्रीआचार्य जी महाप्रभून के आगें पदकीर्तन करे। श्रीआचार्य जी महाप्रभून नित्य कथा कहते सो परमानंददास जी नित्य सुनते। सो ताही प्रसंग के कीर्तन करिकें परमानंददास जी

१ प्रगटे। २ मुसिकाइ। ३ गाय। ४ है।

सुनावते। सो एक दिन परमानंददास जी नें श्रीठाकुर जी के चरणाविंद को महात्म सुन्यौ। सो चरणाविंद के महात्म को कीर्तन करि श्रीआचार्य जी महाप्रभून को सुनायौ। सुनि के श्रीआचार्य जी महाप्रभू बहुत प्रसन्न भये॥ सो पद॥

राग कान्हरौ

चरण कमल वंदौ जगदीश गोधन के संग धाए।
जे पद कमल धूरि लपटाने करि गहि गोपीन के उर लाए॥ १॥

यह पद सम्पूरण करि के परमानंददास जी नें गायौ और श्रीआचार्य जी महाप्रभून के स्वरूप को और प्रार्थना को पद गायौ॥ सो पद॥

राग कान्हरौ

"यह माँगों गोपी जन वल्लभ"॥

यह परमानंद स्वामी ने सम्पूर्ण करि कें गायौ। सो सुनि के श्रीआचार्य जी महाप्रभू अपने मन में जाने जो यह मिस कर के परमानंददास जी या पद कों सुनाय कें व्रज के दर्शन की प्रार्थना कीनी है ताते व्रज कों अवश्य चलनों॥

प्रसंग २

श्रीआचार्य जी महाप्रभू यह विचार करें जो व्रज कों पधारवे कों उद्यम कीयो। सो दामोदरदास हरिसानी कृष्ण मेघन परमानंददास जी और यादवदास हलवाई तथा रसोई की सामग्री

संग लेकें चले और सब वैष्णव संग ले आप श्रीआचार्य जी महाप्रभु ब्रज को पधारे।

सो ब्रज को आवत परमानंददास को गाम कन्नौज आयो तब परमानंददास ने श्रीआचार्य जी महाप्रभून सें वीनती कीनी जो महाराज मेरे घर पधारियै आपके अनुग्रह ते मेरौ भाग्य सिधि भयौ है अब मेरे घर हू पावन करियै। तब श्रीआचार्य जी महाप्रभू आप अंतर्यामी कृपानिधान भक्त मनोरथ पूरक आप कृपा करि कें पधारें। सो परमानंददास के घर आछी भाँति सों श्रीआचार्य जी महाप्रभून नें रसोई करि श्रीठाकुर जी कें भोग समर्प्यो। पाछें भोग सराय कें आप प्रसाद लीयैा पाछें आप गादी तकियान के ऊपर विराजे। तब परमानंददास सो कह्यो जो कछु भगवद्यश गावो। तब परमानंददास ने मन में विचारी जो या समय श्रीआचार्य जी महाप्रभून को मन तो ब्रज में श्रीगोवर्द्धन नाथ जी के पास है ताते विरह के पद गाऊँ। सो विरह को पद ऐसो गायौ जामें छिन हूँ कलप समान जाय॥ सो पद॥

राग सोरठ

हरि तेरी लीला की सुधि आवै॥
कमल नैन मन मोहनी मूरत मन मन चित्र बनावै॥१॥
एक बार जाय मिलत माया करि सो कैसे बिसरावै।
मुख मुसिक्यान बंक अवलोकन चाल मनोहर भावै॥२॥
कबहुक निबड निमर आलिंगन, कबहुक पिक सुर गावै।
कबहुक संभ्रम क्वासि क्वासि कहि संगहीन उठि धावै॥३॥

कबहुँक नैन मूदि अन्तर गति मणि माला पहरावे।
परमानंद श्याम ध्यान करि ऐसे विरह गवावै ॥४॥

यह पद परमानंददास ने गायौ। सो सुनि कें श्रीआचार्य जी महाप्रभून को मूर्छा आई। सो जा लीला को पद परमानंददास नें गायौ ता लीला विषै श्रीआचार्य जी महाप्रभू मग्न भये। सो देहानुसंधान न रह्यौ। सो तीन दिन लों श्रीआचार्य जी महाप्रभून कों मूर्छा रही। सो सबरे सेवक दामोदरदास हरसानी प्रभृति श्रीआचार्य जी महाप्रभून के दर्शन करे सो वेसे ही वेठे रहै। चतुर्थ दिन के प्रातःकाल श्रीआचार्य जी महाप्रभू सावधान भयै तब सब वैष्णव प्रसन्न भयै। तब परमानंददास जी मन में डरपै जो फेरि ऐसो पद न गाऊँ। फेरि सूधे पद गाए। सो पद ॥

राग विभाग

माई री हों आनंद गुन गाऊँ।
गोकुल की चिन्तामणि माधौ जो माँगो सो पाऊँ ॥ १ ॥
अब[1] ते कमलनैन व्रज आयै सकल संपदा बाढ़ी।
नंदराय के द्वारे देखौ अष्ट महासिद्धि ठाढ़ी ॥ २ ॥
फूले फले सदा वृन्दावन कामधेनु दुहि दीजै।
मारग मेघ इंद्र वरषा में कृष्ण कृपा सुख लीजै ॥ ३ ॥
कहत जसोधा सखियन आगें हरि उत्तकर्ष जनावै।
परमानंददास को ठाकुर मुरली मनोहर भावै ॥ ४ ॥

---

१ जब।

और हू पद गायौ। सो पद।

राग गौरी। "विमल जस वृन्दावन के चंद्र को"

यह पद सम्पूरण करिके गायौ। फेरि और गायौ।

राग सारंग। "चलरी नंदगांव जाय बसियै"

यह पद सम्पूर्ण करिकें गायौ। सो पद में यह कह्यौ जो चलरी नंदगांव जाय बसियै।

सो श्रीमहाप्रभू जी सुनि के ब्रज कों पधारे। सो श्रीगोकुल आवन ही श्रीआचार्य जी महाप्रभू श्रीयमुना जी के तीर ऊपर छोंकर के नीचे बैठक में तहाँ श्रीआचार्य जी महाप्रभू बिराजे। और एक बैठक श्रीद्वारिका नाथ जी के मंदिर के पास है सो भीतर की बैठक है। सो रात्रि के विश्राम तथा रसोई की ठौर है। उहां श्रीआचार्य जी महाप्रभून को घर हतो। जब आ... श्रीगोकुल पधारते तब उहांई उतरते। सो यह भीतर की बैठ... है। पाछें सब वैष्णवन ने श्रीयमुना जी स्नान कीयो और पर... नंददास जी हू श्रीयमुना जी को जस वर्णन कीयो॥ सो पद

राग रामकली

श्रीयमुना जी यह प्रसाद हौं पाऊँ।
तिहारे निकट रहौं निसवासर रामकृष्ण गुन गाऊँ॥ १ ॥
मंजन विमल पावन जल पिवा तुलसी चढ़ाऊँ।
तिहारी कृपा भान की तनया हरि पद प्रीत बढ़ाऊँ॥ २ ॥
बिनती करौं यही वर मांगौं अधम संग बिसराऊँ।
परमानंददास [illegible] मदन गोपाल लड़ाऊँ॥ ३ ॥

राग रामकली। "श्रीयमुना जी दीन जान मोहि दीजै[1]"

सो ऐसे पद सम्पूरण करिकें परमानंददास जी नें बहुत गाये। श्रीआचार्य जी आगें तीर बिषें गाये।

ता उपरांत श्रीमहाप्रभू जी नें परमानंददास कें बाललीला विशिष्ट श्रीगोकुल के दर्शन करवाये। सो परमानंददास को ऐसा दर्शन भयो सो सब व्रज भक्त श्रीयमुना जल की गागरि भरि लें जाते हैं और श्रीठाकुर जी मार्ग में खेलते हैं और व्रज भक्तिन कें जल की गागरि उठाय देते हैं और उनकी कचु[2]तोरे हैं या भाँति सो दर्शन भये। सो तेसोंई पद श्रीआचार्य जी महाप्रभून के आगें गायो॥ सो पद॥

राग बिलावल

जमुना जल घर भरि चली चंद्रावलि नारी।
मारग खेलत मिलि घनश्याम मुरारी॥ १॥
नैनन सों नैना मिले मन रह्यौ है लुभाई।
मोहन मूरत जिय वसी पग धरो न जाई॥ २॥
तब की प्रीति प्रगट भई यह पहली भेट।
परमानंद ऐसी मिली जेसी गुड में चेंट॥ ३॥

राग सारंग

लाल नेक टेको मेरी वैयां।
ओघट घाट चल्यौ नहीं जाई रपटत हों कालिन्दी महियां॥ १॥

---

१ लीजै। २ कंचुकी।

यह पद संपूरण करकें ऐसे पद गाये। ता पाछें परमानंद-नें बाल लीला के पद बहुत गाये और श्रीगोकुल कों स्वरूप जामें आवै ऐसो पद गायौ ॥ सो पद ॥

राग कान्हरौ

गावत गोपी मधु व्रज बानी ।
जाके भुवन बसत त्रिभुवनपति राजा नंद यसोधा[1]रानी ॥ १ ॥
गावत वेद भारती गावत गावत नारदादि मुनि ज्ञानी ।
गावत गुन गंधर्व काल शिव गोकुलनाथ महातम जानी ॥ २ ॥
गावत चतुरानन जदुनायक गावत शेष सहस्र मुखरास ।
मन क्रम बचन प्रीत यह अम्बुज अब गावत परमानंददास ॥ ३ ॥

यह पद परमानन्ददास नें गायौ। पाछें और पद गायौ सो पद ॥

राग कान्हरौ

जसुमति ग्रह आवत गोपी जन ॥
बासर ताप निवारन कारन बारंबार कमल मुख निरखन ॥ १ ॥
चाहत पकरि देहरी उलंघन किलक किलक हुलसत मन हीं मन ।
लोंन उतार राँऊ करि वारी फेर वारत[2] तन मन धन ॥ २ ॥
लेन उठाय चापत हीयौ भरि प्रेम विवस[3] लागे दृग ढरकन ।
सनों लै पलना पोढावन को अककसाय[4] पोढे सुन्दर घन ॥ ३ ॥
देत असीस सकल गोपी जन चिरजीवो लाग गज सुन ।
परमानंददास को ठाकुर भक्त वत्सल भक्त मनरंजन ॥ ४ ॥

---

१ यशोदा । २ हारत । ३ बरबस । ४ अकस्मात ।

राग हमीर। "चितै चितै चित वार्‌यौ री माई"

यह पद संपूरण करि कें गायै। सो ऐसे पद परमानंददास ने बहुत गायै।

ता पाछें श्रीगोकुलनाथ जी के दर्शन करि कें परमानंददास श्रीगोकुल ऊपर बहुत आसक्ति भये। सब ऐसे पद गायै जा में श्रीआचार्य जी महाप्रभून की प्रार्थना कीनी मोकों श्रीगोकुल में आय कें चरणारविन्द के नीचे राखो। नितप्रति प्रभून के दर्शन करौ[1] सर्व लीला विशिष्ट पूरन पुरुषोत्तम हैं। और यह पद गायो॥ सो पद॥

राग कान्हरौ

यह मांगो जसोदानंदन॥
चरण कमल मन मन मधुकर या छवि नेनन पाऊँ दर्शन॥ १॥
चरण कमल की सेवा दोऊ तन राजत विजैलता घन नंदन।
वृषभानु नंदिनी मेरे उर वसु[2] प्रान जीवन धन॥ २॥
बृज वसिवो जमुना अचिवो श्रीवल्लभ को दास यही पन[3]।
महाप्रसाद पाऊँ हरि गुन गाऊँ परमानंददास जीवन धन॥ ३॥

राग कान्हरौ

"जब लगि जमुना गाय गोवर्द्धन।
तब लग गोकुल गाँव गुसाईं"॥

यह पद सम्पूर्ण करिकें प्रार्थना के पद गाये। तब कितनेक दिन श्रीआचार्य जी महाप्रभू गोकुल में विराजे। ता पाछें

---

१ करूँ। २ सर्वसु। ३ मन।

सब वैष्णवन कौं संग लेकें श्रीगोवर्द्धन नाथ जी के दर्शन को पधारे ॥

प्रसंग ३

अब श्री आचार्य जी महाप्रभू स्नान करि कें पर्वत ऊपर पधारे । सो आवत ही परमानंददास नें श्रीनाथ जी कौं श्रीमुख देखि कें वहां के वहां रहे। तब श्रीमहाप्रभू जी नें श्रीमुख सों कह्यौ जो परमानंददास कछू भगवत लीला गावो। तब परमानंददास अपने मन में बिचारे जो कहा गाऊँ। तब ऐसे विचारौ जो जामें प्रथम अवतार लीला, पाछें चरणारविंद की बंदना, पाछें भगवद्रूप को स्वरूप, ता पाछें बाल क्रीडा, ता पाछें श्रीठाकुर जी को महात्म। ऐसौ पद परमानंददास नें गायो ॥ सो पद ॥

राग कान्हरौ

मौहन नंदराय कुमार।
प्रगट ब्रह्म निकुंज नायक भक्त हित अवतार ॥१॥
प्रथम चरण सरोज वन्दो श्याम घन गोपाल।
मकर कुंडल गंड मंडित चारु नेन विसाल ॥२॥
बलिराम सहित विनोद लीला से कर हेत।
दास परमानंद प्रभू हरि निगम बोलत नेत ॥३॥

और असक्ति को पद गायो।

राग पूरवी

मेरौ माई माधो सों मन लाग्यौ।
मेरौ नेन और कमल नैन कौ इकठौरौ करि मान्यौ[1] ॥ १ ॥

---

१ सान्यो।

लोक वेद की कानि तजी में न्योती अपने आन्यौ।
एक गोविंद चरण के कारण वैर सबन सो ठान्यौ ॥ २ ॥
अबको[1] भिन्न होय मेरी सजनी दूध मिल्यौ जैसे पान्यौ।
परमानंद मिली गिरधर सों है पहली पहचान्यौ ॥ ३ ॥

ऐसे पद परमानंददास ने गाये ता पाछें श्रीआचार्य जी महाप्रभू सेन[2] आरती करि श्रीनाथ जी कौं पोढ़ाये। तब अनोसर करि आप नीचे पधारे। तब परमानंददास हू नीचे आय बैठे। तब रामदास भीतरिया नें परमानंददास को महाप्रसाद दूध पठायो। सो दूध परमानंददास जी लेवे लागे तब तातो लाग्यौ तब परमानंददास जी नें सीरो करि लीयौ ता पाछें रामदास नें पूछ्यौ जो तुमको महाप्रसाद दूध पठायो हो सो आयो। तब परमानंददास ने कही जो हाँ आयो परि दूध बहुत तातो हुतो सो ऐसो दूध श्रीठाकुर जी कैसें आरोगत हें ताते दूध तो सुहावतो भलो। तब रामदास ने कह्यौ जो बहुत आछो आप भगवदीय हो जैसे आज्ञा करोगे तेसे करेंगे। तब सकारें सब सेवक ध्यान करि कें श्रीगोवर्द्धन नाथ जी की सेवा में तत्पर भये। तब श्रीआचार्य जो महाप्रभू स्नान करि कें श्रीगिरिराज ऊपर पधारे तब श्रीगोवर्द्धन नाथ जी कों जगाये। तब वा समय परमानंददास जी जाय कें श्रीठाकुर जी के जगायवे को पद गायो। सो पद।

---

१ क्यों। २ सैन।

राग विभास

जागो गोपाल लाल मुख देखों तेरौ।
पाछें ग्रह काज करों नित्य नेम मेरौ ॥ १ ॥
विगसत निसा अरुण दिसा उदित भयौ भानु।
गुंजत अंग फंकज वन जागियै भगवान ॥ २ ॥
द्वारे ठाड़े बंदीजन करत हैं पुकार।
वंस प्रसंग गावत हरिलीला सार ॥ ३ ॥
परमानंद स्वामी दयाल जगत मंगल रूप।
वेद पुराण पठत महिमा लीला अनूप ॥ ४ ॥
यह पद परमानंद ने गायौ। फिर कलेऊ को पद गायौ।
सो पद।

राग रामकली

पिछवारे ह्वै ग्वालन टेर सुनायौ।
कमल नेन प्यारो करत कलेऊ कोटन सुख लों आयौ ॥१॥
अरी मैया गैया एक वन ब्याय रही हैं बछरा उहाँहीं बसायौ।
मुरली लई न लकुटिया न लीनी अरबराय कोउ सखा न बुलायौ ॥२॥
चक्रत भई नंद जू की रानी सत्य आय किधों अपनों पायौ।
फूलो न अंग समात रसवर त्रिभुवन पति सिर क्षत्र जो छायौ ॥३॥
मिलि वेठे संकेत सघन वन विविध भाँति कीयौ मन भायौ।
परमानंद सयानी ग्वालनि उलटि अंग गिरधर पिय प्यायौ ॥ ४ ॥

ऐसे पद परमानंददास ने गायौ। ता पाछें श्रीगोवर्द्धन नाथ जी के मंगला के दर्शन खुले तब परमानंददास नें श्रीगोवर्द्धन

नाथ जी सों पूछौ जो आप तातौ दूध क्यों आरोगत हैा। तब श्रीनाथ जी ने कह्यौ जो ये हमको समर्पत है सौ आरोगत है। ता पाछें परमानंददास जी नित्य कीर्तन करिकें सुनावते।

तब ता समय एक राजा दर्शन कों आयो सो श्रीगोवर्द्धन नाथ जी के दर्शन करे तब फेरि आयकें रानी सों कही जो श्रीगोवर्द्धन नाथ जी ठाकुर वहुत सुंदर हैं ताते तू जायकें दर्शन करि आउ। तब रानी नें कही जो जैसे हमारी रीति है सो होय तो दर्शन करें। तब राजा नें कही जो श्रीगोवर्द्धन नाथ जी के दर्शन में काहे को परदा है तब रानी ने मानी नहीं। तब राजा ने श्रीआचार्य जी महा प्रभून सों वीनती कीनी जो महाराज में तो रानी सों वहुत कहत हो परि वह आवत नाहीं ताते आप कृपाकरिकें दर्शन करवावौ तौ वह करै। तब श्रीआचार्य जी महाप्रभून ने कही जो यहाँ ले आवो जो प्रथम वाकों एकांत में दर्शन करवावेंगे ता पाछें और लोग दर्शन करेंगे। तब राजा अपनी रानी कों लिवाय कें श्रीगोवर्द्धन नाथ जी के दर्शन करवाये सो सब लोग सरकि गये। तब रानी दर्शन करिवे लागी तब इतने में श्रीगोवर्द्धन नाथ जी ने सिंह पैार के किवाड़ खोल दिये। सो सब भीर दैार के रानी के ऊपरि परी सो रानी के सब वस्त्र निकस परे और वहुत लज्जित भई। तब राजा ने रानी सों कही जो मेने तोंसों पहिले ही कह्यौ हुतो जो श्रीठाकुर जी के दर्शन में काहे कों परदा है। ये व्रज के ठाकुर हैं इननें काहू को परदा राख्यौ नाहीं। तब वा समय परमानंददास जी ने पद गायौ।

राग देवगंधार

"कौनि यह खेलवे की वानि ॥

मदन गोपाल लाल काहू की राखत नाहि न कानि" ॥ १ ॥

यह एक तुक परमानंददास जी नें गाई हुती। तब श्रीआचार्य जी महाप्रभून नें कह्यौ जो परमानंददास एसे कहौ जो 'भली यह खेलवे की वानि'। तब परमानंददास जी नें एसौ ही पद गायौ। सो पद ॥

राग देवगंधार

भली यह खेलवे की वानि ॥

मदन गोपाल लाल काहू की नाहिन राखत कानि ॥ १ ॥

अपने हाथ ले देत है चनवर दूध दही घृत सानि ॥

जो वरजो तो आँख दिखावे पर धन कों दिन दान ॥ २ ॥

सुनि री जसोधा सुत के करतब पहले माँट मथानि ॥

फोरि डारि दधि डारि आजर[1] में कोन सहै नित हानि ॥ ३ ॥

ठाडी देखत नंद जू की रानी मूंदि कमल मुख हानि ॥

परमानंददास जानत हैं बोलि बूझि धों आनि ॥ ४ ॥

यह पद परमानंददास ने गायौ। ता पाछें कितेक पद गाये। जो जो लीला श्रीठाकुर जी ने करी सो ता ता लीला के पद परमानंददास नें गायौ।

सो एक दिन भगवदीय रामदास जी कुंभनदास जी सब वैष्णव मिलि कें परमानंद जी जहाँ रहत हुते तहाँ आये। सो

---

१ अजर।

भगवदीय आये जानि कें परमानंददास जी बहुत प्रसन्न भये जो आज मेरे घर भगवदीय आये हैं सो मेरो वडो भाग्य है और आज मेरी भाग्य सिद्धि भयो है। सो काहे ते श्रीठाकुर जी भगवदीय के हृदय में सदा सर्वदा विराजत हैं। ताते भगवदीय की कृपा होय तो श्रीठाकुर जी अनुग्रह करें। जो ये सब भगवदीय मेरे घर पधारे हैं सो प्रथम भगवदीय की न्यौछावरि करो। जब यह विचार कें परमानंददास ने ऐसे ही पद कह्यो। सो पद।

राग हमीर

आये मेरे नंद नंदन के प्यारे॥
माला तिलक मनोहर बानो त्रिभुवन के उजियारे॥ १॥
प्रेम सहत वसत मन मोहन नेकहू टरत न टारे॥
हृदय कमल के मध्य विराजत श्रीव्रजराजदुलारे॥ २॥
कहा जानों कौन पुण्य प्रगट भयो मेरे घर जो पधारे॥
परमानंद प्रभु करी न्योछावर वारंवार हों वारे॥ ३॥

यह पद भगवदीयन की भेट करि अपने आये भगवदीयन कों विदा किये। ता पाछें ऐसी रीति सों परमानंददास ने श्रीनाथ जी की भली भाँति सो सेवा कीनी। सो वे परमानंददास जी श्रीआचार्य जी महाप्रभून के ऐसे कृपापात्र भगवदीय हैं सो इनकी वार्ता कहाँ ताईं लिखिये॥ प्रसंग॥ ३॥ वैष्णव॥ ६६॥

अथ कुम्भनदास गोरवा तिनकी वार्ता

—:०:—

प्रसंग १

सो वे कुंभनदास जी श्रीगोवर्द्धन पर्वत के पास जमुनावतौ गाँव है तामें रहते। सो जमुनावतौ नाम वा गाँव को काहे ते है जो जमुना जी को प्रवाह सारस्वत कल्प में याके निकट हुतौ ताते जमुनावतौ नाम वा गाँव को है। तामें कुंभनदास जी रहते और परासोली चंदसरोवर के ऊपर उन कुंभनदास जी की धरती हुती सो वहाँ खेती करते। सो कुंभनदास जी श्रीगोवर्द्धन नाथ जी के परम सखा हुते और कृपापात्र हुते। सो अब ही श्री गोवर्द्धन नाथ जी प्रगट होय के श्रीमहाप्रभून जी को बुलावेंगे तब ये भगवदीय प्रसिद्ध होयंगे।

सो एक समय श्रीआचार्य जी महाप्रभू पृथिवी परिक्रमा करत झारखंड में पधारे। सो झारखंड में श्रीगोवर्द्धन नाथ जी ने आज्ञा दीनी जो हम गोवर्द्धन में तीन दमन हैं नागदमन, इन्द्रदमन देवदमन। तिनके मध्य में हम देवदमन हैं सौ मेरो नाम है। ताते तुम आयके हमकों पधरावौ और हमारी सेवा को पुकार प्रगट करौ। तब श्रीआचार्य जी महाप्रभून ने पृथ्वी परिक्रमा उहाँ ही राखि कें वेग पधारे। तब दामोदरदास हरसानी, कृष्णदास मेघन, गोविंद दुवे, जगन्नाथ जोसी, रामदास ये पाँच वैष्णव संग हुते। सो श्रीआचार्य जी महाप्रभू श्रीगोवर्द्धन की तरहटी आय

कें सद्दू पाँडे के चोतरा ऊपर बिराजे। सो आगें श्रीगोवर्द्धन नाथ जी के प्रागट्य में यह सद्दू पांडे भवानी नरो श्रीआचार्य जी महाप्रभून के सेवक भये हुते तिनकी श्रीआचार्य जी महाप्रभून नें श्रीगोवर्द्धन नाथ जी की सेवा सोंपी। और व्रजवासी व्रज में श्रीआचार्य जी महाप्रभून के सेवक बहुत भये। और कुंभनदास जी श्रीआचार्य जी महाप्रभून की शरण आये।

सो श्रीआचार्य जी महाप्रभून श्रीगोवर्द्धन नाथ जी को एक छोटो सो मंदिर सिद्धि करवायौ। तामें श्रीनाथ जी कों पधराये और रामदास चोहान कों सेवा की आज्ञा दीनी। और सब व्रजवासी लोग दूध दही माखन लावते सो श्रीगोवर्द्धन नाथ जी आरौगत हुते। और रामदास कों जो भगवदीच्छा तें जो आप प्राप्त होय सो भोग धरते और आप प्रसाद लेते। और जो व्रजवासी लोग श्रीआचार्य जी महाप्रभून के सेवक भये हुते तिनकों श्रीआचार्य जो महाप्रभून ने आज्ञा दीनी जो यह मेरो सर्वस्व है सो तुम सब बातन सों यत्न राखियौ और सेवा में तत्पर रहियौ। और कुंभनदास कों और सब सेवकन कों श्रीआचार्य जी महाप्रभून ने आज्ञा दीनी जो तुम देवदमन के दर्शन कियें विना महाप्रसाद मति लीजियौ। तब या भाँति सों आज्ञा करि कें श्रीआचार्य जी महाप्रभून नें पृथ्वी परिक्रमा झारखंड में राखी हुती। अब कुंभनदास जी नित्य श्रीआचार्य जी महाप्रभून की कृपा तो श्रीगोवर्द्धन नाथ के दर्शन कों आवते। सो कुंभनदास कीर्तन बहुत नीके गावते। जो श्रीआचार्य जी महाप्रभू नें

के कुंभनदास ने गायौ। पाछें नित्य ऐसे पद कुंभनदास जी देव दमन को सुनावते।

तब कुंभनदास जी के पद सब जगत में प्रसिद्ध भये सो सब लोग इनके पद गावते। तब इनको पद काहू कलामत ने सीख्यौ सो फतेपुर सीकरी में देशाधिपति के आगें कुंभनदास जी को पद कीयो भयौ पद वा कलामत ने गायौ। सो सुनि के देशाधिपति को चित्त वा पद में गड़ गयौ और माथौ धुनौ जो ऐसेहू महापुरुष ह्वै गये हैं जिनकों ऐसे दर्शन परमेश्वर के होत हैं। तब कलामत ने कह्यौ जो अजी साहब अब हूँ हैं। सो सुनि कें देशाधिपति बहुत प्रसन्न भयौ और वा कलामत से कह्यौ जो वे कहाँ हैं। तब वा कलामत ने कही जो श्रीगोवर्द्धन के पास जमुनावतौ गाँव है तहाँ वे रहत हैं। तब देशाधिपति ने कही जो यहाँ बुलावो हम उन्सों मिलेंगे। तब देशाधिपति ने मनुष्य और असवारी कुम्भनदास के बुलायवे कों भेजे। तब कुम्भनदास जी तो घर हुते परासोली में बेठे हुते सो मनुष्यन ने उहाँ बताय दीये। तब कुम्भनदास जी घर तो हुते नाहीं पातसाह ने याद कीये हो।[1]

तब कुम्भनदास ने कही जो भैय्या मैं कछु देशाधिपति को चाकर तो नाहीं मेरो देशाधिपति सो कहा काम है। तब देशाधिपति के मनुष्यन ने कही जो बाबा हम तो काम कछू समझत नाहीं परि हमको देशाधिपति को हुक्म है जो कुम्भनदास कों ले आवो, ताते यह पालकी है यह घोड़ा है जापर चाहो ता पर बेठि कें

१ तब कुम्भनदास सों कह्यो जो तुमकों पातसाह नें याद कीयो है।

चलियै, हम तो आये हैं सो आपको ले जायेंगे। तब कुम्भनदास नें मन में विचार कीयैा जो विन जाये तैा निर्वाह न होयगो सो कुम्भनदास जी तत्काल उहाँ ते पनहिं पहिर के चले।

तब कुम्भनदास जी कों लेवे को आये हुते तिनने कहीं जो बाबा सवारी में बेठिये। तब कुम्भनदास ने कह्यौ जो भैय्या में तैा कबहूँ बेठ्यो नाहीं। पाछें ऐसे ही चले। सो फतह[1] पुर सीकरी आय पहुँचे। सो देशाधिपति के डेरा हुते तहाँ गये। तब मनुष्यन नें देशाधिपति सों कह्यौ जो कुम्भनदास जी आये हैं। तब देशाधिपति ने कुम्भनदास सो कहो जो कुम्भनदास जी आवो बेठो। सो आय बेठे। सो वह स्थल केसो है जामें जडाव की रावटी, तामें मोतीन की झालरी लगी है ऐसो स्थल है, तामें बेठे। तब मन में बहुत दुःख लाग्यो और कहो जो यासो तैा हमारे ब्रज के हींसन के रूख आछे हैं सो जिनमें श्रीगोवर्द्धन नाथ जी खेलत हैं। तब इतने में देशाधिपति बोल्यैा जो कुम्भनदास जी तुमने विसनपद बहुत कीये हैं सो मेने तुमको बुलायो है ताते तुम कछू विसनपद गावो। तब कुम्भनदास जी तैा मन में कुढे हुते जो विचारें जो कहा गाऊँ मेरी वाणी के भक्ता तैा श्रीगोवर्द्धनधर हैं और कछू गाये बिना मेरैा काम चलेगो नाहीं ताते ऐसो गाऊँ जो कबहूँ मेरो नाम न लेय। काहे ते जो याके संग ते मेरे प्रभू छूटे हैं ताते कठैार बचन कहूँ जो बुरो मानेगों तो कहा करेगो। तब यह मन में आई " जो जाको मन मोहन संग करे ? एको के सब से नहीं

---

१ फ़ते।

के कुंभनदास ने गायौ। पाछें नित्य ऐसे पद कुंभनदास जी देव दमन को सुनावते।

तब कुंभनदास जी के पद सब जगत में प्रसिद्ध भये सो सब लोग इनके पद गावते। तब इनको पद काहू कलामत ने सीख्यौ सो फतेपुर सीकरी में देशाधिपति के आगें कुंभनदास जी को पद कीयो भयौ पद वा कलामत ने गायौ। सो सुनि के देशाधिपति को चित्त वा पद में गड़ गयौ और माथौ धुनौ जो ऐसेहू महापुरुष ह्वै गये हैं जिनकों ऐसे दर्शन परमेश्वर के होत हैं। तब कलामत ने कह्यौ जो अजी साहब अब हूँ हैं। सो सुनि कें देशाधिपति बहुत प्रसन्न भयौ और वा कलामत से कह्यौ जो वे कहाँ हैं। तब वा कलामत ने कही जो श्रीगोवर्द्धन के पास जमुनावतौ गाँव है तहाँ वे रहत हैं। तब देशाधिपति ने कही जो यहाँ बुलावो हम उन्सों मिलेंगे। तब देशाधिपति ने मनुष्य और असवारी कुम्भनदास के बुलायवे कों भेजे। तब कुम्भनदास जी तो घर हुते परासोली में बेठे हुते सो मनुष्यन ने उहाँ बताय दीये। तब कुम्भनदास जी घर तौ हुते नाहीं पातसाह ने याद कीये हो।[१]

तब कुम्भनदास ने कही जो भैय्या में कछु देशाधिपति को चाकर तो नाहीं मेरो देशाधिपति सो कहा काम है। तब देशाधिपति के मनुष्यन ने कही जो बाबा हम तो काम कछू समझत नाहीं परि हमको देशाधिपति को हुक्म है जो कुम्भनदास कों ले आवो, तातें यह पालकी है यह घोड़ा है जापर चाहो ता पर बेठि कें

---

१ तब कुम्भनदास सों कह्यो जो तुमको पातसाह नें याद कीयो है।

चलियै, हम तो आये हैं सो आपको ले जायेंगे। तब कुम्भनदास नें मन में विचार कीयो जो बिन जाये तो निर्वाह न होयगो सो कुम्भनदास जी तत्काल उहाँ ते पनहिं पहिर के चले।

तब कुम्भनदास जी कों लेवे को आये हुते तिनने कहीं जो बाबा सवारी में बेठियै। तब कुम्भनदास ने कह्यौ जो भैय्या में तो कबहूँ बेठ्यौ नाहीं। पाछें ऐसे ही चले। सो फतह[1] पुर सीकरी आय पहुँचे। सो देशाधिपति के डेरा हुते तहाँ गये। तब मनुष्यन नें देशाधिपति सों कह्यौ जो कुम्भनदास जी आये हैं। तब देशाधिपति ने कुम्भनदास सो कहो जो कुम्भनदास जी आवो बेठो। सो आय बेठे। सो वह स्थल केसो है जामें जडाव की रावटी, तामें मोतीन की झालरी लगी है ऐसो स्थल है, तामें बेठे। तब मन में बहुत दुःख लाग्यौ और कहो जो यासो तो हमारे व्रज के हींसन के रूख आछे हैं सो जिनमें श्रीगोवर्द्धन नाथ जी खेलत हैं। तब इतने में देशाधिपति बोल्यो जो कुम्भनदास जी तुमने विसनपद बहुत कीये हैं सो मेंने तुमको बुलायो है ताते तुम कछू विसनपद गावो। तब कुम्भनदास जी तो मन में कुढे हुते जो विचारें जो कहा गाऊँ मेरी वाणी के भक्ता तो श्रीगोवर्द्धनधर हैं और कछू गाये बिना मेरो काम चलेगो नाहीं ताते ऐसो गाऊँ जो कबहूँ मेरो नाम न लेय। काहे ते जो याके संग ते मेरे प्रभू छूटे हैं ताते कठोर बचन कहूँ जो बुरो मानेगों तो कहा करेगो। तब यह मन में आई " जो जाको मन मोहन संग करे ? एको के सब से नहीं

---

[1] फ़तै।

प्रसंग ३

और एक समय राजा मानसिंह सब ठौर ते दिग्विजय करिके अपने देश कूं चले। तब मन में विचारे जो बहुत दिन में आये हैं ताते मथुरा वृन्दावन होयकें चलनो। सो यह बिचार कें आगरे ते चले सो मथुरा आये। तब विश्रांत स्नान करिकें श्रीकेसोराय जी के दर्शन करिकें बृन्दावन चले। सो उष्णकाल के दिन हुते तब बृन्दावन के सब महंतन ने जानी जो आज यहाँ राजा मानसिंह दर्शन को आवेगो। सो यह जानि के श्रीठाकुर जी कों आछे आछे जरी के वागे बहुत आभरण पहरायै पिछवाई चंदोवा सब जरीन के बाधें। इतने राजा मानसिंह दर्शन को आयौ। सौ भीतरि मंदिर के आय कें श्रीठाकुर जी के दर्शन कीयै। सो उष्णकाल के दिन हुते सो बहुत गरमी पड़े। सो ता समय राजा मानसिंह पै ठाडो न रह्यो गयौ। सो ऐसे दर्शन चार पाँच जगह खड़े हुते। सो तहाँ सब ठौर दर्शन करि सब ठोर ते बिदा होयकें अपने डेरा में आये। सो डेरा आय कें मन विचारे जो अवही कूंच करें।

सो वहाँ सो असवार हो कें चले सो तीसरे पहर गोवर्द्धन गाँव आये। सो मानसी गंगा ऊपर डेरा कीये। सो तहाँ श्रीहरदेव जी के दर्शन कियै। सो वहाँ वृन्दावन के महंतन ने वड़े ठाठ बनाये हैं तैसोई यहाँ ठाठ वनाय राख्यौ हुतौ। सो राजा मानसिंह तहाँ ते दर्शन करि के चले। तव कहू न कही जो महाराज यहाँ श्रीगोवर्द्धननाथ जी वहुत सुन्दर ठाकुर हैं तहाँ आप दर्शन को

चलो। तब राजा मानसिंह ने कह्यौ जो यहाँ तो अवश्य चलनो ये ठाकुर सब ब्रज के राजा हैं ताते इनके दर्शन तो अवश्य करने। तब तहाँ ते चले। सो गोपालपुर गाँव आये। तब आयकें पूछी जो दर्शन को कहा समय है तब काहू ने कह्यो जो उत्थापन के दर्शन तो होय चुके हैं अब भोग के दर्शन होयंगे। तब यह सुनि कें राजा मानसिंह श्रीगोवर्द्धन नाथ जी के दर्शन कों गिरराज ऊपर आये। सो उष्णकाल के दिन, मार्ग के श्रमित, दूर के चले आये, सो गरमी में राजा बहुत व्याकुल भयौ हुतो। इतने में भोग के दर्शन खुले सो राजा मानसिंह को मणिकोठा में ले गये।

तिन दिनन में श्रीनाथ जी की सेवा वैभव सों होत हुती। बड़ौ मंदिर सिद्धि भयौ हुतौ। श्रीगोवर्द्धन नाथ जी के आगें गुलाब जल को शृङ्गार भयौ हुतो। निज मंदिर मणिकोठा तिवारी सब जल मय होय रहे हुते। सो ता समय राजा मानसिंह दर्शन कों गये हुते सो श्रीगोवर्द्धन नाथ जी के दर्शन करिकें साष्टांग दंडवत कीनी और गरमी में राजा व्याकुल भयो हुतो सो सीतलताई भई। बड़ो चेन भयो। और श्रीगोवर्द्धन नाथ जी कौ श्रीमुख देख कें राजा बहुत प्रसन्न भयौ और कह्यौ जो साक्षात पूरण ब्रह्म श्रीकृष्ण वृन्दावन चन्द्र श्रीगोवर्द्धन नाथ जी हैं। आगें श्रीभागवत में सुन्यौ हुतो सो आज देखे। आज को दिन है सो धन्य है और आज मेरे बड़ौ भाग्य हैं। और मन में कह्यौ जो यह भोग को समय है सो तो प्रभून की राजधानी को समय है। सो वे प्रभू विराजे हैं आगे ताल मृदंग बाजत हैं कीर्तन होत है। सो कुंभनदास

जी ठाड़े ठाड़े मणिकोठा में दर्शन करत हैं और कीर्तन गावत हैं। सो राजा मानसिंह को मन वा पद में गड गयौ हुतो। तेसौई कोटि कंदर्प लावण्य स्वरूप और तेसोई कीर्तन कुम्भनदास जी करत हुते। सो पद॥

राग नट

रूप देख नेना पल लागै नाहीं।
गोवर्द्धन के अंग अंग प्रति निरखि नेन मन रहत तही ॥१॥
कहा कहो कछू कहत न आवै चित्त चोरयो [1] माँगवै दही ॥
कुम्भनदास प्रभू के मिलन की सुन्दर बात सखियन सों कही ॥२॥

राग धनाश्री

आवत मोहन मन जु हरयौ हो ॥
हों ग्रह अपने सचु सों वेठी निरखि वदन अस्वरा विसरयौ हो ॥२॥
रूप निधान रसिक नंदनंदन निरखि वदन धीरज न धरयौ हो ॥
कुम्भनदास प्रभू गोवर्द्धन धर अंग अंग प्रेम पियूप भरयौ हो ॥२॥

ऐसे पद कुम्भनदास जी गावत है। इतने में राजभोग के दर्शन होय चुके। तव राजा मानसिंह दंडौत करि कें अपने डेरा में गयो तव कुम्भनदास जी संध्या आरती के दर्शन करिकें अपनी सेवा सों पहुँच कें अपने घर कों गये। तव राजा मानसिंह अपने डेरा में जाय कें अपने पास के मनुष्य हुते तिनमें श्रीगोवर्द्धन नाथ जी से सिंगार की वार्ता करन लागे और कह्यौ जो यह

---

१ चारयौ।

श्रीगोवर्द्धन नाथ जी के आगें कोन गावत हुतो। इनने ऐसे विसनपद गाये हैं जो कछु कहिवे में नाहीं आवत। तब काहू ने कही जो महाराज एक ब्रजवासी है कुंभनदास नाम है, सो आपने सुने ही होयँगे देसाधिपति सों मिले हुते सो है। तब राजा मानसिंह ने कही जो हम हू इनसों मिलै तो आछो।

तब राजा मानसिंह सवारे उठे सो श्रीगिरिराज की परिक्रमा को निकसे जो परासोली आये। सो परासोली में कुम्भनदास जी न्हाय कें बैठे। इतने में श्रीगोवर्द्धन नाथ जी पधारे। श्रीमुख सों कहे जो कुम्भनदास जी हों तो एक बात कहूँगो। तब इतने में राजा मानसिंह आयौ सो कुंभनदास जी को प्रणाम करि कें बैठो और श्रीनाथ जी तौ उहां ते दूर जाय ठाडे भये। सो श्री-नाथ जी तौ एक कुम्भनदास जो को देखे है और इनकी भतीजी को देखे हैं। तब कुंभनदास जो की दृष्टी तो श्रीनाथ जी के संग ही गई सो श्रीनाथ जी बैठे हैं तहां कुम्भनदास जी देखवो करे। तब भतीजी बोली जो बावा राजा बैठे हैं। तब कुंभनदास जी ने कही जो मैं कहा करूँ जो बैठे हैं। तो जा[1] बात कहत हुते सो तो भाजि गये सो अब कहेंगे। तव दूरे ते श्रीनाथ जी कहैं जो कुम्भनदास मैं बात कहूँगा। तब कुंभनदास जी प्रसन्न भये और भतीजी सों कह्यौ जो अमुकी आरसी लाउ तिलक करों। तब भतीजी ने कही जो बावा आरसी तौ पडिया पी गई। तब राजा नै कुम्भनदास जी की भतीजी सों कही जो अरी छोरी पडिया

---

[1] जो।

कहा पी गई। तब वह कठौठी में पानी लाय के कुंभनदास जी के आगें धर्यौ तब कुम्भनदास जी वा में देखि कें तिलक करन लागै।

इतने में राजा मानसिंह ने अपनी सोने की आरसी कुंभनदास जी कें आगें धरी। और कह्यौ जो बाबा यामें देखि कें तिलक करिये। तब कुंभनदास जी बोले जो अरे भैय्या याको हौं कहा करूँगो, हमारे तौ यहाँ छानि के घर हैं ताते कोऊ या के पाछें हमारो जीव लेवगो ताते हमें तौ यह नाहीं चाहियत है। तब राजा मानसिंह ने इनको आगें सोने की थैली धरी। तब कुंभनदास ने कह्यौ जो हमकैा धन तो चाहियै नाहीं हमारे तो यह खेती है ताके धन आवत है सो खात हैं। तब राजा मानसिंह ने कह्यौ जो भलो आपको गाम है ताको लिखौ है[1] करि देउ। तब कुम्भनदास ने कह्यौ जो भैया हो तों ब्राह्मण नाहीं जो तेरो उदक लेउं। तब फेरि राजा मानसिंह ने कह्यौ जो बाबा कछु तो आज्ञा करो। तब कुंभनदास ने कह्यो जो हमारो कह्यौ करोगे। तब राजा मानसिंग ने हाथ जोर कह्यौ जो महाराज आप कहोगे सो करूँगो। तब कुम्भनदास नें कह्यौ जो फेरि मेरे पास तुम मत आइयौ। तब राजा मानसिंह नें कह्यौ जो महाराज धन्य है, यह माया के भक्त तौ सगरी पृथ्वी में फिरो सो बहुत देखे परि भगवद्भक्त तो एक एही देखे। यह कहि कें राजा मानसिंह कुंभनदास कों दंडोत करि कें उठि चल्यैा। तब फेरि आय कें कुम्भनदास सों

---

१. दो।

श्रीनाथ जी ने वह बात कही और बहुत प्रसन्न भयै। तब फेरि कुम्भनदास जी श्रीगिरिराज ऊपर आय कें श्रीनाथ जी की सेवा में तत्पर भये।

प्रसंग ४

और एक समय कुंभनदास जी कों मिलिवे कों वृन्दावन के महंत हरिवंश भृत आयै। सो यह जानि कें आयै सो महापुरुष है; इनसों श्रीठाकुर जी बोलत हैं; बातें करत हैं और काव्य इनकी सुनी सो कीर्तन बहुत सुन्दर कीयै, ताते ऐसे पद श्रीठाकुर जी के साक्षात्कार बिना न होय। यह जानि कें कुम्भनदास सो मिलवै आयै। सो कुंभनदास जी सों मिलि कें बहुत प्रसन्न भये और कह्यौ जो कुम्भनदास जी तुमने बिसनपद बहुत कीयै सों हमनें आप कें सुने हैं, और आप को पद श्रीस्वामिनी जी कौ नाहीं सुन्यौ ताते आप कोइ स्वामिनी जी कौ पद सुनावो। तब कुम्भनदास जी नें श्रीस्वामिनी जी का पद करि कें गायौ॥ सो पद॥

राग रामकली

ताल चरचरी

कुमरि राधिका के तुव सकल सौभाग्य
की वा वदन पर कोटिस[१] चंद्रवारो॥
खंजन कुरंग सत कोटि जंघन ऊपर
सिंह सत कोटि उपरि न्योंछावर उतारो।

---

१ कोटिसत।

मत्त सत कोटि चालि पर कुम्भसत
कोटि इन कुचन परि वारि डारौ ॥१॥
कीर दश कोटि दशनन परि कहिन वारौ
पंक कंदूरवहू कसत कोटि अधरन ऊपर वारि रुचिर गर्भ टारौ ॥
नाग सत कोटि वैनी ऊपर कपोत सत कोटि
करि जुगल पर वार ने नाहिन कोऊ लोक उपमा जुधारौ ॥२॥
दासकुंभन स्वामिनी सुनखसिख
अति अद्भुत सुठान कहा लगि समारौ ॥
लाल गिरधर कहत मोहितौ
हितौजी[1] वह रूप छिन छिन निहारौ ॥३॥

यह पद कुम्भनदास ने गायौ सो सुनि के महंत बहुत ही रीझे और कहे जो हमने श्रीस्वामिनी जी के पद बहुत किये हैं परि वहाँ उपमा दीनी हो और वारि फेरि डारी ताते कुंभनदास जी आप बड़े महापुरुष हौं आपकी सराहना कहाँ ताँई करियै। वा महंत नें कुम्भनदास की बड़ी बड़ाई करी बहुत रीझे। ता पाछें वे महंत आदि सब कुंभनदास जी सो विदा होयके अपने घर गये।

प्रसंग ५

और एक समय श्रीगुसाईं जी श्रीगोकुल में अपने घरते श्री-नवनीत प्रिया जी सों आज्ञा माँगि के विदेसार्थ[2] द्वारिका कों

---

१ तोहिलोजी। २ विदेशार्थ।

पधारे। सो श्रीगुसाईं जी नाथ जी द्वारिका पधारे। सो श्रीनाथ जी कों सेवा सिंगार किये ता पाछें आप भोजन करिकें गादी ऊपर बिराजे। तब सब सेवक दर्शन कों आये। तब बात चलत में कुम्भनदास की बात चली। तब काहू वैष्णव ने कही जो महाराज कुंभनदास जी कों द्रव्य को बहुत संकोच है सात बेटा हू हैं और उपजत तौ एक खेती की है ताको धन आवत है तासों निरवाह करत हैं। सो यह बात श्रीगुसाईं जी ने अपने मन में राखी। ता पाछें उत्थापन के समय कुम्भनदास जी दर्शन कों आये तब श्रीगुसाईं जी अपने श्रीमुख सों कहे जो कुंभनदास हम श्रीद्वारिका रणछोड़ जी दर्शन कों पधारेंगे और विदेसहू होयगो। वैष्णव नें बहुत करिके लिख्यौ है ताते जो तुम संग चलो तौ विदेस में भगवदीय कौ ग्रहकाल बाधा न होय। तब भगवदीय को काल व्यतीत हो जाय कछु जान्यौ न परै। और में सुन्यो है जो कछु तुम्हारें द्रव्य कौ संकोच है सो वहाँ सिद्धि होयगो ताते सर्वथा तुमकौ चल्यौ चाहियै। तब कुंभनदास जी नें कही जो आज्ञा। इतने में दर्शन कौ समय भयौ सो श्रीगुसाईं जी आप स्नान करिकें श्रीनाथ जी के मंदिर में पधारे। श्रीनाथ जी की सेवा सों पहुँचिकें श्रीनाथ जी कौ पौढाय कें बेठक में पधारे और कुम्भनदास जी कौ सीख दीनी जो कुंभनदास जी तुम सेवा सौं पहुँचि कें वेग आईयौ हम कालि आरती करिकें अपछरा कुण्ड ऊपर जाय रहेंगे।

तब कुंभनदास जी श्रीगुसाईं जी को दंडोत करिकें अपने घर कों आये। सवारे सेवा सों पहुँच कें श्रीनाथ जी के दर्शन करिकें अपछरा कुण्ड ऊपर आयै और श्रीगुसाईं जी श्रीनाथ जी सों सीख मांगि कें आप नीचे आयै। पाछें आप भोजन किये और सब सेवकन कों महाप्रसाद लिवायौ। ता पाछें समयें ताही कौ[1] मुहूर्त हुतो सो श्रीगुसाईं आप पर्वत नीचे आयै। सोई अपछरा कुण्ड ऊपर आये। सो तहाँ अपछरा कुण्ड ऊपर डेरा करे हुते। सब सेवक अगारु सो ठाड़े हुते। सो श्रीगुसाईं जी डेरा पधारि कें पोढ़े। इतने में सब सेवक सामान लेकें वेऊ आये। सो कुम्भनदास उहाँ वेठि के विचारत हुते। कहिये जो कहिबे की होय प्राननाथ बिछुरन की बिरियाँ जानत नाहि न कोऊ। यह बिचार करत उत्थान को समय भयौ। तब आप गुसाईं जी आप भीतर डेरा में जागे। और कुंभनदास जी कूं दर्शन की सुधि आई सो वहाँ पुंछरी की ओर कोने में जाय कें वैठि कीर्तन गावत है और आखिन में ते जल को प्रवाह वहत है। सो कुम्भनदास ने एक पद गायौ॥ सो पद॥

राग सारंग

केते हुं जुग रो बिन देखें।
तरुण किशोर रसिक नंदनंदन कछुक उठति मुख रेखें॥ १॥
वह शोभा वह कांति वदन की कोटिक चंद्र विसेखें।
वह चितवन वह हास्य मनोहर वह नटवर वपु भेषें॥ २॥

---

[1] ताही समय को।

श्याम सुन्दर संग मिल खेलन को आवत जिये अपेखें ।
कुंभनदास लाल गिरधर विन जीवन जन्म अलेखें ॥ २ ॥

यह पद कुम्भनदास नें गायौ। सो श्रीगुसाईं जी आप डेरा के भीतर सुनों। सो कुंभनदास जी कों कलेश श्रीगुसाईं जी सों सह्यौ न गयौ। सो श्रीगुसाईं जी आप डेरा के बाहर पधारें और श्रीमुख ते कह्यौ जो कुम्भनदास अब तुम वेगि जाउ तुम्हारौ विदेस होय चुक्यौ। और जो तुम्हारी अवस्था है ऐसी उनकी अवस्था है। केसें जानियै। जो श्रीअक्का जी नें गज्जन धावन कों पान लेवे कों पठायौ। सो गज्जन कों तों भगवद् आसक्ति देखें विना एक क्षण हू न रह्यौ जाय। सो गज्जन धावन पान लेवे कों बाहिर गये। सो थोरी सी दूर गये और ज्वर चढ़ि आयौ। सो मूर्छा खायकें गिरें और श्रीअक्का जी ने श्रीनवनीत प्रिया जी कों भोग समर्प्यो। तब श्रीनवनीत प्रिया जी नें गज्जन धावन को बोल न सुन्यौ तब श्रीनवनीत प्रिया जी नें अपने श्रीमुख सों कह्यौ जो मेरो गज्जन धावन कहाँ है। तब श्रीअक्का जी नें कह्यौ जो वह तौ पान लेवे को गयौ है। तब श्रीनवीत प्रिया जी नें कह्यौ जो मेरौ गज्जन धावन आवेगो तब आरोगूंगो। सो श्रीहस्त खेंच कें बेठ रहे। तब वेगि गज्जन धावन कों बुलायौ। तब गज्जन धावन नें कही जो बाबा आरोगौ तब श्रीनवनीत प्रिया जी आरोगे हैं। यह श्रीआचार्य जी महाप्रभू की मर्यादा है जो जितनों सेवक को स्वामी ऊपर स्नेह होय। और भगवद्गीता में भगवान कहें हैं। श्लोक॥ ये यथा मां प्रपद्यन्तेस्तांस्तथैव भजाम्यहं॥ यह आधो

श्लोक कह्यौ। ताते श्रीमुख सों कहें जो इहां तुम्हारी बिवस्था और उनकी बिवस्था है। सो ऐसैा कुंभनदास कों और श्रीनाथ जी कों विरह हुतो। ताते श्रीगुसाईं जी कुम्भनदास कों सीख दीनी। तव कुंभनदास नें श्रीनाथ जी के दर्शन कीये। तब कुम्भनदास ने एक पद गायो सो पद॥

राग सरंग

जो ये चौंप मिलन की होय॥

तैा क्यों रहै ताहि बिन देखें लाख करैा जिन कोय॥
जो ये बिरह परस्पर ब्यापै जो कछू जीवन बनै॥
लैाक लाज कुलकी मर्यादा एकौ चित्त न गनै॥
कुम्भनदास प्रभू जाय[1] तन लागी और न कछू सुहाय॥
गिरधर लाल तैाहि बिन देखे छिन छिन कलप विहाय॥

सो यह पद कुम्भनदास ने श्रीनाथ जी के सन्निधान गायैा। सो सुनि कें श्रीनाथ जी वहुत प्रसन्न भयै। सो कुंभनदास श्रीनाथ जी कों देख कें प्रसन्न भयें॥

प्रसंग ६

और एक समय कुम्भनदास जी श्रीगुसांई जी के पास वैठे हुते। तव कुम्भनदास नें श्रीगुसाईं जी सों कह्यौ जो महाराज वेटा डेढ हैं और हे तो साथ[2]। तव श्रीगुसाईं जी नें कह्यौ जो कुम्भनदास डेढ कैा कारन कहा। तव फेरि कुम्भनदास जी कहे जो महाराज आखैा वेटा तौ चत्रभुजदास और आधौ वेटा

---

१ जाहि। २ सात।

कृष्णदास है। सो श्रीनाथ जी की गायन की सेवा करत है तासों आधौ है। कुंभनदास जी कृष्णदास सों आधौ क्यों कहैं ताको हेत यह जो श्रीआचार्य जी महाप्रभून ने पुष्टि मार्ग प्रकट कीयौ है। सो पुष्टि मार्ग कहा है जो व्रज भक्तन को हेंत यह मार्ग प्रगट कीयो है। सो भगवदीय गाये हैं 'जो सेवा रीति प्रीति व्रज जन की जन हित जग प्रगटाई'। सो व्रज भक्तन की कहा रीति है जो श्रीठाकुर जी के सन्निधान तो सेवा करै और श्रीठाकुर जी वन में पधारे तब गुणगान करें। जो ये वस्तु होय तो आखो और इनमें एक होय तो आधौ। ताते चत्रभुजदास सेवा और गुणगान है ताते आखो और कृष्णदास में एक सेवा है सो आधौ। तब श्रीगुसांई जी श्रीमुख ते कहैं जो भगवदीय है तेई वेटा हैं और बहुत भये तो कोन काम के। चत्रभुजदास की वार्ता में लिखे हैं॥ वैष्णव ९० ॥

(कुम्भनदास के पुत्र कृष्णदास की वार्ता)

सो वे कृष्णदास श्रीनाथ जी की गायन के ग्वाल[१] हुते। श्रीगुसांई जी ने इनको गायन की सेवा दीनी हुती। सो कृष्णदास श्रीनाथ जी की गायन की सेवा करते। सवारे खिरक सेवा सों पहुँच कें फेर गायन चरायवे को जाते। सो सगरे दिन कृष्णदास गायन की सेवा करते। सो एक गाय चराय कें पूछरी के पोर[२] कृष्णदास गायन के संग आवत हुते। सो सगरी गाय तो खिरक में आई और गाय वड़ी हुती ताकों औन[३] बहुत भारी हुतौ सो

१ ग्वार। २ पूछरी की ओर। ३ ऐन।

वह गाय बहुत हरवे हरवे चलती। सो वा गाय कों आवत अँधियारा परि गयौ। सो तहां पर्वत के नीचे अँधियारे में एक नाहर निकस्यौ सो गाय पै धार्यौ। तब कृष्णदास कहैं जो अरे अधर्मी यह श्रीनाथ जी की गाय है तू भूखौ हो तौ मेरे ऊपर आऊ। तब इतने में गाय तौ भाजि खिरक में गई और नाहर नें कृष्णदास को अपराध कीयौ।

और ऊपर कहि आये है जो गाय सब खिरक में आई। तब श्रीनाथ जी आप गाय दुहिवे कों आये। सो सब गाय ग्वाल दुहत हैं और वह बड़ी गाय खिरक में आई सो वह गाय कों श्री[1] दुहिवे कों बैठे और कृष्णदास बछरा थामें हैं और वह गाय बछरा[2] कों चाटत है। सो ऐसे दर्शन कुंम्भनदास जी को भयै। ता पछें गोदुहन करि कें श्रीनाथ जी गिरिराज ऊपर मंदिर में पधारे। तब श्री गुसांई जी ने भोग समर्प्यो और कुम्भनदास जी खिरक में से आये सो दण्डौती सिला पास ठाडे भये। इतने में समाचार आये जो कृष्णदास को नाहर ने मार्यो। सो सुनि कें कुंभनदास कों मूर्छा आय के गिरे। सो ऐसे गिरे जो देहानुसंधान भूल गये। तब कुंभनदास जी कौ सब कोऊ बुलावे परि बोले नाहीं। तब यह समाचार काहू नें श्रीगुसाईं जी सो कहे जो महाराज कृष्णदास को नाहर नें मार्यो और गायकों कृष्णदास ने बचाई सो कृष्णदास तहां ही परे हैं। तब गुसाईं जी कहैं जो गाय कबहू न छोड आवै। अंत समय गाय संकल्प करत है ताको

---

[1] श्रीनाथजी [2] बछरा।

गाय उत्तम लोक कों ले जात है और कृष्णदास नें तौ श्रीनाथ जी की गाय बचाई हैं ताते कृष्णदास कों गाय केसें छोड़ आवेगी। और गुसाईं जी ने कह्यौ कुंभनदास जी कहाँ है। तब काहू वैष्णव नें कही जो महाराज कुम्भनदास जी कों कलेस बहुत बाधा कियै है। जो कुम्भनदास जी ऊपर आवन हुते, सो कुम्भनदास जी के आगे काहू ने कृष्णदास के समाचार कहें सो सुनत ही कुम्भनदास जी मूर्छा खाय कें गिरे। सो लोग बहुत ही बुलावत हैं परि आवत नाहीं।

तब श्रीगुसाईं जी ने अपने श्रीमुख सों कह्यौ जो फेरि कुम्भनदास जी की खबर लावे जो कुम्भनदास जी की देह केसें हैं। सो वे आय के कुंभनदास जी कों पुकारें। तब यह समाचार श्रीगुसाईं जी सों कहें जो महाराज कुंभनदास जी तौ कछु समझत नाहीं। तब श्रीगुसाईं जी तौ सेन भोग के दर्शन करि कें श्रीनाथ को पोढ़ाय के आप नीचे पधारे। सो देख कें मार्ग के सामें कुंभनदास जी परे हैं और लोग चारयौ ओर ठाडे हैं सो कहत हैं जो कुंभनदास जी केसे भगवदी हैं परि पुत्र को सोक बहुत बुरे होत है या पीरा सों कोई बच्यौ नाहीं, काहे ने जो अपनी आतमा है। तब यह बात लोगन की सुनिके श्रीगुसाईं जी मन में विचारे जो यहाँ तौ कारण कछु और है और लोगन कें तौ कछु और भागत है ताते भगवदीय को स्वरूप करिवे के लिये श्रीगुसाईं जी अपने श्रीमुख सों कही जो कुम्भनदास जी सवारे तुम वेगी

वह गाय बहुत हरवे हरवे चलती । सो वा गाय कों आवत अँधियारो परि गयौ । सो तहां पर्वत के दीचे अँधियारे में एक नाहर निकस्यौ सो गाय पै आयौ । तब कृष्णदास कहें जो अरे अधर्मी यह श्रीनाथ जी की गाय हैं तू भूखौ हो तौ मेरे ऊपर आऊ । तब इतने में गाय तौ भाजि खिरक में गई और नाहर नें कृष्णदास को अपराध कीयो ।

और ऊपर कहि आये है जो गाय सब खिरक में आई । तब श्रीनाथ जी आप गाय दुहिवे कों आये । सो सब गाय ग्वाल दुहत हैं और वह नयी गाय खिरक में आई सो वह गाय कों श्री[1] दुहिवे कों बैठे और कृष्णदास बछरा थामें हैं और वह गाय बछरा[2] कों चाटत है । सो ऐसे दर्शन कुंम्भनदास जी को भये । ता पछें गोदुहन करि कें श्रीनाथ जी गिरिराज ऊपर मंदिर में पधारे । तब श्री गुसांई जी ने भोग समर्प्यो और कुम्भनदास जी खिरक में से आये सो दण्डौती सिला पास ठाडे भये । इतने में समाचार आये जो कृष्णदास को नाहर ने मार्यौ । सो सुनि कें कुंभनदास कों मूर्छा आय के गिरे । सो ऐसे गिरे जो देहानुसंधान भूल गये । तब कुंभनदास जी कौ सब कोऊ बुलावे परि बोले नाहीं । तब यह समाचार काहू नें श्रीगुसाई जी सो कहे जो महाराज कृष्णदास को नाहर नें मार्यो और गायकों कृष्णदास ने बचाई सो कृष्णदास वहां ही परे हैं । तब गुसाई जी कहें जो गाय कबहू न छोड आवै । अंत समय गाय संकल्प करत हैं ताको

---

१ श्रीनाथजी २ बछरा ।

गाय उत्तम लोक कों ले जात है और कृष्णदास नें तो श्रीनाथ जी की गाय चर्चाई हैं ताते कृष्णदास कों गाय केसें छोड़ि आवैगी। और गुसाईं जी ने कह्यौ कुंभनदास जी कहाँ है। तब काहू वैष्णव ने कही जो महाराज कुम्भनदास जी कों कलेस बहुत बाधा कियै है। जो कुम्भनदास जी ऊपर आवन हुते, सो कुम्भनदास जी के आगे काहू ने कृष्णदास के समाचार कहें सो सुनत ही कुम्भनदास जी मूर्छा खाय कें गिरे। सो लोग बहुत ही बुलावत हैं परि आवत नाहीं।

तब श्रीगुसाईं जी ने अपने श्रीमुख सों कह्यौ जो फेरि कुम्भनदास जी की खबर लावै जो कुम्भनदास जी की देह केसें हैं। सो वे आय के कुंभनदास जी को पुकारें। तब यह समाचार श्रीगुसाईं जी सों कहें जो महाराज कुंभनदास जी तो कछू समझत नाहीं। तब श्रीगुसाईं जी तो सेन भोग के दर्शन करि कें श्रीनाथ को पोढ़ाय के आप नीचे पधारे। सो देख कें मार्ग के साम्हें कुंभनदास जी परे हैं और लोग चारयौ ओर ठाडे हैं सो कहत हैं जो कुंभनदास जी वेसे भगवदी हैं परि पुत्र के सोक बहुत बुरे होत है या पीरा सों कोई बच्यो नाहीं, काहे ते जो अपनी आतमा है। तब यह बात लोगन की सुनिके श्रीगुसाईं जी मन में विचारे जो यहाँ तो कारण कछू और है और लोगन कों तो कछू और भागत है ताते भगवदीय को स्वरूप करिवे के लिये श्रीगुसाईं जी अपने श्रीमुख सों कही जो कुम्भनदास जी सवारे तुम वेगी

आईयौ तुमको श्रीगोवर्द्धन नाथ जी के दर्शन करावेंगे[1] तुम मन में खेद मति करौ। इतनो श्रीगुसाईं जी श्रीमुख सों कहे तब कुम्भनदास जी उठि ठाडे भये और प्रसन्न भये । तब श्रीगुसाईं जी कों दंडौत करिके कुम्भनदास को जो कार्य करनों हो सो सब कीयौ।

पाछें सवारे कुम्भनदास जी दर्शन कों आये । श्रीनाथ जी कों सिंगार करिके श्रीगुसाईं जी सों कह्यौ जो प्रथम कुम्भनदास जी कों दर्शन कराउ देय। सो कुम्भनदास जी वैष्णवन के ऊपर यह कार कियो जो सूतकी को कोंन मन्दिर में जान देतो। सो कुम्भनदास जी के अनुग्रहते सब कोउ दर्शन करत हैं सो कुम्भनदास जी नित्य एक बेर दर्शन करिके परासोली में जाय बेठते। सों वहाँ बैठे बैठे विरह के पद गावते। सो पद॥

राग धनाश्री

तुम्हारे मिलन बिन दुखित गुपाल ।
अति आतुर ब्रज सुन्दर प्यारे फिरें
सीतल चंद नयन भयो दाहत किरण कम
चंदन कुसुम सुहाय घनसार लगन
कुम्भनदास प्रभुतत्रवन तुम बिन · .

अधरामृत वंशी सींच लउ तुम

1 फरामेंगे । २ बटी । ३ मां ।

राग धनाश्री

अब दिन रात्रि पहार से भये।
तब ते निघतट नाहिनि जबते हरि मधुपुरी गये।
यह जानियै बिधाता जुग सम कीने जाम नये।
जागत जाग विहांतन के ऐसें प्रीत पठये[१]।
ब्रजवासी अतिपरम दीन भये व्याकुल सोच लयै।
उन प्राण दुखित जलरुह गन दारुण हेम पयै।
कुम्भनदास बिछुरत नंदनदन बहुत संताप करे।
अब गिरधर विन रहत निरंतर नैात न नीर छयै॥

राग केदारो

औरन कों समीप बिछुरनों आयौ मेरी हिसा।
अब को जसोवे सुख अपने आली मोकों चाहत रिसा॥
ना जानों यह बिधाता की गति मेरे आंक लिखे ऐसौ कोन रिसा।
कुम्भनदास प्रभू गिरधर कहत निस दिन रह ज्यों चातक घन त्रिसा॥

ऐसे पद गाय गाय कुम्भनदास जी नें सूत ते पद कियें। पाछें शुद्ध होय कें कुंभनदास जी भगवत्सेवा में आये। ऐसी जिनकों दर्शन की आरति सो वे कुम्भनदास जी श्रीआचार्य जी महाप्रभून के ऐसे परम कृपापात्र भगवदीय हैं। ताते इनकी वार्ता को पार नहीं ताते इनकी वार्ता कहाँ ताईं लिखिये॥ प्र० १॥

---

१ ठये।

श्रीगुसाईं जी के सेवक नंददास जी तिनकी वार्ता

—:०:—

प्रसंग १

नंददास जी तुलसीदास के छोटे भाई हुते। सो विनकूं नाच तमासा देखवे को तथा गान सुनवे को शोक बहुत हतो। सो वा देश मेंसूं एक संग द्वारका जात हतो। सो नन्ददास जी ऐसे विचारे के में श्रीरणछोड जी के दर्शन कूं जाऊँ तो अच्छौ है। जब विन नें तुलसीदास जी सूं पूँछी। तब तुलसीदास जी श्रीरामचंद्र जी के अनन्य भक्त हते जासूं विन ने द्वारका जायवे की नाहीं कही। जब नंददास जी नहीं माने सो वा संग में चले गये। सो मथुरा सूधे गये। मथुरा में वा संग कू बहुत दिन लगे सो नंददास जी संग कूं छोड़कर चल दीने।

सो नंददास जी द्वारका को रस्ता भूल गये सो कुरुक्षेत्र की पाडी सींनंद ग्राम नें जाय पहुँचे। सो वहाँ एक साहूकार क्षत्री रहतो हतो। तब नंददास जी वाके घर भिक्षा लेवे गये। वाकी स्त्री को रूप सुन्दर हतो सो नंददास जी देखकर मोहित होय गये। जब आसा दिन जाय के वाके दरवाजे पें बैठ रहते, जब वा क्षत्रानी को मुख देख लेते तब डेरा पे आवते हते। ऐसे करते बहुत दिन बीते।

जब वा छत्रानी की जात में बहुत चर्चा फेली तब वा छत्रानी को सुसरो तथा पती विनने विचार कीनो गाम में रहनो नहीं। तब उहां ते घर के सगरे मनुष्य श्रीगोकुल जी कुं चले कारण कें सब वैष्णव हते। तब नंददास जी कूं खबर भई तब नंददास जी हूं विन के पाछें गये। रस्ता में विन से दूर दूर चले जाय और विन सें दूर डेग करें। ऐसे कितने दिन पांछे ब्रज में पहुँचे। सो यमुना जी उतरवे के समय वा छत्री नें कछू मलाहन कुं दीनों और ये कही कें या ब्राह्मण कूं मती उतारो ये हमकूं दुःख देत हैं। जब सब उतरके श्रीगोकुल गये। श्री-गुसाईं जी के दर्शन करे। जब श्रीगुसाईं जी नें आज्ञाकरी जो वा ब्राह्मण कूं यमुना जी के पार क्यों बैठाय आये हो। तब वा क्षत्री के मन में ऐसी आई कोई ने विनकी बात कही है अथवा जान गये हैं। सो क्षत्री मन में बहुत पछतायवे लग्यो।

जब श्रीगुसाईं जी ने एक मनुष्य पठायके वा ब्राह्मण कूं पार सों बुलाय लीनो। जब वा नंददास जी नें आयकें श्रीगुसाईं जी के दर्शन करे। साक्षात् कोटिकंदर्प लावण्य पूर्ण पुरुषोत्तम के दर्शन भये। तब नंददास जी नें साष्टांग दंडवत करी और हाथ जोर कें ठाडे रहे और जा स्वरूप के दर्शन वा छत्रानी के नेत्रन में नंददास जी कूं होत हते वही स्वरूप के दर्शन श्रीगुसाईं जी के भये। तब नंददास जी को मन वहां ते छूटकें साक्षात् श्रीगुसाईं जी के चरणारविंद में आयो। तब नंददास जी हाथ जोर कें ठाढ़े रहे। जब श्रीगुसाईं जी नें आज्ञा करी नंददास जी स्नान

कर आओ। तब स्नान कर आये। तब श्रीगुसाईं जी नें श्रीनवनीत प्रिया जू के सन्निधान नाम निवेदन करवाये। पाछे नंददास जी ने श्रीनवनीत प्रिया जी के दर्शन सब आशयपूर्वक करे।

पाछें श्रीगुसाईं जी भोजन करके जब वैष्णव कुं पातर धराई तब नंददास जी महाप्रसाद लेवे बेठे। तब महाप्रसाद लेत ही नंददास जी कुं देहानुसंधान रह्यौ नहीं। जब पातर पर बैठेई रहे। भगवल्लीला में मन मग्न होय गयो। अनेक लीलान को अनुभव होवै लाग्यो। भरे घर के चोर की सी नाई मोहित भये। ऐसें करते सवारो होय गयो। कछु सुद्धि रही नहीं। तब श्रीगुसाईं जी पधार कें नंददास जी के मन में कही कें नंददास जी उठो दर्शन करो। जब नंददास जी उठके ठाढ़े भये। तब नंददास जी नें उठके श्रीगुसाईं जी के दर्शन करके ये पद गायो। 'प्रात समय श्रीवल्लभसुत को उठतहिं रसना लीजिये नाम' इत्यादिक पद गाय के श्रीनवनीत प्रिया जी के दर्शन करत मात्र ही भगवल्लीला को स्फूर्ती भई। जब पालने को पद गायो 'बालगोपाल ललन कों मोद भरी यशुमति दुलरावत'। इत्यादि भगवल्लीला संबंधी बहुत नये करिकें गाये।

सो नंददास जी के ऊपर श्रीगुसाईं जी नें ऐसी कृपा करी तब सब ठिकानेन सों तिनको मन खींचकें श्रीप्रभुन में लगाय दीनो। सो वे भुवा की वहू जिनसों नंददास जी को मन लाग्यो हतो सो वे भुवा की वहू नंददास जी कुं रस्ता में पांच सात बार नित्य दीखत हती परन्तु नंददास जी वाकी आडी देखते ही न

हते। ऐसें श्रीगुसाईं जी की कृपा तें ऐसो मन को निरोध होय गयो हतो। जासूं इनके भाग्य की बड़ाई कहा कहिये।

प्रसंग २

ता पाछें श्रीगुसाईं जी श्रीजी द्वार पधारे। सो नंददास जी कुं आज्ञा करकें संग ले गये। तब नंददास जी ने जाय कर श्रीगोवर्द्धन नाथ जी के दर्शन करे। सो साक्षात् कोटिकंदर्प लावण्य पूर्ण पुरुषोत्तम के दरशन भये। सो दर्शन करकें नंददास जी बहुत प्रसन्न भये और नंददास जी कुं किशोरलीला की स्फूर्ती भई। तब उत्थापन को समय हतो। सो श्रीगुसाईं जी की आज्ञा पायकें यह पद गायो, 'सोहत सुरंग दुरंगी पाग कुरंग ललना केसे लोयन लोने'। यह पद गायकें अपने मन में नंददास जी नें बड़े भाग्य माने। फिर संध्या आरती समय दर्शन करे। तब ये पद गाये।

बनते सखन संग गायन के पाछे पाछे
आवत मोहनलाल कन्हाई ॥ १ ॥
बनते आवत गावत गौरी ॥ २ ॥
देख सखी हरि को वदन सरोज ॥ ३ ॥
घर नंदमहर के मिस ही मिस
आवत गोकुल की नारी ॥ ४ ॥

या भांत सूं नंददास जी ने इत्यादि अनेक पद गाये।

सो नंददास जी कोई दिन श्रीगिरिराज जी रहते कोई दिन श्रीगोकुल आवते। जिनकूं संसार ऐसो फीको लागतो जैसे मनुष्य कूं उल्टी देखके बुरो लगे। जासूं वे और ठिकाने जाते नाहीं हुते और श्रीमहाप्रभु जी और श्रीगुसाईं जी और श्रीगिरिराज जी और श्रीयमुना जी और श्रीव्रजभूमी इनको स्वरूप विचार्यो करते। प्रभुन के दूसरे अवतारन पर्यंत कोई ठिकाने विनको मन नहीं लागतो हुतो। जासूं विनने श्रीस्वामिनी जी के स्वरूप वर्णन में कह्यो है 'चलिये कुंवरकान्ह सखी भेष कीजे'। या पद में कह्यो है 'शिवमोहे जिन वे मोहनाजे कोई। प्यारी के पायन आज आन परे सोई'। ऐसी दृष्टी जिनकी ऊँची हती।

प्रसंग २

सो वे नंददास जी व्रज छोड़ के कहूँ जाते नहीं हुते। सो नंददास जी के बड़े भाई तुलसीदास जी काशी में रहते हुते। सो विननें सुन्यो नंददास जी श्रीगुसाईं जी के सेवक भये हैं। तब तुलसीदास जी के मन में ये आई के नंददास जी नें पतिव्रता धर्म छोड़ दियो है आपने तो श्रीरामचंद्र जी पती हुते। सो तुलसीदास जी नें ये विचार के नंददास जी कुं पत्र लिख्यो जो तुम पतिव्रता धर्म छोड़के क्यो तुमने कृष्ण उपासना करी। ये पत्र जब नंददास कूं पहूँचो तब नंददास जी ने बांच के यह उत्तर लिख्यो। जो श्रीरामचन्द्र जी ही एक पत्नीव्रत हैं सो दूसरी पत्नी नहीं कैसे संसार चलैगो। एक पती हूँ बरोबर संसार न

सके। सो रावण हर ले गयो। और श्रीकृष्ण तो अनंत ब्रह्मांड के स्वामी हैं और जिनकी पत्नी भये पीछे कोई प्रकार को भय रहे नहीं है एक कालावच्छिन्न अनंत पत्नीन कुं सुख देत हैं। तासूं मैंने श्रीकृष्ण पती कीने हैं। सो जानोगे।

ये पत्र जब नंददास जी को लिख्यो तब तुलसीदासकुं मिल्यो। तब तुलसीदास जी नें बाच के विचार किया कें नंददास जी को मन वहाँ लग गयो है। सो वे अब आवेंगे नहीं। सो उनकी टेक हमसूं अधिकी है। हम तो अयुध्या छोड़ के काशी में रहे हैं और नंददास जी तो व्रज छोड़ के कहीं जाय नहीं हैं। इनकी टेक हमारी टेक सूं बड़ी है। सो वे नंददास जी ऐसे कृपापात्र भगवदीय हुते।

प्रसंग ४

सो एक दिन नंददास जी के मन में ऐसी आई जो जैसे तुलसीदास जी नें रामायण भाषा करी है सो हमहूँ श्रीमद्भागवत भाषा करें। ये बात ब्राह्मण लोगन नें सुनी तब सब ब्राह्मण मिल कें श्रीगुसाईं जी के पास गये। सो ब्राह्मण ने बीनती करी, जो श्री मद्भागवत भाषा होयगो तो हमारी आजीविका जाती रहेगी। तब श्रीगुसाईं जी ने नंददास जी सुं आज्ञा करी जो तुम श्रीमद्भागवत भाषा मत करो और ब्राह्मणन के क्लेश में मत परो, ब्रह्मक्लेश आछो नहीं है और कीर्तन कर के व्रजलीला गाओ। जब नंददास जी ने श्रीगुसाईं जी की आज्ञा मानी, श्रीमद्भागवत

भापा न कर्यो। ऐसो श्रीगुसाईं जी की आज्ञा को विश्वास हुतो। ऐसे परमकृपापात्र भगवदीय हुते।

प्रसंग ५

सो नंददास जी के बड़े भाई तुलसीदास जी हुते। सो काशी जी ते नंददास जी कूं मिलवे के लिये व्रज में आये। सो मथुरा में आयके श्रीयमुना जी के दर्शन करे, पाछे नंददास जी की खबर काढ के श्रीगिरिराज जी गये। उहाँ तुलसीदास जी नंददास जी कुं मिले। जब तुलसीदास जी नें नंददास जी सुं कही के तुम हमारे संग चलो, गाम रुचे तो अयोध्या में रहो, पुरी रुचे तो काशी में रहो, पर्वत रुचे तो चित्रकूट में रहो. वन ने दंडकारण्य में रहो, ऐसे बड़े बड़े धाम श्रीरामचन्द्र
है। तब नंददास जी ने उत्तर देवे कुं ये पद गा

जो गिरि रुचे तो बसो
गाम रुचे तो बसो
नगर रुचे तो बसो
सोभासागर अति अ
सरिता रुचे तो बसो
सकल मनोरथ
नंददास कानन
बसो भूमि ५

यह पद सुनके तुलसीदास जी
है जो श्रीरामचन्द्र जी के नाम स

कूं भजो। तब नंददास जी नें एक कीर्तन में उत्तर दियो। सो पद।

कृष्ण नाम जब तें में श्रवण सुन्योरी आली
भूली री भवन हों तो बावरी भई री।
भरभर आवें नयन चितहुं न परे चैन
मुखहुँ न आवे बैन तनकी दशा कछु और रही री ॥१॥
जेतेक नेमधर्म व्रत कीने री मैं
बहुविध अंगों अंग भई मैं तो श्रवण मई री।
नंददास प्रभु जाके श्रवण सुने यह गति
माधुरी मूरत केधों कैसी दई री ॥२॥

ये पद सुनके तुलसीदास चुप रहे।

जब नंददास जी श्रीनाथ जी के दर्शन करवे कूं गये तब तुलसीदासहुं उनके पीछें पीछें गये। जब श्रीगोवर्द्धन नाथ जी के दर्शन करे तब तुलसीदास जी नें माथैा नमायो नहीं। तब नंददास जी जान गये जो ये श्रीरामचंद्र जी विना और दूसरे कूं नहीं नमे है। जब नंददास जी नें मन में विचार कीनो यहाँ और श्रीगोकुल में इनकुं श्रीरामचंद्र जी के दर्शन कराऊँ तब ये श्रीकृष्ण को प्रभाव जानेंगे। तब नंददास जी ने गोवर्द्धननाथ जी सों बीनती करी सो दोहा।

आज की सोभा कहा कहूँ, भले विराजो नाथ।
तुलसी मस्तक तव नमें, धनुष बाण लेओ हाथ॥

ये बात सुनकें श्रीनाथ जी कों श्रीगुसाईं जी की कान तें विचार भयो जो श्रीगुसाईं जी के सेवक कहे सो हमकुं मान्यो चाहिये। जब श्रीगोवर्द्धन नाथ जी नें श्रीरामचंद्र जी को रूप धर के तुलसीदास जी कुं दर्शन दिये. तब तुलसीदास जी नें श्री गोवर्द्धन नाथ जी कुं साष्टांग दंडवत करी।

जब तुलसीदास जी दर्शन करके बाहिर आये। तब नंददास जी श्रीगोकुल चले जब तुलसीदास जी हूँ संग संग आये। तब आयके नंददास जी ने श्रीगुसाईं जी के दर्शन करे। साष्टांग दंड-वत करी और तुलसीदास जी नें करी नहीं। और नंददास जी कुं तुलसीदास जी नें कही कें जैसे दर्शन तुमनें वहाँ कराये वैसे ही यहां कराओ। जब नंददास जी नें श्रीगुसाईं जी सों विनती करी ये मेरे भाई तुलसीदास है, श्रीरामचंद्र जी बिना और कुं नहीं नमे है। तब श्रीगुसाईं जी नें कही कें तुलसीदास जी बैठो। जब श्रीगुसाईं जी के पांचमें पुत्र श्रीरघुनाथ जी वहां ठाढे हुते और विन दिनन में श्रीरघुनाथ जी को विवाह भयो हुतो। जब श्रीगुसाईं जी ने कहा रघुनाथ जी तुम्हारे सेवक आये हैं, इनकुं दर्शन देओ। तब श्रीरघुनाथ लाल जी नें तथा श्रीजानकी बहू जी नें श्रीरामचंद्र जी को तथा श्रीजानकी जी को स्वरूप धरके दर्शन दिये। साक्षात् दर्शन भये। तब तुलसीदास जी नें साष्टांग दंडवत करी याही नें श्रीहरिकेश जी नें मूलपुरुष में गायो है, 'हेतु निज अभिधान प्रकटे तात आज्ञा मानके।" और तुलसीदास जी दर्शन करके बहुत प्रसन्न भये और पद गायो "बरणों अवधि

गोकुल गाम"। ये पद गाय कें तुलसीदास जी विदा होय के अपने देशकुं गये।

सो वे नंददास जी श्री गुसाईं जी के ऐसे कृपापात्र भगवदीय हते जिनके कहेतें श्रीगोवर्द्धन नाथ जी कुं तथा श्रीरघुनाथ जी कुं श्रीरामचंद्र जी को स्वरूप धरके दर्शन देणे पडे। जासूं इनकी वार्ता कहां ताईं लिखिये। वार्ता संपूर्ण ॥ वैष्णाव ॥ ४ ॥

श्रीगुसाईं जी के सेवक चतुर्भुजदास कुम्भनदास के वेटा तिनकी वार्ता

—:o:—

प्रसंग १

सो वे कुम्भनदास जी श्रीनाथ जी के संग खेलत हते। सो एक दिन कुम्भनदास कुं श्रीगोवर्द्धननाथ जी नें चार भुजा धरि के दर्शन दिये। वाही दिन वेटा को जन्म भयो जासूं वा वेटा को नाम चतुर्भुजदास धर्‍यो। ये बात कुम्भनदास जी की वार्ता में लिखी है।

सो वे चतुर्भुजदास जी ग्यारह दिन के भये ताही समय कुम्भनदास जी नें श्रीगुसाईं जी के पास ले जायके नाम सुनवाये। और चतुर्भुजदास जब इकतालिस दिन के भये तब कुम्भनदास जी नें श्रीगुसाईं जी पास ले जाय निवेदन करवाये। वा दिन तें चतुर्भुजदास में श्रीनाथ जी ने इतनी सामर्थ्य धरी जब इच्छा आवे तब मुग्ध बालक होय जाय और इच्छा आवे तो बोलवे चलावे सब अलौकिक बातें करवें लग जाय। जब कुम्भनदास जी एकांत में बैठे तब चतुर्भुजदास कुम्भनदास को भगवद्वार्ता करें और पूछें और पद गावें और जब लौकिक मनुष्य आय जाय तब चतुर्भुजदास मुग्ध बालक बन जाय। ऐसी सामर्थ्य श्रीनाथ जी चतुर्भुजदास में धर दीनी।

सो जब श्रीनाथ जी इच्छा करते तब चतुर्भुजदास कुं साथ खेलवेकुं ले जाते। और जैसी लीला के दर्शन करते तैसे पद गावते। सो ये चतुर्भुजदास ऐसे भगवत्कृपापात्र हते।

प्रसंग २

सो एक दिन श्रीनाथ जी एक ब्रजवासी के घर माखन चोरी करवेकुं पधारे और चतुर्भुजदास जी कुं संग ले पधारे। और उहां एक ब्रजवासी की बेटी के चतुर्भुजदास नजर आये और श्रीनाथ जी तो नजर नाहीं पड़े। और चतुर्भुजदास पकड़ाय गये सो विनने मार खाई। पाछें चतुर्भुजदास श्रीनाथ जी के पास गए। जब चतुर्भुजदास जी नें कही जो महाराज मोकुं तो आछी मार खवाई। श्रीनाथ ने कही जो तेरे में सामर्थ्य ओछी नहीं हती जब तू क्यों न भाग आयो। सो वें चतुर्भुजदास श्रीनाथ के अंतरंग लीलामध्यपाती हते। तातें इनकी वार्ता कहा कहिये।

प्रसंग ३

और जा दिन चतुर्भुजदास जीकुं प्रथम लीला को अनुभव भयो वा दिनतें सर्व व्यापी वैकुंठ सम्बन्धी लीला सर्व दर्शवे लगी। सो ये सामर्थ्य इनके भीतर श्रीगोवर्द्धननाथ जी नें कृपा करिके धरी। जब कुम्भनदास जी कुं पोढवे के दर्शन होते होते तब कुम्भनदास जी कीर्तन गायवे लगे। सो पद। "वे देखो बरन झरोखन दीपक, हरि पोढे ऊँची चित्रसारी"। सो इतनी तुक जब

श्रीगुसाईं जी के सेवक चतुर्भुजदास कुम्भनदास के वेटा तिनकी वार्ता

—:o:—

प्रसंग १

सो वे कुम्भनदास जी श्रीनाथ जी के संग खेलत हते। सो एक दिन कुम्भनदास कुं श्रीगोवर्द्धननाथ जी नें चार भुजा धरि के दर्शन दिये। वाही दिन वेटा को जन्म भयो जासुं वा वेटा को नाम चतुर्भुजदास धर्‍यो। ये बात कुम्भनदास जी की वार्ता में लिखी है।

सो वे चतुर्भुजदास जी ग्यारह दिन के भये ताही समय कुम्भनदास जी नें श्रीगुसाई जी के पास ले जायके नाम सुनवाये। श्रौर चतुर्भुजदास जब इकतालिस दिन के भये तब कुम्भनदास जी नें श्रीगुसाईं जी पास ले जाय निवेदन करवाये। वा दिन तें चतुर्भुजदास में श्रीनाथ जी ने इतनी सामर्थ्य धरी जब इच्छा श्रावे तब मुग्ध बालक होय जाय श्रौर इच्छा श्रावे तो बोलवे चलावे सब श्रलौकिक बातें करवें लग जाय। जब कुम्भनदास जी एकांत में वैठे तब चतुर्भुजदास कुम्भनदास को भगवद्वार्ता करें श्रौर पूछें श्रौर पद गावें श्रौर जब लौकिक मनुष्य श्राय जाय तब चतुर्भुजदास मुग्ध बालक बन जाय। ऐसी सामर्थ्य श्रीनाथ जी चतुर्भुजदास में धर दीनी।

सो जब श्रीनाथ जी इच्छा करते तब चतुर्भुजदास कुं साथ खेलवेकुं ले जाते। और जैसी लीला के दर्शन करते तैसे पद गावते। सो ये चतुर्भुजदास ऐसे भगवत्कृपापात्र हते।

प्रसंग २

सो एक दिन श्रीनाथ जी एक व्रजवासी के घर माखन चोरी करवेकुं पधारे और चतुर्भुजदास जी कुं संग ले पधारे। और उहाँ एक व्रजवासी की वेटी के चतुर्भुजदास नजर आये और श्रीनाथ जी तो नजर नाहीं पड़े। और चतुर्भुजदास पकड़ाय गये सो विनने मार खाई। पाछें चतुर्भुजदास श्रीनाथ जी के पास गए। जब चतुर्भुजदास जी नें कही जो महाराज मोकुं तो आछी मार खवाई। श्रीनाथ ने कही जो तेरे में सामर्थ्य ओछी नहीं हती जब तू क्यों न भाग आयो। सो वें चतुर्भुजदास श्रीनाथ के अंतरंग लीलामध्यपाती हते। तातें इनकी वार्ता कहा कहिये।

प्रसंग ३

और जा दिन चतुर्भुजदास जीकुं प्रथम लीला को अनुभव भयो वा दिनतें सर्व व्यापी वैकुंठ सम्बन्धी लीला सर्व दर्शवे लगी। सो ये सामर्थ्य इनके भीतर श्रीगोवर्द्धननाथ जी नें कृपा करिके धरी। जब कुम्भनदास जी कूं पोढवे के दर्शन होते होते तब कुम्भनदास जी कीर्तन गायवे लगे। सो पद। " वे देखो बरन झरोखन दीपक, हरि पोढे ऊँची चित्रसारी "। सो इतनी तुक जब

भनदास जी नें गाई तब चतुर्भुजदास जी गाय उठे। " सुन्दर
न निहारन कारन, बहुत यतन राखे कर प्यारी "। ये सुनिकें
भनदास जी ने निश्चय कर्‌यो जो इनकुं श्रीगुसाईं जी की कृपा
संपूर्ण अनुभव भयो। सो बड़ी दया मान के बहोत प्रसन्न
। जा दिन तें चतुर्भुजदास कहुँ जाते अथवा नहीं जाते
वा अबार सवार आवते सो कुम्भनदास जी कछू कहते नहीं।
ा जानते जो श्रीनाथ जी संग खेलते होएँगे। सो चतुर्भुज-
स ऐसे भगवत्कृपापात्र भगवदीय हुते।

प्रसंग ४

और एक दिन श्रीगोवर्द्धननाथ जी के शृङ्गार के दर्शन
र्भुजदास जी ने कीने और श्रीगुसाईं जी आरती दिखावते
। ता समें चतुर्भुजदास जी नें ये पद गायो।

सुभग शृङ्गार निरख मोहन को ले दर्पण कर पियहि दिखावें।
पुन नेक निहारिये बलिजाऊँ आज की छवि कछू कहत न आवें"।

ता पीछे गोविंदकुण्ड ऊपर श्रीगुसाईं जी पधारे। तब एक
णव नें पूछ्यो जो महाराज चतुर्भुजदास जी नें "आज की
छि कछु बरनि न जावै" ऐसे गायो और आपतो नित्य शृङ्गार
रे हैं और आरसी दिखावें है। सो आज को अभिप्राय कछु
मझ में नहीं आयो। जब श्रीगुसाईं जी ने कही सो चतुर्भुजदास
ां पूछियो। तब वा वैष्णव नें चतुर्भुजदास सो पूंछी। जब
तुर्भुजदास जी नें और भी पद गायो। सो पद। " माईरी आज

और काल और छिन छिन प्रति और और।" ये पद सुनिके वा वैष्णव ने श्रीगुसाईं जी सो पूछ्यो जो भगवल्लीला तो नित्य है और सर्वत्र है। जब चतुर्भुजदास जी ने और और क्यों कही।

तब श्रीगुसाईं जी ने आज्ञा करी। भगवल्लीला में विलक्षण पणो येई है जो नित्य है और क्षण क्षण में नूतन लागत है और लीलास्थ जीवन कूं और लीला के दर्शन करवे वारेन कूं क्षण क्षण नूतन लगत है और नूतन रुचि उपजे है। सो गोपालदास जी नें गाये है। चौथे आख्यान में पांचमी तुक। "एक रसना किम कहूँ गुण प्रकट विविध विहार। नित्य लीला नित्य नूतन श्रुति न पामे पार।" ऐसी भगवल्लीला है। ये सुनके वो वैष्णव बहोत प्रसन्न भयो। और वे चतुर्भुजदास ऐसे कृपापात्र हुते जो जिनको नित्य लीला को अनुभव सर्वत्र हो गयो।

प्रसंग ५

एक दिन श्रीगुसाईं जी श्रीगोकुल विराजते और श्रीगिरिधर जी सों लेके सब बालक श्रीजी द्वार विराजते हते। तब उहाँ रास-धारि आये। तब श्रीगोकुलनाथ जी नें श्रीगिरिधर जी सों पूंछ के परासोली में रास करायो। और रास में खूब गान भयो। जब चतुर्भुजदास जी सुं श्रीगोकुलनाथ जी ने आज्ञा करी जो तुम कछु गावो। तब चतुर्भुजदास जी नें कही जो मेरे सुनवे वारे श्रीनाथ जी नहीं पधारे हैं जा सूं मैं कैसे गाऊँ। जब श्रीगोकुल-नाथ जी ने कही जो श्रीनाथ जी अबी पधारेंगे।

ये बात श्रीगोकुलनाथ जी की सत्य करवे के लियें श्रीनाथ जी जाग के और श्रीगिरिधर जी कुं जगाय के श्रीनाथ जी परा-सोली पधारे और श्रीगिरिधर जी पधारे और चतुर्भजदास कुं और श्रीगोकुलनाथ जी कू' दर्शन भये। और कोई कुं दर्शन भये नहीं। तब श्रीनाथजी के दर्शन करकें चतुर्भुजदास जी गावे लगे। जब अधिक सुख भयो रातहुँ बढ़ गई और चतुर्भुज-दास जी ने' गायो सोपद। "अद्भुत नट भेख धरे यमुना तट श्याम सुंदर गुण निधान गिरिवर धरन रास रंग राचें।" पद दूसरो। "प्यारी ग्रीवा भुजमेलत नृत्यत प्रिया सुजान" ऐसे ऐसे चतुर्भुजदास जी ने' बहुत पद गाये। जब रास भयो तब परम आनंद भयो।

फेर श्रीगिरिधर जी ने' श्रीनाथ जी कुं रात के जगे जान के सवारे जगाये नहीं। इतने में श्रीगुसाई' जी गोकुल तें' पधारे और पूँछी जो कहा समय है। जब श्रीगिरिधर जी ने' कही जो श्रीनाथ जी जागे नहीं है। रात कुं रास में जगे हते। जब श्री गुसाइं' जी ने' कही जो श्रीनाथ जी तो सदैव रास करें' हैं और सदैव जगें' हैं जासू' शंखनाद करावो। जब शंखनाद कराय के श्रीनाथ जी कुं जगाए। फेर श्रीगोकुलनाथ जी कुं श्रीगुसाईं' जी ने आज्ञा करी। जो ऐसो आग्रह करिके श्रीनाथ जो कुं पधरावने नहीं। एतो सदैव अपनी इच्छा तें' रास करत है जासू' बीनती करिके पधरावने नहीं। वे चतुर्भुजदास जी ऐसे कृपापात्र हते के श्रीनाथ जी के विना दूसरे ठिकाने' नहीं करत हते।

प्रसंग ६

एक दिन श्रीगुसाईं जी नें चतुर्भुजदास सो आज्ञा करी जो अपछराकुंड ऊपर जाय के रामदास भीतरीया कुं बुलाय लावो और तुम फूल ले आवो। तब चतुर्भुजदास जाय के रामदास जी कुं बुलाय के आप फूल बीनके आवते हते। जब श्रीगोवर्द्धन पर्वत की कंदरा सूं बाहेर श्रीनाथ जी श्रीस्वामिनी जी सहित पधारे और श्रीस्वामिनी जी नें मन में ये विचार कर्यो जो यह लीला कोई जाने नहीं हैं। इतने में चतुर्भुजदास जी नें दर्शन करिके ये पद गायो। "गोवर्द्धन गिरि सघन कंदरा रैन निवास कियो पिय प्यारी।" और दूसरो पद गायो। "रजनी राज कियो निकुंज नगर की रानी।" ये पद सुनके श्रीस्वामिनी जी प्रसन्न भईं। फेर चतुर्भुजदास जी फूल लेके श्रीगुसाईं जी के पास गए। सो वें चतुर्भुजदास जी ऐसे कृपापात्र हते जो श्रीनाथ जी के तथा श्रीस्वामिनी जी के मन की जानवे वारे भये।

प्रसंग ७

सो चतुर्भुजदास की बहू एक दिन श्रीनाथ जी के चरणारविंद में पहुँच गई जब चतुर्भजदास जी कुंसूतक आयो। सूतकमें चतुर्भुजदास जी बन में वैठके नित्य कीर्तन करते। तब श्रीगोवर्द्धन नाथ जी विनके चारों ओर दूर दूर खेलै करते। जब श्रीगोवर्द्धन नाथ जी नें आज्ञा करी जो चतुर्भुजदास तुम दूसरो विवाह करो। जब चतुर्भुजदास नें कही जो जात में कन्या नहीं मिले है जब

श्रीनाथ जी ने कही जो तुम धरेजा करौ। जब चतुर्भुजदास जी ने धरेजा कर्‌यो। तब श्रीगोवर्द्धन नाथ जी नित्य चतुर्भुजदास जी ऐसे अंतरंग भगवदीय हते।

प्रसंग ८

एक समय श्रीगुसाईं जी परदेस पधारे हते। तब श्रीगिरिधर जी की ऐसी इच्छा भई जो श्रीनाथ जी कुं मथुरा में अपने घर पधरावें तो ठीक। जब श्रीनाथ जी की आज्ञा लैके फागनवदी षष्टी के दिन सैन पीछे श्रीनाथ जी कुं मथुरा पधराए। और फागनवदी ७ के दिन बडो उत्सव मान्यो और जो कछु घर में हतो सो सर्वस्व अर्पण कर्‌यो! और बेटी जो ने एक बीटी धर राखी हती। बेटी जी बालक हते जासूं समझते नहीं हते। सो बिटी हूँ श्रीनाथ जी ने मांग लीना। कारण जो श्रीगिरधर जी नें सर्वस्व अर्पण करवे की प्रतिज्ञा करी हती सो प्रतिज्ञा सत्य करिवे के लिये श्रीनाथ जी ने बीटी मांग लीनी।

और नित्य चतुर्भुजदास गिरिराज जी ऊपर बैठके विरद के पद और हिलग के पद गायो करते। और श्रीनाथ जी नित्य विनकुं संध्या समें गायन के संग पधारते दर्शन देते। सो वैशाख सुदि त्रयोदशी के दिन चतुर्भुजदास जी नें ये पद संध्या समें गायो। "श्रीगोवर्द्धन वासी सांवरेलाल तुम बिन रह्यो न जाय हो।" या पद की छेली तुक श्रीनाथ जी नें पधारतें ही सुनि तब करुणा व्याकुल भये और मन में ये विचार कर्‌यो जो सर्वथा काल इहां

पधारूँगो जासूं भक्त को दु:सह दु:ख देखके श्रीनाथ जी से रह्यो न गयो।

जब रात्र एक प्रहर रही तब श्रीनाथ जी ने वैशाख सुदि चौदस के दिन श्रीगिरिधर जी कुं आज्ञा करी जो आज गोवर्द्धन पर्वत ऊपर राजभोग अरोगुंगो जब श्रीगिरिधर जी नें मंगला करायके श्रीनाथ जी कुं पधराए। और पहेले मनुष्य पठाय के मंदिर खासा करायो और श्रीनाथ जी कुं पधारते अबार होय गई। जासूं राजभोग तथा शयनभोग एक समय में आरोगे। वा दिनकूं आज दिन पर्यंत नृसिंघ चतुर्दशी के दिन श्रीनाथ जी दोय समें राजभोग अरोगें हें। एक तो नित्य के समें और एक शयन-भोग के संग। वे चतुर्भुजदास श्रीनाथ जी के ऐसे कृपापात्र हते जो तिन विना श्रीनाथ जी सों रह्यो न गयो।

प्रसंग ९

एक समय चतुर्भुजदास श्रीगुसाईं जी के संग श्रीगोकुल गए और श्रीनवनीत प्रिया जी के दर्शन करे और बाललीला के तथा पालने के कीर्तन करे। और दर्शन करके फेर गोपालपुर आए जब कुम्भनदास नें पूंछ्यो जो कहाँ गयो हतो। तब विननें कही श्रीगोकुल गयो हुतो।

जब कुम्भनदास जी नें श्रीगुंसाईं जी सों पूछी जो प्रमाण प्रकर्ण की लीला और प्रमेय प्रकर्ण की लीला में कितनो भेद है। जब श्रीगुसाईं जी नें कही जो भगवल्लीला सब एक समान है।

कुम्भनदास जी कुं किशोर लीला में बहोत आसक्ती हे जासूं ऐसे बोले भगवल्लीला में भेद समझनो नहीं और श्रीठाकुर जी विरुद्ध धर्म आश्रय हें। एक कालावाच्छिन्न श्रीप्रभु सर्वत्र सब लीला करत हैं। ये सुनके चतुर्भुजदास जी बहोत प्रसन्न भए। वे चतुर्भुजदास श्रीगुसाईं जी के ऐसे कृपापात्र हते। जिनसूं श्री-गुसाईं जी कछू गुप्त नहीं राखते हते।

प्रसंग १०

और चतुर्भुजदास जी के पाछें चतुर्भुजदास जी के बेटा राघोदास हते। सो विनकुं भगवल्लीला को अनुभव भयो जब राघोदास जी ने धमार गाई। सो धमार। "ए चल जाएँ जहाँ हरि क्रीडत गोपिन संगा।" ये धमार की जब दस तुक भई तब राघोदास की देह छूटी। सो भगवल्लीला में प्रवेश भयो। राघोदास जी की बेटी ने डेढ़ तुक धर के धमार पूरी करी। वे चतुर्भुज-दास तथा विनके बेटा विनकी बेटी ये सब ऐसे कृपापात्र हते। ताते इनकी वार्ता कहाँ ताईं लिखिये ॥ प्रसंग ॥ १० ॥ वार्ता संपूर्ण वैष्णव ॥ २ ॥

नोट :—चतुर्भुजदास की वार्ता में तथा 'दो सौ बावन वैष्णवन की वार्ता' में अन्य स्थलों पर भी गोकुलनाथ का नाम इस तरह आया है कि इस ग्रंथ के गोकुलनाथ कृत होने में सन्देह होने लगता है। 'चोरासी वार्ता' में ऐसे उल्लेख नहीं मिलते।

श्रीगुसाईं जी के सेवक छीत स्वामी चौबे तिनकी वार्ता

—:o:—

प्रसंग १

सो वे छीत स्वामी मथुरा में रहते हते। और मथुरा जी में पाँच चौबे बड़ा गुंडा हते। और ठगाई करते और छीत चौबे तिन पाँचन में मुख्य हतो। सो तिनने विचार कर्‍यो जो कोई गोकुल में जाय है सो श्रीविट्ठल नाथ जी के बस होय जाय है। जासूं ऐसो दीसे है जो श्रीविट्ठल नाथ जी जादू टोना बहोत जाने हैं। परन्तु हमारे ऊपर चले तब साँची मानें। ये विचार पांचौ चौबेन नें कर्‍यो।

तब एक खोटो नारियल और खोटो रुपैया लैके पाँचों चौबे श्रीगोकुल आये। तब चार चौबे तौ बाहरे बैठ रहे और मुख्य जो छीत चौबे हतो तिनकुं भीतर पठायो। सो वे छीत चोबा नें खोटो नारियल तथा खोटो रुपैया जायके भेट धर्‍यो। तब श्रीगुसाईं जी नें खवाससूं आज्ञा करी जो या रुपैया के पैसा ले आव। जब रुपैया के पैसा आए और नारियल फोड्यो तब सुफेद गरी निकसी। तब छीत स्वामी देखिके मन में विचारी जो ये तो साक्षात् ईश्वर हैं। जब छीत स्वामी ने कही जे महाराज शाकुं शरण लेओ। जब श्रीगुसाईं जी ने छीत स्वामी कुं नाम सुनायो। पाछे श्रीनवनीत प्रिया जी के दर्शन करवे कुं गये।

भीतर देखें तो श्रीगुसाईं जी विराजे और बाहेर आयके देखे तो विराजे हैं। जब छीत स्वामी नें विचारी जो श्रीगुसाईं जी की ईश्वरता जीव सों जानीं नहीं जाय है।

जब वे चार चोवे बाहर बेठे हते विनने छीत स्वामी कुं बुलाये। तब श्रीगुसाईं जी ने आज्ञा करी जो तुमारे संगी बाहेर तुमकुं बुलावत हे सो तुम जाओ। तब छीत स्वामी नें बाहर आयके चारौ चौवान से कही मोकुं टोना लग गयो हे तुम भाग जावो। नहिं तो तुम को लग जायगो। ये सुनके चारौ चौवे भाग गये। छीत स्वामी नें एक पद करिके गायो।

राग नट

भई अब गिरधर सों पहेचान।
कंपट रूप छलवे आयो पुरुषोत्तम नहिं जान॥ १॥
छोटो बड़ो कछू नहिं जान्यो छाय रह्यो अज्ञान।
छीत स्वामी देखेत अपनायौ श्रीविट्ठल कृपानिधान॥२॥

ये पद सुनि के श्रीगुसाईं जी प्रसन्न भए। और छीत स्वामी कुं साक्षात् कोटि कंदर्प लावण्य पूर्ण पुरुषोत्तम के दर्शन भये। और भगवल्लीला को अनुभव भयो और श्रीगुसाईं जी तथा श्रीठाकुर जी के स्वरूप में अभेद निश्चय भयो, दोनों स्वरूप एक हैं ऐसे जानन लागे।

तब छीत स्वामी गोपालपुर श्रीनाथ जी दर्शन कुं गये। उहाँ श्रीनाथ जी के पास श्रीगुसाईं जी कुं देखे। जब बाहेर निकसवे

पूँछी जो श्रीगुसाईं जी कब पधारयो है। तब उहाँ के लोगन नें कही जो श्रीगुसाईं जी तो गोकुल बिराजे है। जब छीत स्वामी उहाँ ते श्रीगोकुल में आयके श्रीगुसाईं जी के दर्शन किये। जब छीत स्वामी नें ये निश्चय कियो जो श्रीनाथ जी तथा श्रीगुसाईं जी एक ही स्वरूप है। जब सुं छीत स्वामी जी नें "गिरिधरन श्रीविट्ठल" ऐसी छाप के बहुत पद गाए। सो वें छीत स्वामी ऐसे कृपापात्र भगवदीय हते।

प्रसंग २

सो वे छीत स्वामी बीरबल के पुरोहित हते सो वे बीरबल के पास बसौंधी लेवे कुंगए। तब सवार के समें छीत स्वामी नें यह पद गाये।

"जे बसुदेव लिये पूरण तप, सोई फल फलित श्रीवल्लभ देह।"

ये पद सुनिके बीरबल बोले जो मैं तो वैष्णव हूँ परन्तु ये बात देशाधिपति सुनेंगे तो तुम कहा जबाब देओगे वे तो मलेच्छ है। तब छीत स्वामी बोले जो देशाधिपति पूछेंगे तो मैं नीके जबाब देउँगो और मेरे मन सूं तो तूही मलेच्छ है। आज पीछे तेरो मुख न देखूंगो ऐसे कहेके छीतस्वामी चले गए।

जब ये बात देशाधिपति नें सुनी तब बीरबल सूं पूँछो जो तुमारे पुरोहित क्यों रिसाय गए। तब बीरबल नें सब बात देशाधिपति आगे कही। ब्राह्मण लोग वृथा रिस बहुत करे है। तब देशाधिपति नें कही जो तुम और हम नाव में बैठे हते जब

दीक्षित्त जी नें मोकुं आशीर्वाद दियो हतो। तब मैंनें मणी भेट करी हती। वे मणी कैसी हती जो पाँच तोला सोना नित्य देती हती। सो वे मणी दीक्षित जी ने श्रीयमुना जी में फाटक दीनी। जब मेरे मन में बड़ो गुस्सा लग्यो तब मैनें मणी पाछी माँगी। तब दीक्षित जी नें श्रीयमुना जी में सुं खोच भरिके मणी काढ़ी तब हमकुं कही तुमारी होय सो पहिचान लेश्रो जब हमकुं यह निश्चय भयो ये साक्षात् ईश्वर है ईश्वर विना ऐसो कारज नहीं होयगो। ये बात विचार करतें तुमारे पुरोहित की सब बात साची है सो तुमनें क्यों विचार कर्यौ। ये बात सुनिके बीरबल बहोत खिसातो भयो। और कछू बोल्यों नहीं।

और ये बात श्रीगुसाईं जी नें सुनी तब लाहोर के वैष्णव आये हते तिनसों आज्ञा करी जो छीत स्वामी की खबर राखते रहियौ। जब छीत स्वामी बोले जो मैंने वैष्णवधर्म विक्रय करवेकुं लियौ नहीं है। मेरो तो विश्रांत घाट है सो आपकी कृपा सों सब चलेगो। ये बात सुनके श्रीगुसाईं जी बहोत प्रसन्न भये।

प्रसंग ३

और एक दिन बीरबल देशाधिपति सों रजा लेके श्रीगोकुल में जन्म अष्टमी के दर्शन कुं आयो। पाछे वेष पलटाय के देशाधिपति हूँ छाने छाने आयो। तब जन्माष्टमी के पालना के दर्शन करे मनुष्य की भीड़ में। तब देशाधिपति कुं श्रीगुसाईं जी बिना और कोई नें पहिचान्यो नहीं। तब छीत स्वामी कीर्तन करते हते

और श्रीगुसाइँ जी श्रीनवनीत प्रिया जी कुं पालना झुलावते हते। तब छीत स्वामी नें ये पद गायो।

प्रिय नवनीत पालनें झूले श्रीविट्ठलनाथ झुलावै हो।
कबहुँक आप संग मिल झूलै कबहुँक उतर झुलावै हो॥ १॥
कबहुँक सुरंग खिलोना लै लै नाना भाँति खिलावै हो।
चकई फिरकनी ले विंगीटु झुणझुण हात बजावें हो॥ २॥
भोजन करत थाल एक झारी दोउ मिल खाय खवावें हो।
गुप्त महारस प्रकट जनावे प्रीति नई उपजावें हो॥ ३॥
धन्य (ध) न्य भाग्य दास निज जनके जिन यह दर्शन पाए हो।
छीत स्वामी गिरधरन श्रीविट्ठल निगम एक कर गाएं हो॥ ४॥

ऐसे दर्शन छीत स्वामी कुं भए। और देशाधिपतीकुं हूँ ऐसे दर्शन भए। और मनुष्यनकुं साधारण दर्शन भए। तब देशाधिपतिकुं महाप्रसाद दिवाये।

तब देशाधिपती आगरे आये। फेर दूसरे दिन बीरबल हूँ आए। तव देशाधिपती नें बीरबल सूं पूछी जो कहा दर्शन किये। तव बीरवल ने कही श्रीनवनीत जी पालना झूलते हते और श्रीगुसाईं जी झुलावते हते। तव देशाधिपती ने कही ये बात झूठी है। श्रीगुसाईं जी पालना झूलते हते और/श्रीनवनीत प्रिया जी झुलावते हते मोकुं ऐसे दर्शन भए हैं। और छीत स्वामी तुमारे पुरोहित ऐसे कीर्तन गावते हते। और मैं तेरे पास ठाड़ो हते। तब बीरबल नें कही मोकुं ऐसे **दर्शन क्यूं** नहीं भये। **तब**

देशाधिपति नें कही तुमकुं गुरू के स्वरूप को ज्ञान नहीं है और तुमारे पुरोहित छीत स्वामी जिनकुं इन बात को अनुभव है ऐसेन सों तुमारी प्रीती नहीं है। जब तुमकूं ऐसे दर्शन काहेकुं होवें। सो वे छीत स्वामी ऐसे कृपापात्र हते। वार्ता संपूर्ण। वैष्णव ॥२॥

श्रीगुसाईं जी के सेवक गोविंद स्वामी सनाढ्य ब्राह्मण महावन में रहते तिनकी वार्ता

—:०:—

प्रसंग १

प्रथम गोविंददास आंतरी गाम में रहते। तहाँ गोविंद स्वामी कहावते। और आप सेवक करते। गोविंददास परम भगवद्भक्त नित्य याही रीती सो रहते। जो श्रीभगवत् चरणारविंद की प्राप्ति केसें होय याही वात की तलासी करत रहते हते।

एक समय गोविंददास आंतरी गाम ते व्रज कों आये। और महावन में आयके रहे। काहे तें यह व्रजधाम है। इहाँ भगवत् चरणारविंद की प्राप्ति होयगी। और गोविंददास कवि हते। सो आप पद करते। सो जो कोऊ इनके पद सीख कें श्रीगुसाईं जी के आगे आय कें गावें। तिनके ऊपर श्रीगुसाईं जी प्रसन्न होते। सो गावनहारे गोविंद स्वामी के आगे आयकें कहते। जो तुमारे पद सुनके श्रीगुसाईं जी बहुत प्रसन्न होंत हें। ये वार्ता सुनि गोविंद स्वामी नें ऐसो विचार कियो जो श्रीगुसाईं जी कूं मिलें तो ठीक।

तब एक समय श्रीगुसाईं जी को सेवक महावन गयो हतो। सो भगवदिच्छा ते श्रीगुसाईं जी के सेवक को और गोविंद स्वामी को मिलाप भयो। वा वैष्णव की गोविंद स्वामी की आपस में

बातचीत भई। जब गोविंद स्वामी नें कही के श्रीठाकुर जी को अनुभव कैसे होय। जो मोकुं बहुत दिन सों या बात की आतु-रता है तातें कहो। तब वा वैष्णव ने गोविंद स्वामी की आतु-रता देखिके कह्यो। जो आजकल श्रीठाकुर जी कुं श्रीविट्ठल नाथ श्रीगुसाइँ जी नें बसकर राखे हैं। तातें श्रीठाकुर जी और ठौर कहुँ जाय सकत नहीं। श्रीठाकुर जी तो श्रीगुसाईं जी के हाथ हैं। सो यह सुनके गोविंद स्वामी कुं अति आतुरता भई। तब गोविंद स्वामी नें उन वैष्णव सों कहीं। जो मोकुं श्रीगोकुल में श्रीगुसाईं जी के पास ले चलो। तब उहाँ से उठे सो श्रीगोकुल में आये।

तब श्रीगुसाईं जी ठकुरानी घाट ऊपर संध्या तर्पण करत हते। वा वैष्णव नें गोविंद स्वामी कुं श्रीगुसाईं जी को दर्शन करायो। गोविंद स्वामी दर्शन करिके मन में समझें ये कर्म मार्गीय दीखत हैं। सो कहा कारण होयगो। तब गोविंद स्वामी कुं देखके श्रीगुसाईं जी बोले जो आवो गोविंद स्वामी बहुत दिन सूं देखे। तब गोविंद स्वामी नें कही महाप्रभू अब ही आयो हूँ। तब गोविंद स्वामी नें अपने मन में विचार किये की आपने मोकुं कोई दिन देख्यो नहीं हें सो कैसे जान गये। यामें कछु कारण दीसत है।

जब श्रीगुसाईं जी मंदिर में पधारे। तब गोविंद स्वामी नें बीनती करी हे महाप्रभू मोकुं कृपा करिके शरण लेओ। तब श्रीगुसाईं जी नें कही न्हाय आवो। तब वे न्हाय आये। तब

श्रीनवनीत प्रिया जी के संनिधि में नाम निवेदन करायो। तब गोविंद स्वामी कूं साक्षात् पूर्ण पुरुषोत्तम कोटिकंदर्प लावण्य के दर्शन भये। और सब लीलान को अनुभव भयो। श्रीगुसाईं जी श्रीनवनीत प्रिया जी की सेवा करके बाहिर पधारे। तब गोविंद स्वामी नें बीनती करी। जो आपनो कपट रूप दिखावत हो। साक्षात पूर्ण पुरुषोत्तम रूप होय के वेदोक्त कर्म करत हो। सो हम जैसेन कूं मोह होय है, जब श्रीगुसाईं जी ने आज्ञा करी। जो भक्ति है सो फूल को वृक्ष है, और कर्म मार्ग है सो कांटन की बार है। तासूं कर्म मार्ग की बार बिना भक्ति मार्ग जो फून को वृक्ष वाकी रक्षा न होय। ये सुनके गोविंद स्वामी बहुत प्रसन्न भये। गोविंद स्वामी ऐसें कृपापात्र भगवदीय भये।

प्रसंग २

सो गोविंददास महावन के टेकरा पर रहत हते। और नये कीर्तन करके गावत हते और वहाँ श्रीठाकुर जी सुनवेकुं पधारते हते। जब वहाँ मदनगोपालदास कायथ कीर्तन लिखिवेकुं आवते हते। सो एक दिन श्रीठाकुरकुं गोविंदस्वामी नें कही। इहाँ ताँई आप नित्य श्रम करो हो। सो आपको गान सुनवे की बहुत इच्छा दीखे हैं। आपकुं गान को अभ्यास है। यातें आपकुं कछु गायो चाहिये। तब आपनें कछु गान कियो। तब गान सुनके श्रीस्वामिनी जी पधारी। जब ताल स्वर बरोबर बजावे लगे तब गोविंदस्वामी धन्य-धन्य कहन लगे। और आपनें भाग्य की सराहना करन लगे।

जब मदनगोपालदास कायथ बोले। जो इहाँ कोई आदमी
दिसे नहीं है। तुम कौनसूं बात करत हो। तब गोविंदस्वामी
छु बोले नहीं। बात गुप्त राखी। पाछे एक दिन श्रीगुसाईं जी नें
छी जो श्रीठाकुर जी कैसे गावें हैं। तब गोविंदस्वामी नें कही
ीठाकुर जी बहोत आछे गावें हैं। परंतु ताल स्वर श्रीस्वामिनी
ी बहोत आछो देत हैं। ये सुनके श्रीगुसाईं जी मुसकाय के चुप
ोय रहे।

प्रसंग ३

सो गोविंदस्वामी जब श्रीगोकुल में रहते हुते। सो उहाँ
आंतरिगाम में पहले गोविंदस्वामी के सेवक हते सो श्रीगोकुल
आये। सो पूछत पूछत विनके पास गये। जायके पूँछी जो
गोविंदस्वामी कहा हैं। तब विननें कही गोविंदस्वामी मर गये।
तब तिनमें सुं एक पहेचानतो हतो जब वानें कही आप क्यों
हमारी हाँसी करो हो। जब गोविंदस्वामी नें कही हमने स्वामी-
पनो छोड़ दियो। जासुं तुम ऐसे समझो जो मर गये हैं। जब
विननें बीनती करी जो अब हम सेवक कौनके होंय। जब गोविंद
स्वामी नें विनकुं ले जायके श्रीगुसाईं जी के सेवक कराये। सो
गोविंदस्वामी के संग सो विनकुं भगवत्प्राप्ती भई। जिनके संग
ते सहज भगवत्प्राप्ती होवै विनकी कृपातें कहा न होवै सब होवै।
विनिकी बात कहा कहिये।

प्रसंग ४

सो वे गोविंदस्वामी श्रीगोकुल में रहते। परन्तु श्रीयमुना जो

में पाँव नहिं देते। श्रीयमुना जी कुं साक्षात् श्रीस्वामिनी जी अष्टसिद्धी के दाता जानते। जैसो स्वरूप श्रीमहाप्रभू जी नें यमुनाष्टक में वर्णन कियो है। वैसे श्रीगुसाईं जी की कृपा से गोविंदस्वामी जानते हते जासुं श्रीयमुना जी में पाँव नहीं धरते हुते। और श्रीयमुना जी के दर्शन करते, और दंडवत करते, और पान करते।

सो एक दिन श्रीबालकृष्ण जी और श्रीगोकुलनाथ जी गोविंद-स्वामीकुं पकड़ के श्रीयमुना जी में नहायवे लगे। जब गोविंद-स्वामी नें बीनती करी जो ये मल मूत्र को भर्यो देह श्रीयमुना जी के लायक नहीं है। श्रीयमुना जी साक्षात् स्वामिनी हैं। जासूं ये अधम देह स्पर्श करवे योग्य नहीं है। श्रीयमुना जी कुं तो उत्तम सामग्री चहिये। ये सुनके श्रीबालकृष्ण जी और श्रीगोकुल नाथ जी चुप कर रहे। सो वे गोविंदस्वामी ऐसो स्वरूप श्रीयमुना-जी को जानत हते।

प्रसंग ५

गा गोपकैरनुवनं नयनो सदार
वेण्णुस्वनैः कलपदैस्तनुभृत्सूसख्यः।
अस्पंदनं गतिमतां पुलकस्तरूणां
निर्योगपाश कृत लक्षणयोर्विचित्रं॥

या श्लोक को व्याख्यान श्रीगुसाईं जी गोविंदस्वामी के आगे कहवे लगे। जब कहते कहते अर्धरात्र बीती तब श्रीगुसाईं जी पोढे। गोविंदस्वामी घरकूं चले। तब श्रीबालकृष्ण जी तथा

श्रीगोकुलनाथ जी तथा श्रीरघुनाथ जी तीनो भाई वैष्णवन के मंडल में विराजत हते।

जब गोविंद स्वामी नें जायके दंडवत करी। तब श्रीगोकुलनाथ जी नें पूछे जो श्रीगुसाइं जी के इहाँ कहा प्रसंग चलतो हतो। जब गोविद स्वामी नें ये श्लोक की सुबोधिनी जी को प्रसंग कह्यो। फिर कह्यो आपको व्याख्यान आप करें यामें कहा केहेनो। जाके स्वरूप को वेद हूँ नहीं जान सकें वाको व्याख्यान वे आप ही करें तब होय। जब ऐसो कह्यौ तब श्रीगोकुलनाथ जी नें दोनो भाइन सों कही जो गोविद स्वामी श्रीनें गुसाइं जी को स्वरूप कैसो जान्यो है। और इनके ऊपर आपनें कैसी कृपा करी है सो इनके भाग्य को कहा वर्णन करिये ये कहिके श्रीगोकुलनाथ जी चुप होय रहै॥

प्रसंग ६

सो गोविद स्वामी श्रीनाथ जी के संग खेलते हते। सो एक दिन अपछरा कुण्ड सों गोवर्द्धन पर्वत ऊपर होय कें श्रीगोवर्द्धननाथ जी के संग गोविददास आवते हते। वहाँ से राजभोग की आरती भई ऐसी आवाज सुनी। जब गोविद स्वामी नें कहि श्रीनाथ जी तो अबी आवत हैं। राजभोग कौन नें अरोगे हें। श्रीगुसाईं जी नें दूसरो राजभोग सिद्ध कराय के धरायो।

और गोपालदास भीतरिया नें श्रीगुसाईं जी सो बीनती करी। जो एक दिन पंछरी की औरतें गोविददास श्रीनाथ जी के

संग आवते मेंने देखे हते । जब श्रीगुसांई जी नें कही । जो कुम्भनदास तथा गोविंद स्वामी तथा गोपिनाथ दास ग्वाल ये तीनो श्रीनाथ जी के एकांत के सखा हैं । सो इनकुं अधिकार श्रीमहाप्रभू जी नें दियो है । ये बात सुनके गोपालदास जी बहुत प्रसन्न भये और अपने मन में कहेवे लगे । जो हम भितरिया भये तो कहा भयो । सो वे गोविंद स्वामी ऐसे भगवदीय कृपा-पात्र हते ।

प्रसंग ७

सो एक दिन गोविंद स्वामी उत्थापन के समें श्रीनाथ जी के दर्शन कुं गये । जब देखें तो श्रीनाथ जी के पाग के पेच खुल रहे हते । तब गोविंद स्वामी नें कही कें पाग के पेच क्यो खोल डारे हैं । जब श्रीनाथ जी नें कही तू पाग के पेंच संवारि दे । तब गोविंद स्वामो नें भीतर जाइके पाग के पेंच संवार दिये । तब भीतरिया नें श्रीगुसांई जी सों कही जो गोविंददास नें अप-रस छिवाय दीन्ही है । पाछें श्रीगुसांई जी नें आज्ञा करि जो गोविंददास सें श्रीनाथ जी नहीं छुआय जाय । ये तो श्रीनाथ जी के सग सदैव खेलें हैं । सो गोविंद स्वामी ऐसे कृपापात्र हते ।

प्रसंग ८

एक दिन श्रीगुसांई जी श्रीनाथ जी को शृङ्गार करत हते । तब गोविंदस्वामी जगमोहन में कीर्तन करत हते । तब श्रीनाथ जी नें गोविंददास कुं आठ कांकरी मारी । जब गोविंदस्वामी नें

श्रीगोकुलनाथ जी तथा श्रीरघुनाथ जी तीनो भाई वैष्णवन के मंडल में विराजत हते।

जब गोविंद स्वामी नें जायके दंडवत करी। तब श्रीगोकुल नाथ जी नें पूछे जो श्रीगुसाईं जी के इहाँ कहा प्रसंग चलतो हतो। जब गोविद स्वामी नें ये श्लोक की सुबोधिनी जी के प्रसंग कह्यो। फिर कह्यो आपके व्याख्यान आप करें यामें कहा केहेनो। जाके स्वरूप को वेद हूँ नहीं जान सकें वाको व्याख्यान वे आप ही करें तब होय। जब ऐसो कह्यौ तब श्रीगोकुलनाथ जी नें दोनो भाइन सों कही जो गोविद स्वामी श्रीनें गुसाइं जी को स्वरूप कैसो जान्यो है। और इनके ऊपर आपनें कैसी कृपा करी है सो इनके भाग्य को कहा वर्णन करिये ये कहिके श्रीगोकुल नाथ जी चुप होय रहे॥

प्रसंग ६

सो गोविद स्वामी श्रीनाथ जी के संग खेलते हते। सो एक दिन अपछरा कुण्ड सों गोवर्द्धन पर्वत ऊपर होय कें श्रीगोवर्द्धन नाथ जी के संग गोविददास आवते हते। उहाँ से राजभोग की आरती भई ऐसी आवाज सुनी। जब गोविद स्वामी नें कहि श्रीनाथ जी तो अवी आवत हैं। राजभोग कौन नें अरोगे हैं। श्रीगुसाईं जी नें दूसरो राजभोग सिद्ध कराय के धरायो।

और गोपालदास भीतरिया नें श्रीगुसाईं जी सो बीनती करी। जो एक दिन पंछरी की औरतें गोविददास श्रीनाथ जी के

संग आवने मैंने देखे हते। जब श्रीगुसांई जी नें कही। जो कुम्भनदास तथा गोविंद स्वामी तथा गोपिनाथ दास ग्वाल ये तीनो श्रीनाथ जी के एकांत के सखा हैं। सो इनकुं अधिकार श्रीमहाप्रभू जी नें दियो है। ये बात सुनके गोपालदास जी बहुत प्रसन्न भये और अपने मन में कहेवे लगे। जो हम भितरिया भये तो कहा भयो। सो वे गोविंद स्वामी ऐसे भगवदीय कृपा-पात्र हते।

प्रसंग ७

सो एक दिन गोविंद स्वामी उत्थापन के समें श्रीनाथ जी के दर्शन कुं गये। जब देखें तो श्रीनाथ जी के पाग के पेच खुल रहे हते। तब गोविंद स्वामी नें कही कें पाग के पेच क्यो खोल डारे हैं। जब श्रीनाथ जी नें कही तूं पाग के पेंच संवारि दे। तब गोविंद स्वामी नें भीतर जाइके पाग के पेंच संवार दिये। तब भीतरिया नें श्रीगुसांई जी सों कही जो गोविंददास नें अप-रस छिवाय दीन्ही है। पाछें श्रीगुसांई जी नें आज्ञा करि जो गोविंददास सें श्रीनाथ जी नहीं छुआय जाय। ये तो श्रीनाथ जी के संग सदैव खेलें हैं। सो गोविंद स्वामी ऐसे कृपापात्र हते।

प्रसंग ८

एक दिन श्रीगुसांई जी श्रीनाथ जी के शृंगार करत हते। तब गोविंदस्वामी जगमोहन में कीर्तन करत हते। तब ... जी नें गोविंददास कुंआठ कांकरी मारी। सो ...

एक कांकरी मारी। तब श्रीनाथ जी चमक उठे। जब श्रीगुसांई जी नें कही गोविंददास यह कहा कियो। तब गोविंदस्वामी नें कही। हे महाराज आपको तो पूत और को मूली कर। जो आठ वखत मोकुं कांकरी मारी जब आप कछु नहीं बोले। ये सुनके श्रीगुसांई जी चुपकरि रहे। सो गोविंददास जी कूं ऐसो सखा भाव सिद्ध भयो हतो।

प्रसंग ९

एक दिन गोविंददास की बेटी देस में सो आई। परन्तु गोविंदस्वामी कोई दिन वा बेटी सु बोले नहीं। जब कान्हबाई नें कही जो बेटी सु एक दिन तौ बोलो। तब विननें कहो जो मन तो एक है इनको लगाऊँ के उनको लगाऊँ। फेर कछू दिन रहि के बेटी देस कुं जावे लगी। जब बहु बेटिन नें साड़ी चोली पठाई। तब गोविंद स्वामी के मन में दया आई। जो गुरु के घर को अनप्रसादी लेवेगी तो याकौ बिगार होयगो। वे गोविंद स्वामी कोई दिन बेटी से बोलते न हते। तो परन्तु दया के लियें बोले जो तूं ये लेवेगी तो तेरौ बुरो होयगो। जब बेटी नें कही मोकुं समज नहीं हती। तो मोकुं तुमनें बड़ी कृपा करिके रस्ता बतायो। तब वे सब कपडा पाछे पठाय दिये। बेटी अपने घर कों गई। सो वे गोविंद स्वामी गुरु की अंश सो ऐसे डरपत हते।

प्रसंग १०

और फागन के दिन हते। सो सेन भोग सरायकें श्रीगुसांई ...ावत हते। तब गोविंद स्वामी धमार गावत हते।

सो धमार श्रीगोवरधनराय लाला। ये धमार पूरी करे बिना गोविद स्वामी चुप कर रहे। जब श्रीगुसाईं जी ने आज्ञा करी गोविंददास धमार पूरी करो। तब गोविंद स्वामी नें कही महाराज धमार तो भाज गई है। वे तो घर में जाय घुसे। खेल तो बंद भयो अब कहा गावू। ये सुनके श्रीगुसाईं जी चुप कर रहे। पाछे बैठक में पधारे। जब एक तुक आपनें बनाय के गोविंद स्वामी के नाम की वा धमार में धरी। वा दिन सूं गोविंद स्वामी की धमार लोक में साढ़े बारह कही जाय है। सो गोविंद स्वामी ऐसे कृपापात्र हते। जो लीला के दर्शन करिकें गान करते हते॥

प्रसंग ११

सो वे गोविंद स्वामी महावन के टेकरा पर नित्य गान करते हते। श्रीनाथ जी नित्य सुनिवे कुं पधारते हते। और श्रीनाथ जी संग गानहूँ करते हते। और वे गोविंद स्वामी भगवल्लीला में अष्ट सखान में हते। सो कोई समें श्रीनाथ जी चूकते सो गोविंद स्वामी भूल काढ़ते। और गोविंद स्वामी चूकते जब श्रीनाथ जी भूल काढते। श्रीनाथ जी तथा गोविंद स्वामी के गान सुनिवे के लिये श्रीगोकुलनाथ जी नित्य पधारते और एक मनुष्य बैठाय राखते। जो श्रीगुसांई जी भोजन करवें कुं पधारें तब मोकुं बुलाय लीजो।

एक दिन वा मनुष्य के मन में ऐसी आई। जो श्रीगोकुलनाथ जी नित्य श्रीगुसांई जी सों छाने पधारते हैं। एक दिन

मैं न बोलाओं तो गुसाई जी सब जान जाएंगे। जब श्रीगोकुल नाथ जी तो नित्य जाते बंद होय जाएंगे। समझके वे मनुष्य एक दिन बुलायवे न गयौ। जब श्रीगुसांई जी भोजन को पधारवे लगे। तब सब लाल जी आए। श्रीगोकुल नाथ जी न आए। तब श्रीगुसांई जो नें दूसरे मनुष्य कुं आज्ञा करी जो गोविंद स्वामी के पास बल्लभ जी बैठें हैं तिनको बुलाय लाव।

जब दूसरो मनुष्य लायो तब वे मनुष्य जो जान के बोलावे नहीं गयो हतो सो पश्चात्ताप करने लग्यो। जो श्रीगुसांई जी तो सब जानते हैं, मैंने काहे को श्रीगोकुल नाथ जी सों कुटिलता करि ऐसो पश्चात्ताप भयो। सो वे गोविंद स्वामी ऐसो कृपापात्र हते। जो तिनके संग श्रीनाथ जी क्षण क्षण आयके बिराजते हते।

प्रसंग १२

वे गोविंद स्वामी पाग आछी बाधते हते। सो टूक टूक पाग होती तब कोई कुं खबर न हती। जब एक दिन एक ब्रजवासी नें गोविंद स्वामी की पाग आछो जान के उतार लीनी। तब गोविंद स्वामी नें कही सारे यें टूक संभार के धर राखियो काल्ह तेरे घर कुं आयके ले जाऊँगो। वे ब्रजवासी नें पाँव पर के पाग पाछी दीनी। वे गोविंददास कुं पाग बाधवे की ऐसी चतुराई हती।

प्रसंग १३

सो गोविंददास नित्य जसोदा घाट पर जाय बैठते। सो उहाँ एक दिन एक बैरागी गायवे लग्यो। सो राग ताल स्वर हीन

हतो। जब गोविंद स्वामी नें कही जो तु मत गावै या गायिवे सों कहा होत है। तब वा बैरागी नें कही मैं तो मेरे राम को रिझावत हो। जब गोविंद स्वामी नें कही राम तौ चतुर शिरोमणी है सो कैसे रीझेंगे। जो तेरो साचो भाव होय तौ मन में नाम लिये सो रीझेंगे। सो वे गोविंद ऐसे नि:शंक हते।

प्रसंग १४

सो एक दिन श्रीनाथ सामढाक के ऊपर चढिके विराजते हते और मुरली बजावत हते, और गोविंददास दूर सों टेकरा के ऊपर बैठे देखते हते। और वाही समय श्रीगुसाईं जी न्हाय कें उत्थापन करवे के लिये श्रीगिरिराज ऊपर पधारे। श्रीनाथ जी ने सामढाक पैं सु देखे और उतावल सों कूदे और बागा को दावन फट गयो और लीर झाड पैं रहि गई। तब श्रीगुसाईं जी नें केवार खोलि के उत्थापन करे देखें तो बागा को दांवन फट्यो है। जब मनुष्यन सों पूछो जो इहां कोई आयो तौ नहीं हतो। तब सबनें नाहीं कही। जब आप विचार करवे लगे।

तब गोविंददास नें कही जो आप या बात को विचार कहा करे हैं। लरिका को सुभाव जाने नहीं है। जो बहुत चंचल है स्यामढाक पैं सु कूदि के बागा को दांमन फाड्यो है। सो आप चलो तो दिखाऊँ ऐसे लीर लटक रहो है। जब श्रीगुसाईं जी पधार के वा लीर उतारि लाये। श्रीगुसाईं जो श्रीनाथ जी सों पूछी जो आपने उतावल काहे कों करी। तब श्रीनाथ जी

नें कही जो उत्थापन को समय भयो हतो। और आप न्हाय के पधारे हते जासूं उतावल भई। वा दिन तें ऐसौ बंदोबस्त कर्‌यौ जो तीन वेर घंटानाद तथा तीन वेर शंखनाद करि के और बीस पल रहिके मंदिर के किंवार खोल के उत्थापन करनें। सो वे गोविंददास ऐसे परम कृपापात्र भगवदीय हते।

प्रसंग १५

एक दिन आगरे में अकबर पातशाह नें सुन्यो जो गोविंद स्वामी बहुत आछे गावत हैं और निरपेक्ष हैं और निःशंक हैं। जब इनके मुख को राग कैसे सुन्यो जाय। ये विचार करिके पातशाही वेष पलटके श्रीगोकुल में इकेले आए। जब गोविंददास जसोदा घाट पर भैरव राग अलापत हते तब वा पातशाह नें वाहवा वाहवा करी। जब गोविंददास नें कही ये राग छी गयो। जब वानें कही जो मैं पातशाह हूँ। जब विनने कही जो तुम पातशाह हो तो पातशाही करौ। परन्तु ये राग तो तुमारे सुनवे सूं छिवाय गयो। जब पातशाह ने विचार कर्‌यो एक देस को मैं राजा हूँ और इनको तो त्रिलोकी को वैभव फीको लगे है। जासूं ये काहे कूं आपने हुकुम में रहेंगे। ये विचारिके पातशाह चले गये। और गोविंद स्वामी नें वा दिन सूं भैरव राग गायो नहीं। वे गोविद स्वामी ऐसे टेकी भगवदीय हते।

प्रसंग १६

और वे गोविंद स्वामी के संग श्रीनाथ जी नित्य वन में

खेलते। और कोई दिन गोविंददास को घोडा करते और कोई दिन हाथी करते। ऐसे नित्य क्रीडा करते। सो एक दिन श्रीनाथ जी ने गोविंद स्वामीकुं घोडो कर्यो हतो और ऊपर आप असवार भये हते। सो गोविंद स्वामी नें घोडा की सी न्याई लघुशंका करी। ये बातें एक वैष्णव नें देखी। सो श्रीगुसाईं जी सों जाय के कही। जब श्रीगुसाईं जी नें आज्ञा करी जब गोविंद स्वामी हाथी घोडा होते है सो हाथी घोडा को स्वांग पूरो न करें तो कैसे होवै। और इन बातन में तुम मत पडो। ये बात सुनके वे वैष्णव चुप करि गयो। सो वे गोविंद स्वामी ऐसे कृपापात्र हते।

प्रसंग १७

एक दिन गोविंददास श्रीगुसाईं जी के संग मथुरा जी में केशवराय जी के दर्शन कूं गये। तब उष्णकाल हतो। और सब जरी को वागा जरी की ओढ़नी देख के गोविंददास नें केशवराय जी सों पूँछो जो नांके तो हो। सो सुनिकें केशवराय जी मुसकाये। जब श्रीगुसाईं जी नें कही जो गोविंददास ऐसे न बोलिये। तब गोविंददास नें कही महाराज मांदीं मनुष्य को पोसाक पहेर्यो है जब कैसे न पूँछो जाय। सुनिके श्रीगुसाईं जी चुपकर रहे।

प्रसंग १८

और एक दिन श्रीनाथ जी के राज भोग आवते हते। तब भीतरिया सों गोविंददास स्वामी नें कही जो राजभोग धरे पहिले

मोकुं प्रसाद लेवाव। जब भीतरिया नें थार पटिक दियो और श्रीगुसाईं जी कूं पुकार करि। जब श्रीगुसाईं जी ने गोविंददास सों पूछी यह कहा। जब गोविंद स्वामी ने कही जो आप संग में मोकुं खेलवे कूं ले जाए हैं। और जो पाछे प्रसाद लेवेकूं रहि जाऊँ तो वन में पाछे मोकुं श्रीनाथ जी मिले नहीं हैं जब कैसे करूँ। ये सुनके श्रीगुसाईं जी ने ऐसी बंदोबस्त करी जो राजभोग आवे के समय गोविंददासकुं प्रसाद लेवावनो ऐसो भंडारी सो आज्ञा करि। सो वे गोविंद स्वामी ऐसे कृपापात्र हते जिन बिना श्रीनाथ जी रहि नहीं सकें ॥

प्रसंग १९

एक दिन श्रीनाथ जी गोविंद स्वामी संग खेलते हते। तब श्रीनाथ जी के ऊपर दाव आयो। तब उत्थापन को समय भयो। तब श्रीनाथ जी भाग के मंदिर में घुस गये। मंदिर में भीतर जायकें श्रीनाथ जी कुं गोली मारि। तब सेवक टहेलवान नें गोविंददास कुं धक्का मार के बहेर काढ दिये और उत्थापन भोग धर्‍यो। तब गोविंद स्वामी जाय के रास्ता में बेठे और कहे जो अवि गायन के संग श्रीनाथ जी ये रास्ता पर आवेंगे और याको मार देउंगो।

पीछे श्रीगुसाईं जी न्हात के मंदिर में पधारे। देखें तो श्रीनाथ जी अनमने होय रहे हैं और उत्थापन कि सामग्री अरोगें नाहीं है। तब श्रीगुसाईं जी ते श्रीनाथ जी सों पूछे जो कैसे हो। तब

हिन्दुस्तानी मिडिल स्कूलों के नये करिकुलम के अनुसार स्वीकृत पाठ्य तथा सहायक पुस्तकें

कक्षा ५, ६ और ७ के लड़कों और लड़कियों के लिये

हिन्दी की पाठ्य पुस्तक—साहित्य सुधा भाग १ १।) भाग २ १॥) भाग ३ १॥)

हिन्दी की स्वीकृत सहायक पुस्तक—विज्ञान की सरल बातें (सचित्र) ।=)॥

उर्दू की पाठ्य पुस्तक—ख़िरमन उर्दू भाग १ १।) भाग २ १।=) भाग ३ १॥)

उर्दू की स्वीकृत सहायक पुस्तक—सैरे इंगलिस्तान ।≈)॥

अर्थमेटिक—सरल माडल अर्थमेटिक १=)

नागरिक शास्त्र—

नागरिक ज्ञान प्रवेशिका—भाग १ ।=) भाग २ ।≈) भाग ३ ।=)

भूगोल—नवीन भूगोल भाग २ ॥-) भाग ३ ॥=)॥

भूगोल की सहायक पुस्तक—

नवीन संसार भाग १ ॥) भाग २ ॥) भाग ३ ॥=)

अङ्गरेज़ी (ENGLISH)

Child's First Grammar, Anglo-Hindi or Anglo-Urdu, each 0-10-0

Translation Practice, Parts I and II, Anglo-Hindi or Anglo-Urdu, each 0-4-0

संस्कृत—संस्कृत प्रकाश भाग १ ।-) भाग २ ।-) भाग ३ -)

फ़ारसी—करीमा

कमर्स (COMMERCE)—

(१) व्यवहार गणित प्रवेशिका भाग १ ।=) भाग २ ॥) भाग

या

Simple Book Keeping in Hindi or Urdu 0-

(२) Elementary Commercial Practice in Hindi or Urdu 0-1

गणित (MATHEMATICS)—

माडल अर्थमेटिक हिन्दी १~) उर्दू

नवीन बीजगणित भाग १ ।=) भाग २ ॥) भाग ३

नवीन रेखागणित भाग १ ।~) भाग २ ।=) भाग ३

शरीर विज्ञान, स्वच्छता, प्राथमिक सहायता और घरेलू परिचय

नवीन स्वास्थ्य विज्ञान भाग १ ।।) भाग २ ॥=) भाग ३

कला और शिल्प (ART AND CRAFTS)—

कला और हस्तकार्य भाग १ ॥=) भाग २ ॥=) भाग ३

विद्यार्थियों तथा अध्यापकों की सुविधा के लिए हमने उपरोक्त पुस्तकें करिक्युलम के अनुसार प्रकाशित की हैं। अत: आप इनसे अव लाभ उठायें। हर एक विषयों की पुस्तकें हिन्दी और उर्दू दोनों भाषा में हैं। पुस्तकें मिलने का पता—

रामनारायण लाल

पब्लिशर और बुकसेलर

इलाहाबाद

Printed by RAMZAN ALI SHAH at the National Press, Allah...